YOGA VASISHT
VOL I
SANSKRIT

॥ अथ योगवासिष्ठे प्रथमं वैराग्यप्रकरणं प्रारभ्यते ॥

Rajinder Kumar Munshi
Rajinder Munshi

S. RAMAKRISHNA ASHRAMA
LIBRARY, SRINAGAR.
Accession No. 1499
Date 6th Oct. 1979

प्रस्तावना ।

हे पाठकगण! उस सच्चिदानंद परब्रह्मको हम कोटिशः धन्यवाद देतेहैं कि, जिसने वेदांतसिद्धांत वाक्यरूप कतरनियोंसे हमारा मायाजाल कतरकर उद्धारकियाहै; और आनंदमय अपना धाम दरशायाहै अहो! उस दयालु प्रभुकी दयालुताको हम कैसे वर्णन करसक्तेहैं? कि, जिसने चौरासी लक्ष योनियोंमें भ्रमतेहुए हमलोगोंको मनुष्यशरीर दिया; फिरभी हमारा अज्ञान नष्ट करनेके लिये वेदांतशास्त्र प्रकट किया। हाय! तिसपर भी हम न समझें तो हमारी ऐसी मूर्खता है कि, जैसे हथेलीपर आयाहुवा अमृत अज्ञानसे त्यागदेना; और खाना नहीं अब प्रकृतको अनुसरण करतेहैं कि, हे पाठकगण! उसी वेदांतसिद्धांतशास्त्रमें यह एक ग्रंथ योगवासिष्ठ है जो कि महर्षि वाल्मीकिजीने निर्माणकियाहै; और वशिष्ठजी महाराजने रघुवंशमणि श्रीरामचंद्रजीके प्रति उपदेश कियाहै। अहो इस ग्रंथकी शैलीको क्या अन्य ग्रंथ प्राप्त हो सकताहै? कदापि नहीं. कि जिसमें वेदांतके गूढ पदार्थ कथारूपकरके ऐसी सरलरीतिसे दरशायेहैं कि, मानो करतलमें आमलक, अब इस आबालवृद्ध विख्यात अतिअवदात ग्रंथकी अविज्ञात ग्रंथके समान प्रशंसा करनी उचित न समझकर इस भाषाग्रंथके विषयमें लिखताहूँ कि, यह योगवासिष्ठ भाषाग्रंथ ऐसा कदापि न जानना चाहिये कि, अज्ञानभ्रमको दूर नहीं करसके; यह अवश्य ही अज्ञानभ्रमको दूर करताहै क्योंकि, किसी महात्माने युक्तिके साथ कहाहै जैसे कि–

दोहा–ब्रह्मरूप अहि ब्रह्मवित, ताकी वाणी वेद। भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद ॥ १ ॥

इसलिये जब अन्य ब्रह्मज्ञानीजननकी भाषावाणी भी अज्ञान दूरकरनेकेलिये वेदरूप है तो फिर महर्षि वाल्मीकिजीके ग्रंथके भाषानुवादका तो कहनाही क्या है; यद्यपि यह ग्रंथ अक्षरार्थानुरूप अनुवादित नहीं कियागया किंतु कथानुरूप अनुवादित कियागयाहै तथापि इसके कथादृष्टांतोंको दार्ष्टांतिकोंपर ऐसा समेटाहै कि, मानो सागरका जल गागरमें भरलियाहै इसका कथानुरूप अनुवाद होनेका कारण भिन्नभिन्नप्रकारसे सुनाजाताहै कोई तो कहतेहैं कि, कोई महात्मा कहीं योगवासिष्ठकी कथा श्रवणकरके आयाकरते और अति दयालुतासे मुमुक्षुजनोंके हितार्थ उतनीही कथाको कंठसे लिखलियाकरतेथे; और कोई ऐसा कहतेहैं कि अबसे १०० वर्ष पूर्व पंजाब देशके अंतर्गत सर्वविज्ञात पटियाला नाम राजधानीमें श्रीसाहबसिंह नामवालेराजा हुए उनकी दो बहिन विधवायें थीं उनकी अद्वैतमतमें अत्यंत निष्ठा थी इसलिये वेदांतशास्त्रकी ही कथा श्रवण कियाकरतीथीं; एक समय निरंजनी साधु रामप्रसादजीके मुखसे इन्होंने इस योगवासिष्ठकी कथा श्रवणकरी पश्चात् वेदांतसिद्धांतका प्रकाशक सूर्यरूप इस ग्रंथको समझकर इन्होंने विचार किया कि, यह उत्तम ग्रंथ देववाणीमें होनेसे सर्वोपयोगी नहीं इसलिये इसकी भाषा कराकर हम ऐहलौकिक यश और पारलौकिक कल्याणको प्राप्तहोवें ऐसा विचारकर फिर उसी (उक्त) साधुसे कथाका प्रारंभ कराया और दोपंडित लिखनेके वास्ते बैठादिये; जैसे जैसे ये साधु कथाक

कर्मकी पालना क्यों नहीं कर्त्ता और तू कर्मके न करनेते सिद्धताको कैसे प्राप्त होवेगा? जिसकरके तू कर्मते रहित हुवा है, सो कारण कहिदे. कारणोवाच, हे पिताजी! एक संशय मुझको उत्पन्न हुवा है. तिस करके मैं कर्मते चुप रहा हों, सो श्रवण करो. वेदने एक ठौर कहा है कि, जबलग जीवता रहै तबलग कर्मको करना. जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं, सो करताई रहै अरु और ठौर कहा है कि, धन करके मोक्ष होत नाहीं और कर्म करके मोक्ष होत नाहीं, और पुत्रादिक करके मोक्ष होत नाहीं. केवल त्यागते मोक्ष होता है। इन दोनों विषे मुझको क्या कर्त्तव्य है? यह संशय है। सो तुम कृपा करके निवृत्तकरो, कि क्या कर्त्तव्य है? अगस्त्योवाच, हे सुतीक्ष्ण! ऐसे जब कारणने पिताको कहा; तब तिसका वचन सुन अग्निवेश कहत भया. अग्निवेशोवाच, हे पुत्र! एक कथा मुझते तू श्रवण कर जो पहिले हुई है, तिसको सुनकर हृदय विषे धरके, आगे जो तेरी इच्छा होय सोई करना. एक सुरुचि नाम अप्सरा हती, सो जेती कुछ अप्सरा हतीं, तिनके विषे उत्तम थी. सो एक समय हिमालयके शिखरपर बैठी थी. सो हिमालय पर्वत कैसा है? कि कामना करके संपन्न जो हृदयमें विचारे, सो पावे. तहां देवता अरु किन्नरके गण अप्सराके साथ क्रीडा करते हैं. और कैसा है. जहां गंगाजीका प्रवाह लहरी देत चला आवत है सो गंगा कैसी है कि, महा पवित्र जल है जिसका, ऐसे शिखरपर सुरुचि अप्सरा बैठी थी; तिसने इंद्रका दूत अंतरिक्षते चला आवत देखा. जब निकट आया, तब अप्सराने कहा. अहो सौभाग्य देवदूत! तू देवगणमें श्रेष्ठ है, तू कहांते आया और कहां जायगा? सो कृपा करके कहि दे. देवदूतोवाच, हे सुभद्रे! तैंने पूछा है सो श्रवण कर, अरिष्टनेमि एक राजर्षि था, वाने अपने पुत्रको राज्य देकर वैराग्य लिया, संपूर्ण विषयोंकी अभिलाषा त्याग करके गंधमादन पर्वतमें जायकर भयंकर तप करने लगा, अरु धर्मात्माथा तिसके साथ मेरा एक कार्यथा, सो कार्य करके मैं अब इंद्रके पास चला जाता हौं तिसका मैं दूत हों संपूर्ण वृत्तांत निवेदन करनेको चला हों. अप्सरोवाच, हे भगवन्! वृत्तांत कौनसा है? सो मुझसे कहो. मेरेको अति प्रिय है; यह जानकर पूछती हूं और जो महापुरुष है, तिससों कोई प्रश्न करता है, तब वह उद्वेगते रहित

होकर उत्तर देता है, ताते तू कहि दे. देवदूतोवाच, हे सुभद्रे! जो वृत्तान्त है सो सुन. विस्तार करकै मैं तुझको कहता हौं वह जो राजा गंधमादन पर्वतमें तप करने लगा, सो बड़ा तप किया. तब देवतोंके राजा जो इंद्र हैं तिसने मुझको बोलाय कर आज्ञा करी कि, हे दूत! तू गंधमादन पर्वतमें जा. और विमान, अप्सरा, नाना प्रकारकी सामग्री, गंधर्व, यक्ष, सिद्ध, किन्नर, ताल, मृदंग आदि वाजित्र, संग लेजा और वह गंधमादन पर्वत कैसा है? जो नाना प्रकारकी लता वृक्ष करके पूर्ण है, तहां जायके राजाको विमानपर विठायके, इहां ल्याव. हे सुंदरी! जब इंद्रने ऐसा कहा, तब मैं विमान अरु सामग्री सहित तहां आया. अरु राजासे कहा-हे राजन्! तेरे कारण विमान ले आयाहूं, तापर बैठके तू स्वर्गको चल और देवतानके भोग भोगु. जब मैं ऐसे कहा तब मेरा वचन सुनकर राजा बोलत भया. राजोवाच, हे देवदूत! प्रथम स्वर्गका वृत्तांत तू मुझसे कह कि, तेरे स्वर्गमें दोष कहा अरु गुण कहा है? तिनको सुनकै मैं हृदयमें विचारों. पाछे जो मेरी इच्छा होवेगी तो आऊंगा. देवदूतोवाच. हे राजन्! स्वर्गमें वडे दिव्य भोग हैं. सो स्वर्ग वड़े पुण्यसों जीव पाते हैं. जो वड़े पुण्यवाले होते हैं, सो उत्तम सुख स्वर्गको पाते हैं, जो मध्यम पुण्यवाले हैं सो मध्यम सुख स्वर्गको पाते हैं. अरु जो कनिष्ठ पुण्यवाले हैं सो कनिष्ठ सुख स्वर्गको पाते हैं. यह तो गुण स्वर्गमें हैं सो तोसों कहे हैं. और स्वर्गके जो दोष हैं सो सुन-हे राजन्! जो आपते ऊंचे बैठे दृष्टि आवते हैं, अरु उत्तम सुख भोगते हैं, तिनको देखके ताप उत्पत्ति होती है क्योंकि, उनकी उत्कृष्टता सही नहीं जाती है. अरु जो कोई अपने समान सुख भोगते हैं, तिनको देखके क्रोध उपजत है, कि मेरे समान क्यों बैठे हैं, अरु जो अपने नीचे बैठेहैं कनिष्ठ पुण्यवाले, तिनको देखके आपको अभिमान उपजत है. कि, मैं इनते श्रेष्ठ हौं और एक और भी दोष है. कि जब उसके पुण्य क्षीण होते हैं, तब तिसी कालमें उसको मृत्युलोकमें गिराय देते हैं, एक क्षणभी रहने देते नहीं. हे राजन्! यह जो दोष कहे सो स्वर्गमें हैं. जो तैंने पूंछा सो मैंने गुण अरु दोष कहे. हे भद्रे! जब इसप्रकार राजासे मैंने कहा तब मोको राजाने कहा-हे देवदूत! इस स्वर्गके योग्य हम नहीं हैं, अरु हमको इच्छाभी नहीं है. हम उग्र तप करैंगे. तप करके

इस देहको भी त्याग देंगे. जैसे सर्प अपनी त्वचाको पुरातन जानिकै त्याग करता है, तैसे हम भी त्याग कर देंगे. हे देवदूत! तुम अपने विमानको जहांते लाये हो, तहां लेजाओ, हमारे तो नमस्कार हैं. हे देवी! जव इस प्रकार राजाने मुझको कहा, तव विमान अप्सरा आदि सवको लेके स्वर्गमें गया, अरु संपूर्ण वर्त्तमान इंद्रसे कहा. तव इंद्र प्रसन्न हुवा अरु सुंदर वाणी करके मुझसे कहत भया हे दूत! तू वहुरि जहां राजा है तहां जा. वह संसारते उपराम हुआहै. उसकी अव आत्मपदकी इच्छा हुई है. उसको साथलेके वाल्मीकि जिसने आत्मतत्त्वको आत्मा करि जाना है; तिसके पास ले जाय मेरा संदेशा कहना कि, हे महाऋषि! इस राजाको तत्त्ववोधका उपदेश करना; क्योंकि यह वोधका अधिकारी है. काहेते कि, इसको स्वर्गकी भी इच्छा नहीं, अरु औरकीभी वांछा नहीं; ताते तुम इनको तत्त्ववोधका उपदेश करो, जो तत्त्ववोधको पाय करके संसार दुःखते मुक्त होवे. हे सुभद्रे! जव इस प्रकार देवराजाने मुझसे कहा, तव मैं चला. जहां राजाथा, तहां जाइ करिकै मैंने कहा कि हे राजन्! संसार समुद्रते मोक्ष होनेके निमित्त वाल्मीकिके पास चल, वाल्मीकि तुझको उपदेश करैगा.तव तिसको साथ लेकर, मैं वाल्मीकिके स्थानपर आय प्राप्त भया. तिस स्थानमें राजाको विठाया, अरु इंद्रका संदेशा कह दिया. जो वहां वृत्तान्त भया सो सुन—जव वहां गये, अरु प्रणाम कर वैठे, तव वाल्मीकिने कहा हे राजन्! कुशल है? राजोवाच; हे भगवन्! परम तत्त्वज्ञ और वेदांत जाननेवालोंमें श्रेष्ठ! मैं अव कृतार्थ हुआ. तुम्हारे दर्शन करकै अव मुझको कुशल हुआ है अरु कछु पूछता हों. कृपा करके उत्तर कहना, जिससे संसार वंधनते मुक्ति होय. वाल्मीकिउवाच, हे राजन्! महारामायण औषध तुझसे कहता हों सो श्रवण करके तात्पर्य हृदय विषे धारणेका यत्न कर. जव तात्पर्य हृदय विषे धारेगा, तव जीवन्मुक्त होयकर विचरैगा, हेराजन्! वशिष्ठजी अरु रामचंद्रजीका संवाद है. तिसमें सव कथा मोक्षके उपायकी कही हैं. तिसको सुनके जैसे रामचंद्रजी अपने स्वभाव विषे स्थित हुए, अरु जीवन्मुक्त होयके विचरे हैं तैसे तूभी विचरेगा. राजोवाच, हेभगवन्! रामचंद्रजी कौन था, अरु कैसाथा, अरु कैसे होकर विचऱ्या है? सो कृपा करके कहो.

वाल्मीकिउवाच, हे राजन्! शापके वशते, हरि जो विष्णु तिनने छल करके मनुष्यका देह धरा सो अद्वैत ज्ञानकर संपन्न है तौभी कछुक अज्ञानको अंगीकार करके, मनुष्यका शरीर धरा था. राजोवाच, हे भगवन्! चिदानंदरूप जो हरि हैं तिनको शाप किस कारण हुआ, अरु किसने दिया? सो कहो. वाल्मीकिउवाच, हे राजन्! एक कालमें सनत्कुमार जो निष्काम हैं सो ब्रह्मपुरीमें बैठे थे; अरु त्रिलोकीका पति जो विष्णु भगवान्, सो वैकुंठते उतरके ब्रह्मपुरीमें आये, तब ब्रह्मासहित सर्व सभा उठके खडीहुई अरु पूजन किया; अरु सनत्कुमारने पूजन किया नहीं तिसको देखकर विष्णु भगवान् बोलत भया-हे सनत्कुमार! तुझको निष्कामताका अभिमान है; ताते तू काम करके अवतार पावेगा, अरु स्वामिकार्त्तिक तेरा नाम होवेगा. जब विष्णु भगवान्ने ऐसा कहा, तब सनत्कुमार बोले हे विष्णु! सर्वज्ञताका अभिमान तुझको है. सो तेरी सर्वज्ञता कोई कालमें निवृत्त होवेगी, अरु अज्ञानी होवेगा. हे राजन्! एक तो यह शाप हुआ और भी सुन. एक कालमें भृगुकी स्त्री जात रही थी; तिसके वियोग कर वह ऋषि तपायमान हुआथा. तिसको देखके विष्णुजी हँसे तब भृगुब्राह्मणने शाप दिया-हे विष्णु! मेरे तई देखि तैंने हांसी करी है, सो मेरी नाई तू भी स्त्रीके वियोग कर आतुर होवेगा. एक दिन देवशर्मा ब्राह्मणने नरसिंह भगवान्को शाप दिया था, सो सुन-एक दिन नरसिंह भगवान् गंगाके तीरपर गयेथे, तहां देवशर्मा ब्राह्मणकी स्त्री थी, तिसको देखके, नरसिंहजी भयानक रूप दिखायके हँसे. तिनको देखके ऋषिकी लुगाईने भय पाय प्राण छोडदिये. तब देवशर्माने शाप दिया कि, तुमने मेरी स्त्रीका वियोग किया, ताते तुमभी स्त्रीका वियोग पाओगे. हे राजन्! सनत्कुमार अरु देवशर्माके शाप करके विष्णु भगवान्ने मनुष्यका शरीर धरा, सो राजा दशरथके घरमें प्रगटे. हे राजन्! यह जो शरीर धरा है अरु आगे जो वृत्तांत हुआहै, सो सावधान होय श्रवण कर. दिव्य जो है देवलोक, अरु भू जो है पृथ्वीलोक, अरु पाताललोक ऐसी त्रिलोकीको प्रकाशता है; अरु अंतर बाहर आत्मतत्त्वकरि पूर्ण है. ऐसा अनुभवात्मक मेरा आत्मा है, तिस आत्माको नमस्कार है. हे राजन्! यह शास्त्र जो आरंभ किया है. तिसका विषय क्या

है, अरु प्रयोजन क्या है, अरु संबंध क्या है, अरु अधिकारी कौन है ? सो श्रवण कर. सत्, चित् आनंदरूप, अचिंत्य, चिन्मात्र आत्माको जनावता है, सो विषय है. अरु परमानंद आत्माकी प्राप्ति अरु अनात्म अभिमान् दुःखकी निवृत्ति, यह प्रयोजन इसमें है. अरु ब्रह्मविद्या मोक्ष उपायकर आत्मपदका प्रतिपादन है, सो संबंधहै. अरु जिसको यह निश्चय है. कि, मैं अद्वैत ब्रह्म, अनात्म देहका साथी हुआहों, सो किसी प्रकार छूटों,ऐसा ज्ञानवान् है, अरु मुमुक्षु है, ऐसा जो विकृति आत्मा है, सो यहां अधिकारी है. इस शास्त्रका मोक्ष उपाय है. परंतु कैसा है ? मोक्ष उपाय परमानंदकी प्राप्ति करनहारा है. जो पुरुष इसको विचारे सो ज्ञानवान् होवे. बहुरि जन्म मृत्युरूप संसारमें न आवे. हे राजन् ! यह महारामायण जो है सो पावन है. श्रवणमात्रसे सब पापका नाशकर्त्ता है, जिस विषे रामकथा है सो, प्रथम मैं अपने भारद्वाज शिष्यको श्रवण कराई है. एक समय भारद्वाज चित्तको एकाग्र करके मेरे पास आया था; तिसको मैं उपदेश किया था. तिसको श्रवण करके वचनरूपी समुद्रते साररूपी रत्नको हृदय विषे धरके एक समय सुमेरु पर्वतपर गया. तहां पितामह जो ब्रह्मा सो बैठेथे. अरु भारद्वाजने जायकर प्रणाम किया; अरु पास बैठा, अरु ब्रह्माजीको यह कथा सुनाई. तब ब्रह्माने प्रसन्न होयकर भारद्वाजसे कहा-हे पुत्र ! कछु वर मांग, मैं तुझपर प्रसन्न हुवा हौं. हे राजन् ! जब इस प्रकार ब्रह्माजीने कहा, तब परमउदार जिसका आशय है, ऐसा जो भारद्वाज सो कहत भया-हे भूत भविष्यके ईश्वर ! जो तुम प्रसन्न हुए हो, तो यह वर देहु कि, संपूर्ण जीव संसार दुःखते मुक्त होहिं; अरु परमपदको पावहिं; सो उपाय कहो. ब्रह्मोवाच, हे पुत्र ! तू अपने गुरु वाल्मीकिके पास गमन कर. बहुरि जो तिसने आत्मबोध महारामायण अनिंदित शास्त्रका आरंभ किया है तिसको सुनकर जीव महामोह संसारसमुद्रते तरेंगे. कैसा शास्त्र है महारामायण ? जो संसारसमुद्र तरनेको पुल है; अरु परम पावन है. वाल्मीकिउवाच, हे राजन् ! जब इस प्रकार कहा, तब आप परमेष्ठी ब्रह्मा, भारद्वाजको साथ लेकर मेरे आश्रममें आये. *तब मैंने भले प्रकारसों उसका* पूजन किया. सो ब्रह्माजी कैसे हैं ? जिसकी सर्व भूतके हितमें प्रीति है सो मुझसे

कहते भये. ब्रह्मोवाच, हे मुनि श्रेष्ठ वाल्मीकि ! यह जो रामके स्वभावके कथनका आरंभ तुमने किया है तिस उद्यमका त्याग नहीं करना. इसको आदिते अंतपर्यंत समाप्त करना. कैसा है यह मोक्षउपाय ? जो संसाररूपी समुद्रके पार करनेको जहाज है. इस करिके सर्व जीव कृतार्थ होवेंगे. वाल्मीकिउवाच, हे राजन् ! इस प्रकार ब्रह्माजी मुझसे कहिके अंतर्द्धान होगये, जैसे समुद्रते आवर्त्त चक्र एक मुहूर्त्त पर्यंत उठके बहुरि लीन होजाताहै तैसे ब्रह्माजी अंतर्द्धान होगये. तब मैं भारद्वाजसे कहा हे पुत्र ! ब्रह्माजीने क्या कहा ? भारद्वाजोवाच, हे भगवन् ! तुमको ब्रह्माजीने ऐसा कहा कि, हे मुनिश्रेष्ठ ! तुमने रामके स्वभावके कथनका उद्यम किया है, तिसका त्याग नहीं करना; अंतपर्यंत समाप्ति करना. काहेते कि, इस संसारसमुद्रके पार करनेको यह कथा जहाज है. इसकरिके अनेकजीव कृतार्थ होवेंगे, अरु संसारसंकटते मुक्त होवेंगे. वाल्मीकिउवाच, हे राजन् ! जब इस प्रकार ब्रह्माजीने मुझको कहा, तब ब्रह्माजीकी आज्ञाके अनुसार मैंने ग्रंथ किया; अरु भारद्वाजको कहा. हे पुत्र ! वसिष्ठजीके उपदेशको पाय कर जिसप्रकार रामजी निःशंक होइ विचरे हैं, तैसे तू भी विचर. तब उसने प्रश्न किया. भारद्वाजोवाच. हे भगवन् ! जिसप्रकार रामचंद्रजी जीवन्मुक्त होकर विचरेहैं; सो आदिसों क्रम करके मुझको कहो. वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज ! रामचंद्र, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, कौसल्या, सुमित्रा, दशरथ ये आठों अष्टमंत्री, अष्ट गुण आदि लेकर जीवन्मुक्तहोय विचरे हैं, तिनके नाम सुन-रामजीसे लेके दशरथ पर्यंत आठ तो ये कृतार्थ हुए हैं. अविरोध, परमबोधवान् भये हैं. और कृतभासी १, शतवर्धन २, शुकधाम ३, बिभीषण ४, इंद्रजीत ५, हनुमंत ६, वशिष्ठ ७, वामदेव ८ ये अष्ट मंत्री सो निःशंक होय चेष्टा करत भयेहैं, अरु सदा अद्वैतनिष्ठ हुएहैं. इनको कदाचित् स्वरूपते द्वैतभाव नहीं फुरा है अनामय पद विषे स्थितिमें तृप्त रहे, जो केवल चिन्मात्र, शुद्धपद, परमपावन ताको प्राप्त हुए हैं. इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे कथारंभ वर्णननाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥ भारद्वाजोवाच, हे भगवन् ! जीवन्मुक्तकी स्थिति कैसी है ? अरु रामजी कैसे जीवन्मुक्त हुयेहैं ? सो आदिते लेकर अंतपर्यंत सब कहो. वाल्मीकिउवाच, हे पुत्र ! यह जगत जो भासता है सो वास्तविक कछु

नहीं उत्पन्न भया. अविचार करके भासता है. विचार कियेते निवृत्त होजाता है. जैसे आकाशमें नीलता भासती है, सो भ्रम करके है जब विचारकरके देखिये तब नीलता प्रतीति दूर होजाती है. तैसे अविचार करके जगत् भासता है अरु विचारते लीन होजाता है. हे शिष्य ! जबलग सृष्टिका अत्यंत अभाव नहीं होता तबलग परमपदकी प्राप्ति नहीं होती. जब दृश्यका अत्यंत अभाव होय जावे तब पाछे शुद्ध चिदाकाश आत्मसत्ता भासेगी कोई इस दृश्यको महाप्रलयमें कदाचित् अभाव कहते हैं, परंतु मैं तुझको तीनोंई कालका अभाव कहता हों. सो शत शास्त्रकर इस शास्त्रमें श्रद्धा संयुक्त आदिते लेकर अंत पर्यंत श्रवण कर, अरु तिनको धार, तब तिसकी भ्रांति निवृत्त होय जावे. अरु अव्याकृत पदकी प्राप्ति होवे. हे शिष्य ! संसार भ्रममात्र सिद्ध है, इसको भ्रममात्र जानकर विस्मरण करना. सो मुक्ति है. अरु इसको बंधनका कारण वासना है. वासना करके भटकत फिरता है. जब वासनाका क्षय होजाय, तब परमपदकी प्राप्ति होवे. जो वासनामें फिरता है, तिसका नाम मन है जैसे जल शरदीकी दृढ जडता पायके बर्फ होता है, पाछे सूर्यके तापसे बहुरि गलकर जल होता है,तब केवल शुद्ध जल होय रहता है,तैसे आत्मारूपी जल है तिसविषे संसारकी सत्यतारूपी जडता शीतलताहै. तिस करके मनरूपी बर्फका पुतला हुआ है. जब ज्ञानरूपी सूर्य उदय होवेगा, तब संसारकी सत्यतारूपी जडता, शीतलता, निवृत्त होजावेगी. जब संसारकी सत्यता अरु वासना निवृत्त हुई, तब मन नष्ट हो जावेगा. जब मन नष्ट हुआ, तब परमकल्याण हुआ. ताते इसके बंधनका कारण वासनाहै. अरु वासनाके क्षय हुयेते मुक्तिहै सो वासना दोप्रकारकी है, एकशुद्ध अरु दूसरी अशुद्ध. सो अपने वास्तविक स्वरूपके अज्ञानते अनात्मा जो देहादिक, तिनमें अहंकार करना, सो जब अनात्ममें आत्म अभिमान हुआ तब नाना प्रकारकी वासना उपजती हैं.तिसकरके घटी यंत्रकी नाई चक्र भ्रमता है. हे साधु ! यह जो पंचभूतका शरीर तू जो देखता है. सो सब वासनारूप है. वासना सो चक्र है. जैसे मणके धागेके आश्रयते खड़े होते हैं और जब धागा टूट पडा, तब मणका न्यारा न्यारा होय पडता है, अरु ठहरता नहीं है. तैसे वासनाके क्षय हुए पंचभूतका शरीर नहीं रहता. ताते सब अनर्थ

का कारण वासना है अरु जो शुद्ध वासना है तिसमें जगत्का अत्यन्त अभाव निश्चय होताहै. हे शिष्य ! अज्ञानीका जो निश्चय है, सो वासना कर बहुरि जन्मका कारण हो जाता है. अरुज्ञानीकी वासना है सो बहुरि जन्मका कारण नहीं होताहै. जैसे एक कच्चा बीज होता है; दूसरा दग्धबीज होताहै. तिसमें जो कच्चा है सो बहुरि उगता है; अरु जो दग्ध हुआ है सो बहुरि नहीं उगता. तैसे अज्ञानीकी वासनाहै सो रससहित है, सो जन्मका कारण है; अरु ज्ञानीकी वासना है सो रसरहित है सो जन्मका कारण नहीं. ज्ञानीकी चेष्टा स्वाभाविक गुण करके खडीहोती है.और किसी गुणके साथ मिलकर अपनेमें चेष्टा नहीं देखता. खाता है, पीता है, देता है, बोलता है, चलता है, विचार करता है, परन्तु अंतर सदा अद्वैत निश्चेष्टाको धरता है. कदाचित् द्वैतभावना तिसको फुरती नहीं है अपने स्वभावविषे स्थित है. ताते निर्गुण अरु अरूप है. ताकी चेष्टा जन्मका कारण नहीं है, जैसे कुम्हारका चक्र है, सो जबलग उसको फेर चढावे, तबलग वह फिरता है. और जब फेर चढावना छोड दिया, तब स्थीयमान गतिसे उतरत उतरत फिरके स्थिर रह जाता है तैसे जबलग अहंकार सहित वासना होती है, तबलग जन्म पावता है. जब अहंकारते रहित हुआ तब बहुरि जन्म नहीं पावता. हे साधु ! यह जो अज्ञानरूपी वासना है, तिसको नाश करनेका उपाय एक ब्रह्मविद्या श्रेष्ठ है. ब्रह्मविद्या मोक्ष उपायका शास्त्र है. जब इसते और शास्त्रमें गिरैगा तब कल्पपर्यंतहू अव्याकृत पदको न पावेगा. अरु जो ब्रह्मविद्याका आश्रय करैगा तो सुख सों आत्मपदको प्राप्त होवेगा. हे भारद्वाज! यह मोक्षउपाय रामजी अरु वशिष्ठजीका संवाद सो विचारने योग्य है;बोधका परमकारण है. ताते आद्यंत पर्यंत मोक्ष उपाय श्रवणकर. जैसे रामजी जीवन्मुक्त होय विचरे हैं सो सुन. एक दिन रामजी विद्या पढके अध्ययन शालाते अपने गृहमें आये; अरु संपूर्ण दिन विचार करत व्यतीत करदिया. बहुरि मनमें तीर्थ, ठाकुरद्वाराका संकल्प धर पिता दशरथके पास आये. पितासों मिलके जो संपूर्ण प्रजाको सुखमें राखते थे; अरु सब प्रजा तिसके निकट रहिके सुख पाती तिस दशरथका चरण श्रीरघुनाथजीने ग्रहण किया. जैसे सुंदर कमलको हंस ग्रहण करै तैसे पिताका चरण ग्रहण किया. जैसे कमलके

तरे कोमल तरियां होतीहैं, तिन तरियों सहित कमलको हंस पकडता है; तैसे दशरथजीकी अँगुरीनको रामजीने ग्रहण किया. अरु बोले कि, हे पिता ! मेरा चित्त तीर्थ अरु ठाकुरद्वाराके दर्शनको उठा है. ताते तुम आज्ञा करो तो मैं तीर्थका अरु ठाकुरद्वारेका दर्शन कर आऊं मैं तुम्हारा पुत्रहूं तुमको पालना करनी योग्य है. और आगे मैं कभी कहा नहीं; यह प्रार्थना अब करी है. तातें तुम आज्ञा देहु; जो मैं जाऊं. यह वचन मेरा फेरना नहीं. काहेते कि, ऐसा त्रिलोकीमें कोऊ नहीं है, जिसका मनोरथ इस घरते सिद्ध हुआ नहीं है; सबका मनोरथ सिद्ध हुआ है. ताते मुझको कृपा कर आज्ञा देहु. वाल्मीकि उवाच, हे भारद्वाज ! इस प्रकार जब राम जीने कहा. तब वशिष्ठजी पास बैठेथे. तिनने भी दशरथसे कहा हे राजन् ! रामजीको आज्ञा देहु. सो तीर्थ कर आवें. क्योंकि, इनका चित्त उठा है. राजकुमार हैं, इनके साथ सेना दीजे, धन दीजे, मंत्री दीजे, ब्राह्मण दीजे, जो ये दर्शन कर आवें. हे भारद्वाज ! जब ऐसे विचार किया, तब शुभ मुहूर्त्त देखकर रामजीको आज्ञा दीनी. जब चलने लगे, तब पिता अरु माताके चरण लगे, अरु सबको कंठ लगाइ रुदन करने लगे. तिनको मिलकर आगे चले. अरु लक्ष्मण आदि जो भाई हैं और मंत्री थे, तिनको साथ लेकर, अरु वशिष्ठ आदि जो ब्राह्मण विधिकी जाननेवारे थे. अरु बहुत धन, बहुत सेना तिनको साथ ले चले. और दान पुण्य करकै जब गृहके बाहर निकले, तब वहांके जो लोग थे अरु स्त्रियार्थी तिन सबने रामजीके ऊपर फूल अरु फूलोंकी मालाकी वर्षा करी. सो वर्षा बरफ बरखती है ऐसी दीखतीथी. अरु रामजीकी जो मूर्त्ति है सो हृदयमें धरलीनी. इस प्रकार रामजी वहांसे चले. तहां ब्राह्मण अरु निर्धनोंको दान देते देते तीर्थ जो गंगा, यमुना, सरस्वती आदि लेके हैं, इनमें स्नान विधि संयुक्त कर पृथ्वीके चारों कोन उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिमको दान किया. अरु चारों ओर समुद्रके स्नान किये. अरु सुमेरु पर्वतपर गये. हिमालय पर्वतपर गये. अरु शालग्राम, बद्री, केदार, आदिगंगामें स्नान किये अरु दर्शन किये. ऐसे सब तीर्थ, स्नान, दान, तप, ध्यान, विधिसंयुक्त यात्रा करत भये. जैसी जैसी जहां विधि थी तैसी तैसी तहां करी, एक वर्षमें संपूर्ण यात्रा करके रामजी बहुरि

अपने घरमें आये. इति श्री योगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे तीर्थयात्रा वर्णननाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥ वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज ! जब रामजी यात्रा करके अपनी अयोध्यामें आवत भये तब नगरके वासी लोग पुरुष और स्त्री फूलनकी वर्षा करत भये. अरु जयजय शब्द मुखते उच्चारने लगे. अरु प्रेमहास्य करने लगे और जैसे इंद्रका पुत्र अपने स्वर्गमें आवत है, तैसे रामचंद्रजीअपने घरमें आये. पहिले राजा दशरथको प्रणाम कर, फिर वशिष्ठजीको प्रणाम कर, फिर सब सभाके लोगोंको यथायोग्य मिले, फिर अंतःपुरमें आवत भये तहां कौशल्या आदि जो माताथीं, इनको यथायोग्य नमस्कार किये और जो भाई बांधव कुटुंब थे तिन सबको मिले. हे भारद्वाज ! इस प्रकार रामजीके आवनका उत्साह सप्तदिन पर्यंत होता रहा. वा समयमें कोऊ मिलने आवे कोऊ कछु लेने आवे. तिनको दान पुण्य करत बाजे बजत उत्साह हुआ. भाट आदि स्तुति करनेलगे. तदनंतर रामजीका आचरण हुआ, सो सुन प्रातःकालमें उठके स्नान संध्यादिक सत्कर्म करते,बहुरि भोजन करते, बहुरि भाई बंधुको मिल अपने तीर्थकी कथा कहते. देवद्वारके दर्शनकी वार्त्ता करते इस प्रकार सों उत्साह कर दिन रातको बितावतेथे. एक दिन प्रातःकालमें उठके पिताजी दशरथको देखे सो जैसे इंद्रका तेज है, तैसा तेजवान् देखा. अरु वशिष्ठादिककी सभा बैठीथी, तहां वशिष्ठजीके साथ कथा वार्त्ता रामजी करते हुए, तहां एक दिन राजादशरथ कहत भये, हे रामजी ! तुम शिकार खेलने जायबो करो. ता समयमें रामजीकी अवस्था वर्ष १६ में थोरेक महीना कमतीथी. तब राजकुमार रामजीके साथ लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न भाई थे, भरत नहानेको गयेथे; फिर तिनके साथ स्नान संध्यादिक नित्य कर्म करके, भोजन करके शिकार खेलने जाते. तहां जो जीवको दुःख देनेहारे जानवर देखे तिनको मारते. अरु अवर लोकको प्रसन्न करते, इस प्रकार दिनको शिकार खेलते रात्रिको निसान बाजते अपने घरमें आवते. ऐसे करत केतेक दिन बीते तामें रामजी अपने अंतःपुरमें आइ सबका त्याग करके एकांतमें चिंतन करत बैठि रहते. हे भारद्वाज ! जेती कछु राजकुमारकी चेष्टा सो सबको रामजीने त्याग कर दीनी थी. जेते कछु रस

संयुक्त इन्द्रियोंके विषय हैं, इनको त्यागके शरीरसे दुर्बल जैसे हो मुखकी कांति घट गई, पीत वर्ण होगये. जैसे कमल सूखके पीतवर्ण होय जाता है, तैसे रामजीका मुख पीला होगया. अरु जैसे सूखे कमलपर भँवरे बैठतेहैं, तैसे सूखे मुखकमलपर नेत्ररूपी भँवरे भासने लगे. सोहू शोभा होवन लागी. अरु इच्छा निवृत्त होय गई जैसे शरत्कालमें ताल निर्मल होता है; तैसे इच्छारूपी मलनते रहित चित्तरूपी तालहू निर्मल होता है तैसे वासना निवृत्त होते दिन दिन पै शरीर निर्मल होगया, अरु जहां बैठें तहां चितासंयुक्त बैठे रहि जावें उठें नहीं, अरु बैठें तब हाथपै चिबुक धरके बैठें जब टहलुए मंत्री बहुत कहहिं, कि हे प्रभो ! यह स्नान संध्याका समय हुआ है सो अब उठो, तब उठकर स्नानादिक करहिं अरु हृदयमें न विचारहिं. जेती कछु खाने, पीने, बोलने पहिरनेकी क्रिया हैं, सो सब विरस होय गई ऐसे रामचंद्रजी भये. तब लक्ष्मण अरु शत्रुघ्नहू रामजीको संशय संयुक्त देखके तिस प्रकार हो बैठे, तब दशरथ यह वार्त्ता सुनके रामजीके पास आय बैठे अरु देखे तब महा कृश जैसा हो गया है.इस चिंता करके आतुर हुआ.कि हाय २ इनकी क्या अवस्था हुई है ? इस शोकके लिये रामजीको गोदमें बैठाये ! अरु पूँछने लगे,कोमल सुंदर शब्द करके बोले कि हे पुत्र तुमको क्या दुःख प्राप्त भया है जिससे तुम शोकवान् हुये हो ? तब रामजीने कहा कि, हे पिता ! हमको तो दुःख कोऊ नहीं है. ऐसे कहिके चुप होरहा. जब केतेक दिवस इस प्रकार व्यतीत भये, तब राजाभी शोकवान् हुआ, अरु सब स्त्रियांभी शोकवान् भई. अरु राजा, मंत्री, मिलके विचार करने लगे कि पुत्रका किसी ठौर विवाह करना अरु यहभी विचार किया-कि क्या हुआहै, जो मेरे पुत्र शोकवान् होय रहते हैं तब वशिष्ठजीसे पूँछा कि, हे मुनीश्वर ! मेरे पुत्र शोकमें क्यों रहते हैं ! तब-वसिष्ठजीने कहा हे राजन् ! महापुरुषको जो क्रोध होता है, सो किसी अल्प कारण से नहीं होता. अरु मोह भी अल्प कारणसे नहीं होता. अरु शोक भी अल्प कारण से नहीं होता. जैसे पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, जो महाभूत हैं, सो अल्प कार्य में विकारवान नहीं होते. जब जगतकी उत्पत्ति प्रलय होती है तब विकारवान् होते हैं तैसे महापुरुष अल्प कार्यमें

विकारवान् नहीं होते. ताते हेराजन् ! तुम शोक करनेयोग्य नहीं. अरु रामजी जो शोकवान हुआ है सो भी किसी अर्थके निमित्त हो गया, पाछे इसको सुख मिलैगा, तुम शोक मतकरो. वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज ! ऐसे वशिष्ठ अरु राजा दशरथ विचार करतेथे; तिसकालमें विश्वामित्रजी अपने यज्ञके सहाय अर्थ आवत भये. राजा दशरथके गृहमें आयकर पौरियासों कहते भये; कि राजा दशरथसे कहो. गाधिका पुत्र विश्वामित्र बाहर खडे हैं तब इनने और बड़े पौरियाकोजाय कहा. हे स्वामी! एक बडा तपस्वीद्वारपै आय खडा है, उसने हमसे कहाकि राजा दशरथके पास जाय कहो, कि विश्वामित्र आये हैं. सो सुनके राजा दशरथके पास गये, अरु कहाकि विश्वामित्र, गाधिका पुत्र बाहर खडा है. अरु संपूर्ण मंडलेश्वर करपूज्य जो राजा दशरथ सबन सहित अपने सिंहासनपर बैठा है, अरु बडे तेज कर संपन्न है; तिस से कहा कि विश्वामित्रने हमसे कहा है कि दशरथके पास जाय कहो, कि विश्वामित्र बाहर खडा है- हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार बडे पौरियाने राजासों कहा, तब राजा सुनकर सुवर्णके सिंहासनसे उठ खडा हुआ, अरु चरणों करके चला. एक ओर वशिष्ठजी, और दूसरी ओर वामदेवजी. अरु सुभटकी नाईं मंडलेश्वर स्तुति करत चले. जब जहां ते विश्वामित्रजी दृष्टि आये तब तहांते प्रणाम करने लगे. जहां पृथ्वीपर शीश राजाका लागै तहां पृथ्वीभी हीरा, मोतीकी सुंदर होय जावे. इस प्रकार शीश नमावत राजा विश्वामित्रके आगे चला. अरु बडी जटा शिरपरते कांधपर परी हैं, ऐसे विश्वामित्र अग्निकी नाईं प्रकाशितहैं, अरु शरीर सुवर्णकी नाईं प्रकाशता है. अरु हृदयमें शांति कोमल स्वभावजाननेमें आवे ऐसे, अरु महातेजवान्, सुंदर कांति, अरु शांतिरूप, अरु हाथमें बांसकी लकडी,अरु महा धैर्यवान ऐसे विश्वामित्रको प्रणाम करत राजा दशरथ चरणोंके ऊपर जाय गिरा जैसे सूर्य सदाशिवके चरणों पर जाय गिरेथे, तैसे मस्तक नवाय कर कहा मेरे बड़े भाग्य हुए जो तुम्हारा दर्शनहुआहै, हमारे ऊपर तुमने बडी अनुग्रह कियाहै. हमको बडा आनंद प्राप्त हुआ है. जो अनादि, अनंत है, आदि, मध्यअंतते रहित अविनाशी है; ऐसा जो अकृत्रिम आनंदहै, सो तुम्हारे दर्शन कर मुझको प्राप्त हुआ दृष्टिमें आवताहै.

हे भगवन्! आज मेरे बडे भाग्य हुए हैं, जो मैं धर्मात्माके गिननेमें आऊंगा. काहेते कि जो तुम मेरे कुशलनिमित्त आये हो. हे भगवन् !तुम्हारा आवना हमारे लक्षमें नहीं था. अरु तुमने बडा अनुग्रह किया है .जैसे सूर्य कोई कार्य करनेको पृथ्वी पर आवे, तैसे तुम मुझको दृष्टि में आवते हो. अरु सबते उत्कृष्ट दृष्टिमें आवते हो काहेते कि तुममें दो गुण हैं; एक तो क्षत्रियका स्वभाव तुम्हारेमें है, अरु दूसरा ब्राह्मणका स्वभाव भी तुम्हारे में भासता है. अरु शुभ गुण कर पूर्ण हो. हे मुनीश्वर तुम क्षत्रियमेंते ब्राह्मण भये हो. ऐसी कोईकी सामर्थ्य नहीं देखी. अरु तुम्हारा शरीर प्रकाशमान दीखता है. अरु जिस मार्ग से तुम आये हो, अरु जिस मार्गमें तुम दृष्टि करत आये हो, तहां ते अमृत वृष्टि करत आये हो ऐसा दृष्टि आवता है. हेमुनीश्वर ! तुम आये सो तुम्हारे दर्शन कर मुझको बडा लाभ हुआ है. हे भारद्वाज ! इस प्रकार राजा दशरथ विश्वामित्रसे बोले. अरु वशिष्ठजी आयकर विश्वामित्रको कंठ लगायके मिले. और जो मंडलेश्वर राजाथे सो बहुत प्रणाम कर इस प्रकार सब मिले. तब विश्वामित्रको राजा दशरथ घरमें ले आये. जहां राजसिंहासन था, तहां आनकर बिठाया. अरु वशिष्ठ, वामदेव को बिठाये. और राजा दशरथने विश्वामित्रका पूजन किया. अरु अर्घ्य पादार्चन करके प्रदक्षिणा करी. बहुरि वशिष्ठजीने विश्वामित्रका पूजन किया अरु विश्वामित्रने वशिष्ठजीका पूजन किया. ऐसे अन्योन्य पूजन हुआ. इस प्रकार पूजन करके सब अपने अपने आसनपर यथायोग्य बैठे. तब राजा दशरथ बोले हे भगवन्! हमारे बडे भाग्य हैं जो तुम्हारा दर्शन हुआ. जैसे कोऊ तप्तको अमृत प्राप्ति होवे; अरु जन्मांधको नेत्र प्राप्त होवें, सो आनंद पावे जैसे निर्धनको चिंतामणि प्राप्त होवे, अरु आनंदको पावे. अरु जैसे किसीका बांधव मुवा होय, सो विमान पर चढा हुआ आकाशते आवे, उसको जैसा आनंद प्राप्त होवे; तैसे तुम्हारे दर्शन कर, मैं आनंदको प्राप्त हुआ हूं. हे मुनीश्वर ! तुम्हारा आवना जिस अर्थ हुआहै, सो कृपा कर कहो. अरु जो तुम्हारा अर्थ हो सो पूर्ण हुआ जानो. काहेते कि ऐसा पदार्थ कोई नहीं है, जो तुमको देना कठिन है. सब कछु मेरे विद्यमान है. जो तुम्हारा

अर्थ है सो निश्चय कर जानने योग्य होय रहा है. जो कछु तुम आज्ञा करोगे सो मैं देऊंगा. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे विश्वामित्रागमनवर्णनं नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥ वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार राजा दशरथने कहा, तब मुनिनमें शार्दूल जो विश्वामित्र,सो बहुत प्रसन्न भये, अरु रोम खडे हो आये, जैसे पूर्णमासीके चंद्रमाको देखके क्षीरसागर प्रसन्न होताहै, तैसे प्रसन्न होकर कहत भये-हे राजशार्दूल ! तुम धन्य हो ! ऐसा क्यों न होवे; जो तुम्हारेमें दो गुण श्रेष्ठ हैं एक तो रघुवंशी हो. दूसरा वशिष्ठजी तुम्हारा गुरु है; ताकी आज्ञामें चलते हो. ताते. हे राजन् ! जो कछु मेरा प्रयोजन है सो तुम्हारे आगे प्रगट करता हों;श्रवण करो. दशरात्र यज्ञका मैंने आरंभकिया है; सो जब यज्ञको करने लगताहूं तब राक्षस खर अरु दूषण उस यज्ञको तोर डारते हैं. जहां जहां मैं जायकर यज्ञ करता हूं; तहां तहां आय कर अपवित्रजो रुधिर अरु मांस, अरु अस्थि सो डारते हैं; सो स्थान यज्ञ करने योग्य नहीं रहता और बहुरि मैं और ठौर करने लगताहूं, तहां भी उसी प्रकार अपवित्र कर जाते हैं. तिसके नाश करनेके निमित्त मैं तुम्हारेपास आया हूं. कदाचित् ऐसे कहो कि तुमतो भी समर्थ हो तो हेराजन् ! मैंने यज्ञका आरंभ कियाहै तिसका अंग क्षमाहै. जो उनको मैं शाप देऊं, तो वह भस्म होजावें, परंतु शाप क्रोध विना होत नाहीं. अरु क्रोध कियेते यज्ञ निष्फल होजाताहै. अरु जो मैं चुपहो रहों तो वह राक्षस अपवित्र वस्तु डार जाते हैं. ताते मैं तुम्हारी शरण आयाहों, मेरा कार्य करो. हे राजन् ! तेरा जो रामजी पुत्र है, सो कमलनयन काकपक्ष संयुक्त है. अर्थ यह जो बालक दूसरी शिखा सहित रहे हैं. तिसको मेरे साथ देहु, जो राक्षसोंको मारैं; तब मेरा यज्ञ सफल होय. और तुमको ऐसा शोक करना नहीं चाहिये कि मेरा पुत्र बालक है यह तो बडे इंद्रके समान शूरवीर हैं. इनके समीप वह राक्षस ठहर न सकैंगे. जैसे सिंहके सन्मुख मृगके बच्चे ठहर नहीं सकते, तैसे तेरे पुत्रके सन्मुख राक्षस न ठहर सकैंगे. ताते मेरे साथ उनको तुम देहु. जो तुम्हारा भी धर्म रहै अरु यशभी रहै. मेरा कार्य भी होवे. इसमें संदेह नहीं करना. हे राजन्! ऐसा पदार्थ त्रिलोकीमें कोई नहीं जो रामजीका किया कछु न होवे. इसीसे मैं तेरे पुत्रको लिये जाता हूं यह मेरे करसों ढांपा

रहगा; अरु इसको कोई विघ्न मैं होने न देऊंगा; अरु जो तेरे पुत्र वस्तु हैं सो मैं जानताहूं; और वशिष्ठजीहू जानते हैं. और जो ज्ञानवान् त्रिकालदर्शी होवेगा, सो भी इनको जानता होयगा. और कोईकी सामर्थ्य नहीं है जो इनको जानसकै.ताते तुम इनको मेरे साथ देहु जो मेरे कार्यकी सिद्धि होय. हे राजन्! जो समयपर कार्य होता है, सो थोरे करने सेभी वहुत सिद्धि पावता है. जैसे द्वितीयाके चंद्रमाको देखके एक तंतुका दान किया होय सो भी वहुत है; पीछे वस्त्रका दान कियेते भी तैसा कार्य सिद्धि नहीं होता तैसे समयपर थोडा कार्य भी वहुत सिद्धिको देताहै अरु समय विना वहुत कार्य भी थोरे फलको देताहै. ताते तुम मेरे साथ रामजीको दीजै. खर, दूषण, ये वडे दैत्य हैं. सो आय कर मेरा यज्ञ खंडन करते हैं; जव रामजी आवैंगे तव वह भाग जायँगे. रामजीके आगे खडे न होय सकैंगे. इनके तेजसे वह सव अल्प वल होजावेंगे. जैसे सूर्यके तेज करिकें तारागणका प्रकाश छिप जाता है; तैसे रामजीके दर्शनसे वह स्थित न रहैंगे. जैसे गरुडके आगे सर्प नहीं ठहर सक्ते, तैसे रामजीके आगे राक्षस न ठहर सकैंगे. देखकर भाग जायँगे. ताते तुम मेरे साथ देहु जो मेरा कार्य होवे; अरु तुम्हारा धर्म भी रहै. रामजीके निमित्त संदेह मत करना. उन राक्षसोंकी सामर्थ्य नहीं जो रामजीके निकट आवे. अरु मैं भी रामजीकी रक्षा करूंगा. वाल्मीकिउवाच; हे भारद्वाज! जव विश्वामित्रने ऐसा कहा, तव राजा दशरथ सुनकर चुपरहा अरु गिरपडा.एक मुहूर्त्त पर्यंत पड़ा रहा. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे विश्वामित्रेच्छा वर्णनं नाम चतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥ वाल्मीकिउवाच,हे भारद्वाज! एक मुहूर्त्त पीछे राजा उठे अरु महादीन से होगये, अरु महामोहको प्राप्त हो गये, धैर्य ते रहित होकर बोले. राजोवाच, हे मुनीश्वर! तुमने क्या कहा रामजी अभी तो कुमारहैं शस्त्रविद्या, अस्त्रविद्या भी सीखे नहीं हैं अभी तो फूलनकी शय्यापर शयन करने वारे हैं, वह युद्धको क्या जानैं. अंतःपुरमें स्त्रियनके पास वैठने वाले हैं, राजकुमार वालकनके साथ खेलनेवाले हैं, और कदाचित रणभूमि देखीहू नहीं है, भ्रुकुटीको चढायके कदाचित् युद्ध भी नहीं किया अरु कमलकी नाईं जिसके हाथहैं, अरु कोमल जिसका शरीर है, वह राक्षसके साथ युद्ध कैसे करैगा, कहूं पत्थरका अरु

कमलका भी युद्ध हुआहै । रामजीका वपु कमल समान कोमल है, अरु वे महा क्रूर पत्थरकी नाईं हैं, उनके साथ युद्ध कैसे होवेगा. हे मुनीश्वर ! मैं नव सहस्र वर्षका हुआ हूं, अब दशवां सहस्र लगा है. वृद्ध हुआ हूं यह वृद्धावस्थामें मेरे घर पुत्र हुवे हैं, सो चारोंके मध्य रामजी कमलनयन. कछु षोडश वर्षका हुआ है. अरु मुझको वहुत प्रियतम है. अरु मेरा प्राण है. रामजी विन मैं एक क्षणभी रहि नहीं सकता. जो तुम इनको ले जाओगे, तो मेरा प्राण निकल जायगा ! मैं मृतक हो जाऊंगा. हे मुनीश्वर ! केवल मेराही ऐसा सनेह सो नहीं है. उसका भाई जो लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अरु उसकी माता जो है, सो सवहीके प्राण रामजी हैं. जो तुम रामजीको ले जाओगे, तो हम सवही मर जायँगे. वियोग करके जो हमको मारने आये हो तो ले जाओ, हे मुनीश्वर ! मेरे चित्तमें रामही फुर रहा है. तिसको मैं तुम्हारे साथ कैसे देऊं, मैं उसको देखत देखत प्रसन्न होता हों. जैसे पूर्णमासीके चंद्रमाको देख कर क्षीर समुद्र प्रसन्नहोता है, अरु चंद्रको देखकर चकोर प्रसन्न होता है, अरु मेघ बूंदको देखकर पपीहा प्रसन्न होता है, तैसे रामजीको देखकर मैं प्रसन्न होता हूं. तव रामजीको वियोग कर मेरा जीवना कैसा होयगा, हे मुनीश्वर ! मेरेको रामजी जैसी प्रिय स्त्री भी नहीं. अरु धनभी ऐसा प्रिय नहीं, अरु राज्यभी ऐसा प्रिय नहीं और पदार्थ भी मुझको कोई रामके समान प्रिय नहीं हैं. ऐसा रामजी प्यारा है. हे मुनीश्वर ! तुम्हारे वचन सुनके बड़े शोकको प्राप्त हुआ हूं. मेरे वडे अभाग्य आये हैं; जो तुम्हारा आवना इस निमित्त हुआ है. तुम्हारे वचन सुन कर जैसे कमलके ऊपर पत्थरकी वर्षा होय ऐसी व्यथा मेरेको होती है. अरु पत्थरकी वर्षाते जैसे कमल नष्ट हो जाते हैं, तैसे तुम्हारे वचनते मेरी नष्टता हो जायगी. जैसे वडा मेघ चढ आवे, तामें वडा पवन चलै तव मेघकी गंभीरताका अभाव होय जाय; तैसे तुम्हारे वचनते मेरी वडी प्रसन्नताका अभाव होय जाता है! जैसे वसन्तऋतुकी मंजरी, ज्येष्ठ आषाढमें सूख जाती है तैसे तुम्हारे वचन सुन मेरे हृदयकी प्रसन्नता जर जाती है ! हे मुनीश्वर ! रामजीको देनेमें मैं समर्थ नहींहूं. जो तुम कहो तो एक अक्षौहणी सेना मेरी है; सो वडे शूरवीरकी है, जिसको शस्त्रविद्या, अस्त्रविद्या, मंत्रविद्या, सब आवती है. और सवै युद्धमें चतुर हैं. तिनके साथ मैं तुम्हारे संग चलता

॥९॥ हों वहां जायके मैं उनको मारूंगा अरु हस्ती, घोडा, रथ, प्यादे, ऐसी चतुरंगिनी सेनाको साथ ले जाओ, अरु जो तुम्हारे यज्ञके खंडनहारे हैं तिनको नाश करो, अरु एकके साथ मैं युद्ध न करसकूंगा, जो कदाचित् यज्ञ खंडनहारा कुवेरका भाई, अरु विश्रवाका पुत्र, रावण होवे तो उसके साथ युद्ध करनेको मैं समर्थ नहीं. हे मुनीश्वर ! आगे मेरेमें बडा पराक्रम था, वैसा त्रिलोकीमें किसीको नहीं था. जो मेरे निकट मारनेको आता, तो वाको मैं मार देता. अब मेरी वृद्धावस्था हुई है; अरु देह जर्जरी भावको प्राप्त हुआ है. इस कारण रावणके साथ युद्ध करनेको मैं समर्थ नहीं हूं. हेमुनीश्वर ! मेरे बडे अभाग्य हैं जो तुम्हारा आना इस निमित्त हुआ है. अब मेरा वैसा पराक्रम नहीं. मैं रावण सों काँपता हों. केवल मैं ही नहीं काँपता; इन्द्रादिक देवता सब रावणसे कँपते हैं; अरु राक्षस सब उसके वश वर्त्तते हैं. अब किसीको शक्ति नहीं है जो रावणके साथ युद्ध करै ? इस कालमें वह बडा शूरवीर है. हे मुनीश्वर ! जब मेरी सामर्थ्यता भी नहीं रही; तो राजकुमार रामजी कैसे समर्थ होवें गे; अरु जिस रामजीको लेने तुम आये हो, सो रोगी हो रहा है, उसको चिंता ऐसी आय लगी है, जिससे वह महादुर्बल होगया है, अरु अंतःपुरमें एकांतमें बैठा रहता है, खाना पीना इत्यादिक जो राजकुमारकी चेष्टा है सो सब उसको विरस होगई है, अरु मैं नहीं जानता कि उसको क्या दुःख प्राप्त हुआ है, जैसे कमल सूखके पीत वर्ण होजाता है, तैसा उसका मुख होगया है, उसको युद्ध करनेकी सामर्थ्यता नहीं अरु अपने स्थानते बाहरकी पृथ्वी भी नहीं देखी है, सो युद्ध कैसे करैंगे. हे मुनीश्वर ! वह युद्ध करनेको समर्थ नहीं हैं, अरु हमारे प्राण वही हैं. जो उसका वियोग होवेगा तो हमारा जीवना नहीं होवेगा, जैसे जल बिना मछली जीवतीनहीं है, तैसे हम रामजी बिना कैसे जीवेंगे, अरु जो राक्षसके युद्ध निमित्त कहो तो हम तुम्हारे साथ चलैं, अरु रामजी युद्ध करनेके योग्य नहीं. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे दशरथोक्ति वर्णनं नाम पंचमः सर्गः ॥ ५ ॥ वाल्मीकिरुवाच, हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार राजा दशरथने कहा, ॥९॥
तब महादीन जैसे मोह सहित अधीर्यवान् वचन सुनकर, क्रोधसों विश्वामित्र कहत भये. विश्वामित्रोवाच, हे राजन् ! तू अपने

धर्मको सुमिरण कर यह प्रतिज्ञा तैंने करीहै, "जो तेरा अर्थ होवेगा सो पूर्ण करूंगा; और पूर्ण हुआ जानना" ऐसा तुमने कहा है, अब तू अपने धर्मको त्यागताहै और जो तू सिंह हुआ मृगोंकी नाईं भागता है तो भाग; परंतु आगे रघुवंशमें ऐसा कोई नहीं हुआ. जैसे चंद्रमाके मंडलमें शीतलता होती है, अग्नि निकसता नहीं है, तैसे तुम्हारे कुलविषे ऐसा कदाचित् नहीं हुआ; अरु जो तू करता है तो कर, हम उठ जायँगे. काहेते कि शून्य गृहते शूनेई जाता है. परंतु यह तुमको योग्य नथा. अरु तुम बसते रहो, राज्य करते रहो, अरु जो कछु होवेगा सो हम समझ लेयँगे. अरु जो अपने धर्मको तू त्यागता है, तो त्याग दे. वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज! इस प्रकार जब अत्यंत क्रोधवान् होकर विश्वामित्र बोला, तब इसके क्रोध करनेसे पचास कोटि पृथ्वी कँपने लगी. अरु इंद्रादिक देवता भी भयको प्राप्त हुए, कि ये क्या हुवा; तब वसिष्ठ जी बोले. वशिष्ठोवाच, हे राजन्! इक्ष्वाकुके कुलमें सब परमार्थी हुए हैं. और तू अपने धर्मको क्यों त्यागता है. मेरे विद्यमान तैंने कहा है, "जो तुम्हारा अर्थ होवेगा, सो मैं पूर्ण करूंगा." अब तू क्यों भाजता है?रामजीको इसके साथ दे. अरु यही तेरे पुत्रकी रक्षा करैंगे. जैसे सर्पते अमृतकी रक्षा गरुड करता है, तैसे तेरे पुत्रकी रक्षा यह करैगा. अरु यह कैसा पुरुष है, सो श्रवण कर इसके समान बल किसीकानहीं. साक्षात् बलकी मूर्त्ति है अरु धर्मात्मा है. साक्षात् धर्मकी मूर्त्ति है. अरु ऐसा तपस्वी कोऊ नहीं है. अरु तपकी खानि है. अरु इसके समान कोऊ बुद्धिमान् नहीं है अरु इसके समान कोई शूरमा नहीं है, अरु अस्त्र शस्त्र विद्यामें भी इसके तुल्य कोऊ नहीं है. काहेते कि, जो दक्ष प्रजापतिकी दो पुत्री थीं; एक जय,अरु दूसरी सुभगा,सो ये ऋषिको दीनी है, अरु जयथी, तिसमें दैत्योंके मारने निमित्त पांचसौ पुत्रोंको प्रगट किये थे, अरु सुभगाके भी पांचसौ पुत्र भये थे सो सब दैत्योंके नाश निमित्त उत्पत्ति कियेथे. सो स्त्रियां इसके विद्यमान मूर्त्ति धरके स्थितहुई हैं, ताते इसको जीतनेको कोऊ समर्थ नहीं है, जिसका साथी विश्वामित्र होवे सो त्रिलोकीमें काहू सों नहीं डरै, ताते इसके साथ तू अपना पुत्र दे, अरु संशय मतकर. किसीकी सामर्थ्य नहीं जो इसके होते तेरे पुत्रको कछु कोऊ कहिसके.

इसकी दृष्टिके देखनेते दुःखका अभाव होजाता है. जैसे सूर्यके उदयते अंधकारका अभाव होजाताहै तैसे. हे राजन् ! इसके साथ तेरे पुत्रको खेद कहां होवे.तू इक्ष्वाकुके कुलका है, अरु दशरथ तेरा नामहै. सो तेरे जैसे धर्म्मात्मा जब अपने धर्ममें स्थित न रहे तो और जीवते धर्मकी पालना कैसे होयगी, जो कछु श्रेष्ठ पुरुष चेष्टा करतेहैं. तिनके अनुसार और जीव करते हैं. जो तुम सारखे अपने वचनकी पालना न करैंगे, तव और सों कहा वनैगी अरु तुम्हारे कुलमें ऐसा कवहूं नहीं हुवा. ताते अपने धर्मको त्यागना योग्य नहीं. तू अपने पुत्रको दे, अरु जो तू उनके भयकर शोकमान होवे, तोभी ना मतिकहै, और मूर्त्तिधारी काल आयकर स्थित होवे तौभी विश्वामित्रके विद्यमान तेरे पुत्रको कछु होवे नहीं, तू शोक मतकर, अपने पुत्रको इसके साथ दे, अरु जो नदेगा, तौ दो प्रकारका तेरा धन नष्ट होवेगा-एक धन यह है कि जो कूप, वावडी, ताल, कराये होयँगे, तिनका जो पुण्य है, सो नष्ट हो जावेगा. अरु तप, व्रत, यज्ञ, दान, स्नानादिकका जो पुण्यहै, अरु क्रिया है तिस सवका फल नष्ट होजावैगा, औ तेरा गृह निरर्थ होय जावेगा. ताते मोह अरु शोकको त्याग, अरु अपने धर्मका सुमिरण कर, रामजी इसकेसाथ दे, तेरे सव कार्य्य सफल होवेंगे. हे राजन् ! जो इस प्रकार तुमको करना था. तो प्रथमही विचारकर कहना था. काहेसे कि विचार विना काम करनेका परिणाम दुःख होता है, ताते इसके साथ अपने पुत्रको देहु. वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज ! जव इस प्रकार वासिष्ठजीने कहा, तव राजा दशरथ धैर्यवान् होकर, भृत्योंमें जो श्रेष्ठ भृत्यथा, वाको वुलायकर कहत भया, हे महावाहु ! रामजीको ले आओ. तव इसके साथ जो चाकर अंतर वाहर आवने जावने वारा था, अरु छलते रहित था, सो राजाकी आज्ञा लेकर रामजीके निकट गया, और एक मुहूर्त्त पाछे पीछा आया, अरु कहत भया हे देव! रामजी तो वडी चिंतामें वैठे हैं. मैंने रामजीसे वारंवार कहा कि अव चलिये, तव वह कहते हैं कि चलें हैं. ऐसै कहि कहि चुप हो रहते हैं. हे भारद्वाज ! इस प्रकार जव राजाने श्रवण किया तव कहा, रामजीके मंत्री अरु टहलुए सव वुलावो, सेवक सवको वुलाय निकटलाये, तवराजा आदरसों कोमल सुंदर वचन युक्तिसे कहत भया, हे रामजीके प्यारे ! रामजीकी कहा दशाहैऔर ऐसी

दशा क्यों कर हुई है. सो सब क्रम करके कहो. मंत्री उवाच, हे देव ! हम कहा कहैं, जेते हम कछु दृष्टि आवते हैं सो सब आकार अरु प्राण देखने मात्र हैं. अरु हम सब मृतक हैं काहेते कि हमारा स्वामी रामजी बडी चिंताको प्राप्त हुआ है. हे राजन् ! जिस दिनसे रघुनाथजी तीर्थ कर आये हैं तिस दिनसे चिंताको प्राप्त भये हैं. जब उत्तम भोजन हम ले जाते हैं, और पान करनेका पदार्थ, और पहरनेका पदार्थ, अरु देखनेका पदार्थ कछु लेजाते हैं,सो सुखदाई पदार्थ रससहित तिसे देखके किसी प्रकार प्रसन्न होते हमने नहीं देखाहै. ऐसी चिंताके विषे वह लीनहैं. कि देखता भी नहीं, अरु जो देखताहै तो क्रोध करताहै, अरु सुखदाई पदार्थका निरादर करताहै, अरु अंतःपुरमें इनकी माता नानाप्रकारके हीरे अरु मणि के भूषण देतीहै,तौ उनको भी डारदेताहै, नहींतो किसी निर्धनको देदेताहै, प्रसन्न किसी पदार्थ पै होते नहीं हैं सुंदर स्त्रियां खडी विद्यमान होती हैं, नानाप्रकारके भूषणहू सहित महा मोह करनेहारी निकट होइकर लीलाकरती हैं, कटाक्षहू सहित प्रसन्न करने निमित्त; तौभी विषवत जानतहै, उनकी ओर देखता भी नहीं. जैसे पपैया और जलको देखता भी नहीं जब अंतःपुर विषे निकसता है, तब उनको देखकर क्रोधवान् होता है. हे राजन् ! और कछु उसको भला नहीं लगता. किसी बड़ी चिंता विषे मग्नहै. और तृप्त होकर भोजन भी नहींकरता, क्षुधावंत रहता है. और न कछु पहरने, खाने, पीनेहू की इच्छा रखताहै, न राज्यकी इच्छाहै न किसी इंद्रिय के सुखकी इच्छा है,महा उन्मत्तकी न्याईं बैठा रहता है. अरु जब कोई सुखदाई पदार्थ फूलादिक लेजाते हैं, तब क्रोध करता है, हम नहीं जानते कि क्या चिंता उसको भई है, एक कोठरीमें पद्मासन करि अरु हाथमें मुख धरके बैठा रहताहै, अरु जो कोऊ बडा मंत्रीआयके पूछता है, तब उससे कहताहै, कि तुम जिसको संपदा मानते हो सोई आपदा है, जिसको आपदा जानते हो सो आपदा नहीं है, अरु नानाप्रकारके संसारके पदार्थ जो रमणीय कर जानते हो, सो सबझूठे हैं, याहीमें सब डूबे हैं, ये सब मृगतृष्णाके जलवतहैं; तिनको सत्य जान मूर्ख जो हरिण सो दौरते हैं,अरु दुःख पाते हैं. हे राजन् ! कदाचित् बोलते हैं तो ऐसे बोलते हैं. और कछु उनके उरमें सुखदायी नहीं भासताहै. अरु जो हम हांसीकी

वार्त्ता करते हैं. तो वह हँसता नहींहै. जिसपदार्थको प्रीति संयुक्त लेते थे तिस पदार्थको अव डारि देतेहैं अरु दिन दिनपै दुर्वल हुये जातेहैं अरु जव अंतःपुरमें स्त्रियोंके पास वैठताहै; अरु वह नानाप्रकारकी चेष्टा रामजीको प्रसन्न करनेके निमित्त देखावती हैं उनको भी देखके प्रसन्न नहीं होता अरु जैसे मेघकी बूंदते पर्वतचलायमान् नहीं होते हैं; तैसे आप चलायमान नहीं होतेहैं. अरु जो वोलताहै तो ऐसे कहता है-न राज्य सत्य है,न भोग सत्य है, न जगत् सत्य है, न मित्र सत्य है; मिथ्यापदार्थके निमित्त मूर्ख परे यत्न करते हैं. जिनको सत्य जानते हैं अरु सुखदायक जानते हैं, सो वंधनका कारणहैं; और कहा कहिये जो उनके कोई पास राजा अथवा पंडित जावे तिनको देखकर कहता है यह पशु हैं, आशारूपी फांसीसे वांधे हुये हैं.हे राजन्! जो कछु भोग्य पदार्थ हैं तिनको देखकर उसका चित्त प्रसन्न नहीं होता, अरु देखके क्रोधवान् होताहै जैसे पपैया मारवाडमें आवे, अरु मेघकी बूंदहू देखता नहीं है अरुखेदवान होता है, तैसे रामजी विषय हूते खेदवान् होताहै, हे राजन्! इन करके हर्षवान् नहीं होता, ताते हम जानते हैं किइनको परमपद पानेकीइच्छा है, परन्तु कदाचित मुखते सुना नहीं है, अरु त्यागका अभिमान् भी कदाचित् सुना नहीं है, कवहूं गाता है, अरु वोलता है तव ऐसे कहता है, हाय हाय ! मैं अनाथ मारा गया हूं, अरे मूर्ख तुम संसार समुद्रमें क्यों डूवते हो, यह संसार परम अनर्थका कारण है, इसमें सुख कदाचित् हू नहीं है, इससे छूटनेका उपाय करो. हे राजन्! ऐसा भी कभी हम सुनते हैं, अरु किसीके साथ वोलता नहीं है, न हँसता है न मंत्रीके साथ, न अपने अंतःपुरनकी स्त्रियोंके साथ, न माताके साथ वोलता है, किसी परमचिंतामें मग्न है, अरु किसी पदार्थकर आश्चर्यवान् नहीं होता, जो कोऊ कहै कि आकाशमें वाग लगाहै, तिसमें फूल फूले हैं तिनको मैं ले आया हूं तिसको सुनकर भी आश्चर्यवान् नहीं होता, सव भ्रम मात्र देखता है, न किसी पदार्थसे उसको हर्ष होता है, न किसी पदार्थसे उसको शोक होताहै, किसी वडी चिंतामें मग्न है सो किसीको चिंता निवारनेमें हम समर्थ नहीं देखते हैं,वह तो चिंताके समुद्रमें मग्न है, हेराजन् यह चिंता हमको लगरही है; कि रामजीको न खानेकी इच्छा है, न पहिरनेकी इच्छा है,न वोलने

की, न देखनेकी इच्छारही है न किसी कर्मकी इच्छा रही है. ताते मृतक नहो जावे ऐसी हमें चिंता है. अरु जोकोऊ कहता है कि तू चक्रवर्त्ती राजा है,तेरो बडा आयुर्बल होइ,अरु बडे सुखको पाओ. तब तिसके वचन सुन कठोर बोलता है. हे राजन्! केवल रामजी हीको ऐसी चिंता नहीं;लक्ष्मण अरु शत्रुघ्नको भी ऐसी चिंता लगरही हैं रामको देखकर जो कोऊ उनकी चिंता दूर करनेहारा होवे तो करै नहींतो बडी चिंता मध्य डूबे रहैंगे किसी पदार्थकी इच्छा उनको नहीं रहती है. हे राजन्! अब कहा कहते हो? तेरा पुत्र अब अतीत ह्वै रहा है. एक वस्त्र उपरना ओढकर बैठा है ताते सोई उपाय करो, जिससे उसकी चिंता निवृत्त होवे. विश्वामित्रोवाच, हे साधु! जो रामजी ऐसे हैं तो हमारे पास विद्यमान लाओ, हम उसका दुःख निवृत्त करैंगे. हे राजा दशरथ! तू बडा धन्य है. कि जिसका पुत्र विवेक अरु वैराग्यको प्राप्त भया. हे राजन्! हम तेरे पुत्रको परमपदकी प्राप्ति करैंगे. अभी सब दुःख उनके मिट जायँगे. हम वसिष्ठादि जो बैठेहैं सो एक युक्तिकर उपदेश करैंगे. तिस करके उनको आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी. तब वह दशा तेरे पुत्रकी होवेगी जो लोष्ट पत्थर अरु सुवर्णको समान जानेंगे. अरु जो कछु तुम्हारे क्षत्रियकीप्रवृत्तिका आचरणहै सो करैंगे. अरु हृदयमें प्रेमते उदासी होवेंगे ताते हेराजन्! उस करके तुम्हारा कुल कृतकृत्य होवेगा. ताते रामजीको शीघ्र बोलावहु. वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज!ऐसे मुनींद्रके वचन सुनकर राजादशरथ मंत्री अरु नौकरोंसे कहत भयाकि रामजी अरु लक्ष्मण अरु शत्रुघ्नको लेआओ. जैसे हरिणीको हरिण ले आताहै तैसे ले आओ. जब राजा दशरथने ऐसा कहा, तब मंत्री अरु भृत्य रामजीके पास जायके कहा; तब रामजीआये सो आवत आवत राजा दशरथ, अरु वशिष्ठजी, अरु विश्वामित्रको देखे, कि, तीनोंके ऊपर चमर होयरहे हैं, अरु बडे मंडलेश्वरबैठेहैं. तिननेहू रामजीको देखे. जो शरीरते कृश होय रहे हैं जैसे महादेवजी स्वामिकार्त्तिकको आवत देखे, तैसे रामजीको आवत राजादशरथ देखत हैं. तहां रामजी आयकर राजा दशरथजीके चरणोंपै मस्तक लगाय नमस्कार किया. फिर तैसेई वशिष्ठजीको अरु विश्वामित्रजी को नमस्कार किया. बहुरि सभामें जो ब्राह्मण बडे बडे बैठे

थे, तिनकोहू नमस्कार किये. अरु जो बडे बडे मंडलेश्वर बैठेथे तिनने उठकर रामजीको प्रणाम किया. फिर राजा दशरथने रामजीको गोदमें बैठाया. अरु देखकर मस्तक चूमा. अरु बहुत प्रेम पुलकित होय रामजीसों कहत भया हेपुत्र! केवळ विरक्तता कर परमपदकी प्राप्ति नहीं होतीहै. अरु वशिष्ठजी गुरु हैं, तिनके उपदेशकी युक्ति कर परमपदकी प्राप्ति होयगी. वशिष्ठोवाच, हे रामजी ! तुम धन्यहो, अरु बडे शूरमें हो, जो विषय रूपी शत्रु तुमने जीते हैं जो विषय अजीत है, अरु दुष्ट है ताको तुमने जीता ताते तुम धन्य हो धन्य हो ! विश्वामित्रोवाच, हे कमलनयन राम ! अपने अंतरकी चपलताहै, तिसको त्याग करके, जोकछु तुम्हारा आशयं होय सो प्रगट कर कहो.हे रामजी ! यह जो तुमको मोह प्राप्त हुआहै;सो कैसे अरु किस कारण हुआहै ? अरु केताकहै ? सो कहो.अरु जो अब कछु तुमको वांछित होय सो कहो,हम तुमको तिसीपदमें प्राप्त करैंगे,जिसमें दुःख कदाचित होवे नहीं.और आकाशको चूहा काटि नहीं सकत है,तैसे तुमको पीडा कदाचित् नहोवेगी.हे रामजी! तुम्हारे संपूर्ण दुःख नाश कर देयँगे;तुम संशय मतकरो.जोकुछ तुम्हारा वृत्तांत होय सो हमसे कहो. वाल्मीकिउवाच,हेभारद्वाज!जब ऐसे विश्वामित्रने कहा सो सुनकर रामजी बहुत प्रसन्न भये; अरु शोकको त्यागदिया. जैसे मेघको देखके मोर प्रसन्न होता है;तैसे विश्वामित्रके वचन सुन रामजी प्रसन्न हुए. अरु अपने हृदयमें निश्चय किया अब मुझको उस पदकी प्राप्ति होवेगी. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे राम समाज वर्णनं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज ! ऐसे मुनीश्वरके वचनको रामजी सुनके बहुत प्रसन्न होयके बोले. श्रीरामोवाच, हे भगवन् ! जो वृत्तांत है सो तुम्हारे विद्यमान क्रम करके कहता हौं, इस राजा दशरथके घरमें जो मैं उत्पन्न भया हौं, बहुरि क्रम करके बडा हुआ हौं, उपवीतपाया हौं अरु चारों वेद पढकर ब्रह्मचर्यादि व्रतपायाहौं, तापाछे एक दिन पढके मैं घरमें आया तब मेरे हृदयमें बात आय रही कि तीर्थाटन करों, अरु देवद्वारमें जायके देवनके दर्शन करों; तब मैं पिताकी आज्ञा लेकर तीर्थको गया. अरु गंगा आदि संपूर्ण तीर्थमें स्नान किया; अरु शालिग्राम अरु केदार आदि ठाकुरके विधिसंयुक्त दर्शन किये; अरु यात्रा

करके यहां आया. फिर उत्साह हुआ. तब मेरे में विचार आया, कि प्रातःकाल उठके स्नान संध्यादिक कर्म करना, बहुरि भोजन करना, ऐसे इस प्रकारसों केतेकदिन व्यतीत भये, तब मेरे हृदयमें विचार उत्पन्न हुआ, सो विचार मेरे हृदयको खैंच ले गया-- जैसे नदीके तटपर तृण लता होते हैं, तिसको नदीका प्रवाह खैंच लेजाता है, तैसे मेरे हृदयमें जो कछु जगत्की आस्थारूप तृण लता थी, सो विचार रूपी प्रवाह लेगया. तब मैं जानता भया कि राज्य करके क्या है? अरु भोगते क्या है? अरु जगत् क्या है? सब भ्रम मात्र है. इसकी वासना मूर्ख रखते हैं. यह स्थावर जंगम रूपी जेता कछु जगत् है सो सब मिथ्या है. हे मुनीश्वर! जेते कछु पदार्थ हैं, सो मनसों करके हैं सो मनभी भ्रममात्रहै. अनहोता मन दुःखदायी हुआहै. मन जो पदार्थ सत्य जानकर दौरता है, अरु सुखदायक जानता है, सो मृगतृष्णाके जलवत् है. जैसे मृगतृष्णाको देखकर मृग दौरते हैं, अरु है नहीं; सो मृग दौरत दौरत थकके पड़जाता है; तौहू जल तिसको प्राप्त नहीं होता. तैसे मूर्खजीव पदार्थ को सुखदायी जानकर भोगनेका यत्न करता है; अरु शांतिको नहीं पाता है. तैसे—हे मुनीश्वर! इंद्रियनके भोग सर्पवत् हैं, जिनका मारा हुआ, जन्म मरनको पाता है. जन्मते जन्मांतरको पाता है. भोग अरु जगत् सब भ्रममात्र है. तिन विषे जो आस्था करते हैं, सो महामूर्ख हैं ऐसा मैं विचार करकै जानता हों; जो सब आगमापाई है. अर्थ यह जो आवतेहूहैं, अरु जाते हू हैं. ताते जिस पदार्थका नाश न होय. सो पदार्थ पावने योग्य है, इसी कारण से मैंने भोगका त्याग किया है. हे मुनीश्वर! जैसे कछु संपदारूपपदार्थ भासते हैं, सो सब आपदा हैं. इनमें रंचकहू सुख नहीं है. जब इनका वियोग होता है, तब कंटककी नाईं मनमें चुभता है. जब इंद्रियको भोग प्राप्त होता है, तब रोग दोषकरजलता है; अरु जब नहीं प्राप्त होता तब तृष्णा कर जलता है. ताते भोग दुःखरूपहै. जैसे पत्थरकी शिलामें छिद्र नहीं होता, तैसे भोगरूपी दुःखकी शिलामें रंचकभी सुखरूपी छिद्र नहीं होता है. हे मुनीश्वर! विषयकी तृष्णामें बहुत कालसों जलता रहा हों. जैसे हरे वृक्षके छिद्रमें रंचक अग्नि धरा होय, तब धुंवा होय थोरा थोरा जलता रहता है; तैसे भोगरूपी अग्नि

करके मन जलता रहता है. इस विषयमें सुख कछु हू नहीं, अरु दुःख बहुत है. इसकी इच्छाकरनी सोई मूर्खता है. जैसे खाईंके ऊपर तृण अरु पात होता है. तिसकर खाईं आच्छादित होय जाती है. तिसको देखके हरिण कूद परता है, अरु दुःख पावता है; तैसे मूर्ख भोगको सुखरूप जानके भोगनेकी इच्छा करता है; जब भोगता है तब जन्मते जन्मांतर रूप खाईंमें जाय परता है अरु दुःख पावता है. हे मुनीश्वर ! भोगरूपी चोर है. सो अज्ञानरूपीरात्रिमें लूटने लगताहै सो आत्मरूपी धनहै तिसको ले जाता है; तिसके वियोगते महादीन रहताहै. अरु जिस भोगके निमित्त यह यत्न करताहै, सो दुःखरूपहै शांतिको प्राप्त नहीं होता. अरु जिस शरीरके अभिमान करकै यह यत्नकरताहै, सो शरीरक्षणभंग होताहै, अरु असारहै. जिसको सदा भोगकी इच्छा रहतीहै, सो मूर्ख अरु जडहै, इसको बोलना चालनाभी ऐसाहै; जैसे सूखे बाँसके छिद्रमें पवन जाताहै;अरु पवनके वेगकर शब्द होता है; तैसे उस मनुष्यकी वासनाहै. जैसे थका हुआ मनुष्य मारवाड़के मार्गकी इच्छा नहीं करता तैसे दुःख जानकर मैं भोगकीइच्छा नहीं करताहूं. अरु यह जो लक्ष्मी है सो परम अनर्थकारी है. जब लग इसकीप्राप्ति नहीं होती, तब लग तिसके पावनेका यत्न होता है. अरु अनर्थकरके प्राप्ति होती है. अरु जब प्राप्ति हुई तब सब गुणका नाश कर देती है शीलता, संतोष, धर्म, उदारता, कोमलता, वैराग्य, विचार, दयादिक गुणका नाश करती है. जब ऐसे गुणका नाश हुआ, तब सुख कहांते होय. परम आपदा प्राप्त होती है. परमदुःखका कारण जानकर मैंने इस्का त्याग किया है. हे मुनीश्वर ! इसमें गुण तब लग है. जब लग लक्ष्मी नहीं प्राप्त भई. जब लक्ष्मीकी प्राप्ति भई तब सब गुण नाशहोजाता है. जैसे वसंतऋतुकी मंजरी हरियावल तबलग रहती है, जब लग ज्येष्ठ आषाढ नहीं आया; जब ज्येष्ठ आषाढ आया, तब मंजरी जर जाती है. तैसे जब लक्ष्मीकी प्राप्ति भई तब सब शुभ गुण जरजाते हैं. अरु मधुर वचन तब लग बोलता है, जब लग लक्ष्मीकी प्राप्ति नहींहोतीहै जब लक्ष्मीकी प्राप्ति भई कोमलताका अभावहोय कठोर होजाता है. जैसे जल पतला तब लग रहता है जब लग शीतलताका संयोग नहीं होय. जब शीतलताका संयोग होताहै, तब बर्फ होकर कठोर दुःखदायक हो जाता है. तैसे यह जीव

लक्ष्मी पाकर जड होजाता है. हेमुनीश्वर ! जो कछु संपदा है सो आपदा का मूल है; काहेते कि जब लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है. तब बड़े सुखको भोगता है; अरु जब तिसका अभाव होता है, तब तृष्णा करके जलता है. जन्मते जन्मान्तरको पावता है. लक्ष्मीकी इच्छा है सोई मूर्खता है यह तो क्षणभंग है. याते भोग उपजता है, अरु नाश भी होता है जैसे जलते तरंग उपजते हैं, अरु मिट जाते हैं अरु बिजुली स्थिर नहीं होती है, तैसे भोगहू स्थिर नहीं रहते. अरु पुरुषमें शुभ गुण तब लग हैं, जबलग तृष्णाका स्पर्श नहीं किया. जब तृष्णा भई तब शुभ गुणका अभाव हो जाता है. जैसे दूधमें मधुरता तब लग है. जब लग उसको सर्प ने स्पर्श नहीं किया; जब सर्प ने स्पर्श किया तब दूधहै सो विषरूप होजाता है. इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे रामेण वैराग्य वर्णनं नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ ॥ श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर ! लक्ष्मी देखने मात्रको ही सुंदर है, अरु जब इस्की प्राप्ति हुई, तब सद्गुणका नाशकर देती है. जैसे विषकी लता देखने मात्रको सुंदर है अरु स्पर्श कियेते मार डारती है, तैसे लक्ष्मीकी प्राप्ति हुए आत्मपदते मृतक होता है. अरु महादीन होय जाता है. जैसे किसीके घरमें चिंतामणि दबी रही, ताको खोदकर लेवे नहीं, तबलग दरिद्री रहता है, तैसे अज्ञान कर ज्ञान विना महादीन जैसा हो रहता है. आत्मानंदको पाय नहीं सकता आत्मानंदके पानेका जो मार्गहै, तिसकी नाश करनहारी लक्ष्मी है. इसकी प्राप्तिते जीव महाअंध होय जाता है. हे मुनीश्वर ! जब दीपक प्रज्वलित होता है, तब उसका बडा प्रकाश दृष्टि आवताहै; जब दीपक बुझ जाताहै, तब प्रकाशका अभाव होय जाता है, अरु काजरकी समक्षता रहजाती है, जो बारंबार वासना उपजती थी, सो रहती है; तैसे जब इस लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है, तब बडे भोग उनको भुगवाती है; अरु तृष्णा रूप काजर उससे उपजता रहता है. जब लक्ष्मीका अभाव होता है; तब वासना तृष्णाकी समक्षता छांड जाती है. तिस वासना तृष्णा करके अनेक जन्मको पाता है, शांतिको कदाचित् नहीं प्राप्त होता. हेमुनीश्वर ! जब जिसको लक्ष्मीकी प्राप्ति होतीहै, तब शांतिके उपजावनहारे गुणका नाश करतीहै. जैसे जबलग पवन नहीं चलता, तबलग मेघ रहता है, जब पवन चला कि मेघका

अभाव होजाता है, तैसे लक्ष्मीकी प्राप्ति हुए गुणका अभाव होता है, अरु गर्वकी उत्पत्ति होती है. हे मुनीश्वर ! जो शूरमा होके अपने मुखते अपनी बडाई न कहै, सो दुर्लभ है. अरु समर्थ होय किसीकी अवज्ञा न करै, सबमें समबुद्धि राखै सो दुर्लभ है. तैसे लक्ष्मीवान् होकर शुभ गुण संयुक्त होय सोभी दुर्लभहै. हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी जो सर्प है, तिसको बढाने का स्थान लक्ष्मी रूपी दूध है, सो पीवत पवन रूपी भोगका आहार करत कदाचित् अघात नहीं. अरु महा मोहरूप उन्मत्त हस्ती है, तिसको फिरने का स्थान पर्वतकी अटवी रूपी लक्ष्मी है. अरु गुण रूप जो सूर्यमुखी कमल है, तिसकी लक्ष्मी रात्रि है, अरु भोग रूपी चंद्रमुखी कमल है तिसका लक्ष्मी चंद्रमा है. अरु वैराग्य रूप जो कमलिनी है, तिसके नाशकरनेहारी लक्ष्मी बर्फ है. अरु ज्ञानरूपी जो चंद्रमा है तिसका आच्छादन करनेहारी लक्ष्मी राहु है. अरु मोहरूपी जो उलूक है तिसकी यह रात्रि है. अरु दुःखरूपी जो बिजुरी है तिसको लक्ष्मी आकाश है. अरु तृष्णारूपी जो लता है, तिसको बढावनहारी लक्ष्मी मेघ है, अरु तृष्णारूप जो तरंग हैं, तिनकी लक्ष्मी समुद्र है. अरु भोगरूपी पिशाच है, तिसका लक्ष्मी स्थान है. अरु तृष्णारूपी भवँरको लक्ष्मी कमलिनी है. जन्मके दुःख रूप जलको यह लक्ष्मी ताल है. हे मुनीश्वर ! देखनेमात्रको यह सुंदर लगती है अरु दुःखका कारण है. जैसे खड्गकी धारा देखने मात्रको सुंदर होती है. अरु परश कियेते नाश करती है, तैसी यह लक्ष्मी है. अरु विचाररूपी मेघका नाश करनेमें लक्ष्मी वायु है. हेमुनीश्वर ! यह मैंने विचारकर देखाहै, इसमें सुख कछूहू नहीं. अरु संतोषरूपी मेघका नाश करनहारा यह शरत्कालहै. अरु इस मनुष्यमें शुभ गुण तबलग दृष्टि आवै, जबलग लक्ष्मीकी प्राप्ति नहीं भई. जब लक्ष्मी की प्राप्ति भई, तब गुण नाश पाते हैं. हे मुनीश्वर ! लक्ष्मी ऐसी दुःखदायक जानकर इसकी इच्छा मैंनेत्यागदीनी है. यह भोग मिथ्या रूपहै. जैसे बिजुरी प्रगट हो य छिप जाती है. तैसे यह लक्ष्मीहू प्रगट होय छिप जातीहै. जैसे जलहै. सो हिमहै, तैसे लक्ष्मीजीकी ज्योति है, सो मूर्ख जडके आश्रयते है. इस्को छलरूपजानकर मैंने त्याग किया है. ॥ इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्यप्रकरणे लक्ष्मी तिरस्कार वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः॥ ८ ॥

रामोवाच, हे मुनीश्वर ! जो वाको देखकर प्रसन्न होता है. सो जैसे पत्रके ऊपर जलकी बूंद नहीं रहती है तैसे लक्ष्मी क्षणभंग है जैसे जलके तरंग होयके नाश पाता है, तैसे लक्ष्मी होयके नाश पाती है. हे मनीश्वर ! पवनको रोकना कठिन है सोभी कोऊ रोकर है; अरु आकाशका चूरन करना अति कठिन है, सो भी कोऊ चूरन करडारै; अरु विजली को रोकना अति काठिन है, सोभी कोऊ रोकलेवे, परन्तु लक्ष्मी पायके कोई स्थिर होवे सो नहीं जैसे शशाके सींग सो कोऊ मार नहीं सकता; अरु आरसीके ऊपर जैसे मोती नहीं ठहरता है. जैसे तरंगकी गांठ नहीं परत है. तैसे लक्ष्मीहू स्थिर नहीं रहती है. लक्ष्मी विजुलीकी चमक जैसी है, तैसे होतीहू है अरु मिट भी जाती है, अरु लक्ष्मी पायके आपको अमर हुआ चाहै सो महामूर्ख जानना. अरु लक्ष्मीको पायकर जो भोग की वांछा करत है सो महाआपदाका पात्र है, तिनको जीनेते मरना श्रेष्ठ है. जीनेकी आशा मूर्ख करतेहैं, सो अपने नाशके निमित्त करते हैं. जैसे स्त्री जो गर्भकी इच्छा करती है, सो अपने नाशके निमित्त करती है. अरु जो ज्ञानवान् पुरुष हैं, जिनकी परमपदमें स्थिति है, अरु तिसकर तृप्ति पायेहैं, तिनका जीना सुखके निमित्तहै. तिनके जीनेते औरकाकार्य्यभी सिद्ध होजाताहै. तिनका जीना चिंतामणिकी नाईं श्रेष्ठ है.अरु जिनको सदा भोगकी इच्छा रहती है, और आत्मपदते विमुख हैं. तिनका जीना किसी सुखके निमित्त नहीं है. वह मनुष्य नहीं, गर्दभ है, अरु जैसे वृक्ष, पक्षी, पशुका जीवनाहै, तैसे तिसका भी जीवना है, हे मुनीश्वर ! जो पुरुष शास्त्र पढा है, अरु पाने योग्य पद नहीं पाया. तव शास्त्र उसको भाररूप है जैसे औरका भार होता है, तैसे पढनेकाभी भारहै. अरु पढके विचार चर्चा करता है, और तिसके सारको नहीं गृहण करता, तो यह विचार चर्चाहू भार है. हे मुनीश्वर ! मन जो है, सो आकाशरूपहै, सो मनमें जो शांति न आई, तो मनहू उसको भारहै. अरु जो मनुष्य शरीरको पाया है उसका अभिमान नहीं त्यागता है तो यहशरीरभी उसको भारहै. यह शरीरका जीवना तवहीं श्रेष्ठहै, जव आत्मपदको पावे, अन्यथाउसका जीना व्यर्थ है. और आत्मपदकीप्राप्ति अभ्याससेहोती है. जैसे जल पृथ्वीके खोदते निकसताहै तैसे अभ्यास कर आत्मपदकी प्राप्ति होती है.

अरु जो आत्मपदते विमुखहोय, आशाकी फांसी में फँसे हैं सो संसारमें भटकते रहते हैं. हे मुनीश्वर! संसारके तरंग अनेक कालसों उत्पन्न होय नष्टहोय जातेहैं, तैसे यह लक्ष्मीहू क्षणभंगहै, इसको पायके जो अभिमान करते हैं सो मूर्ख हैं जैसे बिल्ली चूहाको पकड़नेके लिये परी रहती है, तैसे लक्ष्मी उनको नरकमें डारनेके लिये घरमें परी रहती है. जैसे अंजलीमें जल नहीं ठहरता, तैसे लक्ष्मी चली जाती है, ऐसी क्षणभंग लक्ष्मी अरु शरीरको पायकर जो भोगकी तृष्णा करते हैं, सो महामूर्ख हैं सो मृत्युके मुखमें परे हुए जीनेकी आशा करते हैं. जैसे सर्पके मुखमें मेढक पडता है, सो मच्छरको खानेकी इच्छा करता है, याते सो महामूर्ख है, तैसे यह पुरुष मृत्युके मुखमें परा हुआ भोगकी वांछा करता है, सो महामूर्ख है. अरु युवा अवस्था नदीके प्रवाहकी नाईं चली जाती है, बहुरि वृद्धावस्था प्राप्त होती है, तामें महादुःख प्रगट होते हैं, अरु शरीर जर्जर होय जाता है; फिर मरता है. इक क्षणहू मृत्यु इनको बिसारता नहीं है, सदाई देखत रहताहै, जैसे महाकामी पुरुषको सुंदर स्त्री मिलती है, तब उसको देखनेका त्याग नहीं करता, तैसे मृत्यु मनुष्यको देखे विना नहीं रहता है. हे मुनीश्वर! मूर्ख पुरुषका जीना दुःखके निमित्त है. जैसे वृद्ध मनुष्यका जीवना दुःखका कारण है, तैसे अज्ञानीका जीवना दुःखका कारण है. उसको बहुत जीवनेते मरना श्रेष्ठहै. जिस पुरुषने मनुष्य शरीर पायकर आत्मपदपानेका यत्न नहीं किया तिसने आपई अपना नाश किया है; सो आत्महत्यारा है. हे मुनीश्वर! यह माया बहुत सुंदर भासती है अरु आखिर नाशको पाती है. जैसे वृक्षको अंतरते घुण खाय जाता है अरु बाहरते बहुत सुंदर दीखता है; तैसे यह पुरुष बाहरते सुंदर दृष्टि आता है, अरु अंतरते इसको तृष्णा खाय जाती है. जो पदार्थको सत्य अरु सुखरूप जानकर सुखके निमित्त आश्रय करता है, सो सुखी नहीं होता है. जैसे नदीमें सर्पको पकरके पार उतरा चाहै, सो पार नहीं उतरता है, वह मूर्खता करके डूबेइगा; तैसे जो संसारके पदार्थको सुखरूप जानकर आश्रय करता है, सो सुख नहीं पाता संसारसमुद्रमेंही डूबजाता है. हे मुनीश्वर! यह संसार इंद्रधनुषकी नाईं है. जैसे इंद्र धनुष बहुत रंगका दृष्टिमें आताहै, अरु तिसते अर्थ सिद्धि कछु नहीं होती है; तैसे यह संसार भ्रम

मात्र है. इसमें सुखकी इच्छा रखनी व्यर्थ है. इस प्रकार जगत्को मैंने अस्तरूप जानकर निर्वासना होनेकी इच्छा करी है. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे संसारसुख निषेधवर्णनं नाम नवमः सर्गः ॥ ९ ॥ श्रीरामउवाच, हे मुनीश्वर! यह जो अहंकार उदय हुआ सो अज्ञानते महादुष्ट है. अरु यही परमशत्रु है. इसने मेरेको भार प्राप्त किया है अरु मिथ्या जेते कछु दुःख हैं तिन सबकी खानि अहंकार है जबलग अहंकार है, तबलग पीडाकी उत्पत्तिका अभाव कदाचित् नहीं होता है. हे मुनीश्वर! जो कछु मैंने अहंकारसों भजन किया अरु पुण्य किया है, अरु जो लिया दिया है,और कछु किया है, सो सब व्यर्थ है. इसकर परमार्थकी सिद्धि कछु नहीं है. जैसे राखमें आहुति धरी व्यर्थ होजातीहै तैसे जानत हौं. अरु जेते कछु दुःख हैं तिनका बीज अहंकार है, इसका नाश होवे. तब कल्याण होवे. ताते तुम इसका उपाय मुझको कहो, जिसकर अहंकार निवृत्त होवे.हे मुनीश्वर! जो वस्तु सत्य है तिसका त्याग करनेमें दुःख होजाताहै.अरु जो वस्तु नाशवान् अरु भ्रमकरके दिखती है, तिसके त्याग करनेते आनंदहै। अरु शांति रूप जो चंद्रमाहै तिसको आच्छादन करनेका अहंकार रूपी राहुहै. जब राहु चंद्रमाका ग्रहण करताहै, तब उसकी शीतलता अरु प्रकाश ढपजाता है तैसे जब अहंकार उपजताहै, तब समता ढप जाती है. जब अहंकाररूपी मेघ गर्जके बरसता है तब तृष्णारूपी कटकमंजरी बढ जाती है, सो कदाचित् घटती नहीं जब अहंकारका नाश होवे. तब तृष्णाका अभाव होवे. जैसे जबलग मेघहै तबलग बिजुरी है. जब विवेकरूपी पवन चलै, तब अहंकाररूपी मेघका अभाव होयके बिजुरी नाश पाती है. जैसे जब लग तेल अरु बातीहै, तब लग दीपका प्रकाशहै; जब तेल बातीका नाश होताहै, तब दीपका प्रकाशभी नाश पाता है तैसे जब अहंकारका नाश होवे, तब तृष्णाका भी नाश होताहै. हे मुनीश्वर! परमदुःखका कारण अहंकारहै. जब अहंकारका नाश होवे, तब दुःखका भी नाश होजाय. हे मुनीश्वर! यह जो मैं रामहों सो नहीं, अरु इच्छा भी कछु नहीं. काहेते जो मैं नहीं तो इच्छा किसको होवे. अरु इच्छा होइ तो यही होइ जो अहंकारके रहित पदकी प्राप्ति होवे. जैसे जनींद्रको अहंकारका उत्थान नहीं हुआ,

तैसा मैं होऊं, ऐसा मुझको इच्छाहै. हे मुनीश्वर! जैसे कमलको बर्फ नाश करताहै, तैसे अहंकार ज्ञानका नाश करताहै. जैसे पारधी जालसों पक्षीको बंधन करताहै, तिसपर पक्षी दीन होजाते हैं, तैसे अहंकाररूपी पारधीने तृष्णारूपी जाल डारके जीवको बंधन कियाहै, तिसकर महादीन होगयाहै. जैसे पक्षी अन्नके कनको सुखरूप जानकर चुगनेको आताहै, फिर चुगते फिरते जालमें बँध जाताहै, तिस बंधनकर दीन होजाताहै, तैसे यह पुरुष विषयभोगकी इच्छा कियेते तृष्णारूपी जालमें बंध होय महादीन हो जाताहै. ताते हे मुनीश्वर! मुझको सोई उपाय कहो जिसकर अहंकारका नाश होवे. जब अहंकार का नाश होवेगा तब मैं परमसुखी होऊंगा जैसे विंध्याचल पर्वतके आश्रयते उन्मत्त हस्ती पडे गर्जतेहैं तैसेअहंकाररूपी जो विंध्याचल पर्वतहै, तिसके आश्रयते मनरूपी उन्मत्त हस्ती नानाप्रकारके संकल्प विकल्परूपी शब्द करताहै, ताते सोई उपाय कहो जिसकर अहंकारका नाश होवे, सो अहंकार अकल्याणका मूलहै. जैसे मेघका नाश करनहाराशरत्काल है; तैसे वैराग्यका नाशकरनहारा अहंकारहै. मोहादिक विकाररूप जो सर्प हैं, तिनके रहनेको अहंकाररूपी बिलहै, अरु अहंकार कामीपुरुषकी नाईं है जैसे कामी पुरुष कामको भुगतताहै अरु फूलकी माला गरेमें डारके प्रसन्न होताहै, तैसे तृष्णारूपी तागा है; अरु मनुष्यरूपी फूलके मनके हैं सो तृष्णारूपी तागेके साथ पिरोयेहैं सो अहंकाररूपी कामीपुरुष गरेमें डारताहै अरु प्रसन्न होताहै. हे मुनीश्वर! आत्मारूपी सूर्य्य है, तिसका आवरण करनहारा मेघरूपी अहंकारहै, जब ज्ञानरूपी सूर्यउदयका काल आवे तब अहंकाररूपी बादरका नाश हो जाताहै. अरु तृष्णारूपी तुषारका भी नाश होवे. हे मुनीश्वर! यह निश्चय कर मैंने देखाहै, कि जहां अहंकार है तहां सब आपदा आय प्राप्त होतीहैं जैसे समुद्रमें सब नदी आयके प्राप्त होती हैं; तैसे अहंकारमें सब आपदाकी प्राप्तिहै. ताते सोई उपायकहो जिसकर अहंकारका नाश होवे. ॥ इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्यप्रकरणे अहंकार दुराशा वर्णनं नाम दशमः सर्गः ॥ १० ॥ श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! यह जो मेरा चित्त है सो काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णादिक दुःख कर जर्जरी भाव होगयाहै. अरु महापुरुषके जो

गुण वैराग्य, विचार, धैर्य, संतोष, तिनकी ओर नहीं जाता; सर्वदा विषयकी गिरदमें उड़ता है. जैसे मोरका पंख पवनके लागे ठहरता नहीं, तैसे यह चित्त सर्वदा भटकता फिरताहै, अरु इसको लाभ कछु प्राप्त नहीं होता. जैसे श्वान द्वार द्वारपै भटकता फिरता है, तैसे यह चित्त पदार्थके पावने निमित्त भटकता फिरता है, और प्राप्त कछु नहीं होता. अरु जो कछु प्राप्त होताहै तिसकरि तृप्त नहीं होता. अंतर तृष्णा रही आवत है. जैसे पिटारेमें जल भरिये, तासों वह पूर्णनहीं होता, क्योंकि छिद्रते जल निकस जाताहै; अरु पिटारा शून्यका शून्य रहता है. तैसे चित्तको भोग पदार्थप्राप्त होता है, तासों संतुष्ट नहीं होता है. सदा तृष्णाई रहत है. हे मुनीश्वर ! यह चित्तरूपी महामोहका समुद्र है,तिसमें तृष्णारूपी तरंग उठतेई रहत हैं; सो कदाचित् स्थिर नहीं होते, जैसे समुद्रमें तीक्ष्ण वेगकर तरंग होता है, सो तटके वृक्षको लागता है, अरु जलमें वहजातेहैं; तैसे चित्तरूपी समुद्रमें विषय बहिजाते हैं, वासनारूपी तरंगके वेगसों मेरा जो अचल स्वभाव था, सो चलायमान् होगया है सो इस चित्तासों मैं महादीन हुआ हूँ जैसे जालमें परा पक्षी दीन होजाता है तैसे चित्तसे धीवरकी वासनारूपी जालमें बँधा हुआ मैं दीन होगया हूं, जैसे मृगके समूहते भूली मृगी अकेली खेदवान होती है, तैसे मैं आत्मपदते भूला हुआ चित्तमें खेदवान हुआ हूँ. हे मुनीश्वर ! यह चित्त सदा क्षोभ वान रहता है, कदाचित् स्थिर नहीं होता, जैसे क्षीरसमुद्र मंदराचल करके क्षोभवान हुआ था, तैसे यह चित्त संकल्प विकल्प कर खेद पावत है,जैसे पिंजरेमें आया सिंह पिंजरेमें फिरता है, तैसे वासनामें आया चित्त स्थिर नहीं होता. हे मुनीश्वर ! इस चित्तने मेरेको दूरते दूर डारा है, जैसे भारी पवनसों सूखा तृण दूरते दूर जाय पडताहै तैसे चित्तरूपी पवनने मुझको आत्मानंदते दूर डाराहै. जैसे सूखे तृणको अग्नि जरावत है, तैसे मोको चित्त जारता है. जैसे अग्निते धूम निकलता है, तैसे चित्तरूपी अग्निते तृष्णा रूपी धूम निकलता है, तिसकर मैं परम दुःख पावत हों, यह चित्त हंस नहीं बनता है. जैसे राजहंस दूध अरु जल मिलेको भिन्न भिन्न करता है, तिसकीनाई मैं अनात्मामें अज्ञानकरके एकसा होगया हूँ; तिसको भिन्न नहीं करसकता हूँ; जब आत्मपद पानेका यत्न करता हूँ,

तब अज्ञान प्राप्त करने नहीं देता. जैसे नदीका प्रवाह समुद्रमें जाता है, तिसको पहाड़ सूधे नहीं चलने देता है. अरु समुद्रकी ओर जाने नहीं देता है. तैसे मुझको चित्त आत्माकी ओरते रोकता है; सो परमशत्रुहै. हे मुनीश्वर ! ताते सोई उपाय कहो, जिसकर चित्त रूपी शत्रुका नाश होवे. यह तृष्णा मेरा भोजन करती रहती है; जैसे मृतक शरीरको श्वान अरु श्वाननी भोजन करते हैं, तैसे आत्माके ज्ञानाविन मैं मृतक समान हों. जैसे बालक अपनी परछाहींको वैताल मानकर भयको पाता है. सो जब विचार करके समर्थ होता है, तब वैतालका भय पातानहीं तैसेचित्तरूपी वैतालने मेरा स्पर्श किया है; तिसकरके मैं भयको पाता हूँ, ताते तुम सोई उपाय कहो; जिससे चित्तरूपी वैताल नष्ट होय जावे. हे मुनीश्वर ! अज्ञान करके मिथ्या वैताल चित्तमें दृढहोरहाहै, तिसके नाश करनेको मैं समर्थ नहीं हो सकता हों अग्निमें बैठना सो भी मैं सुगम जानता हों, और चलके बडे पर्वतकेऊपर जाना, सो भी मैं सुगम मानता हों. अरु बडे वज्रका चूरन करना यह भी मैं सुगम मानता हों, परन्तु चित्तका जीतना महा कठिन है, ऐसा मैं जानता हों. चित्त सदाई चलायमान स्वभाववाला है. जैसे थंभके साथ बांधाहुआ वानर कदाचित् स्थिर होय नहीं बैठता, तैसे चित्त वासनाके मारे स्थिर कदाचित् नहीं होता है. हे मुनीश्वर ! बडा समुद्रका पान करजाना सुगम है, अरु अग्निकाभक्षण करनाभी सुगम है, और सुमेरुका उल्लंघन करना सोभी सुगम है, परन्तु चित्तको जीतना महाकठिन है, जो सदा चलरूप है. जैसे समुद्र अपना द्रवस्वभावका कदाचित् नहीं त्याग करता, अरु महाद्रवीभूत रहता है, तिसकर नानाप्रकारके तरंग होते हैं,तैसे चित्तभी चंचलस्वभावको कभी नहीं त्यागता है. नानाप्रकारकी वासना उपजती रहतीहैं, अरु बालककी नाईं चंचलहै, सदा विषयकी ओर धावताहै कहूं पदार्थकी प्राप्ति होती है, परन्तु अंतरते सदा चंचल रहता है, जैसे सूर्यके उदय हुए ते दिन होताहै. अरु अस्त हुएते नाशपाताहै, तैसे चित्तके उदयहुए त्रिलोकीकी उत्पत्तिहै, अरु चित्तके लीन हुएते लीन होजाती है. हे मुनीश्वर ! किसी समुद्रमें जल गंभीरहै, तिसमें बडेसर्प रहते हैं, सो जब कोऊ समुद्रमें प्रवेश करै, तब वे सर्प उनको काटतेहैं, तिनको विष चढ जाताहै, तिस

करके बडादुःख पाताहै, सो दृष्टांत सुनिये चित्तरूपी समुद्रहै अरु वासनारूपी जलहै; तिसमें छलरूपी सर्प है, जब जीव उसके
निकट जाताहै, तब भोगरूपी सर्प उसको काटताहै तब तृष्णारूपी विष पसरताहै, तिसकर मरता है. हे मुनीश्वर! जो
भोगको सुखरूप जानकर चित्त दौडताहै, सो भोग दुःखरूपहै, जैसे तृणसों खाई आच्छादित होय जातीहै. तिसको देखकर
मूर्ख मृग खानेको दौरता है तब खाईमें गिर पडताहै अरु दुःख पाताहै तैसे चित्तरूपी मृग भोगका सुख जानकर भोगनेको लगताहै.
तब तृष्णारूपी खाईमें गिर पडताहै. अरु जन्मान्तर दुःखको भोगताहै. हे मुनीश्वर! यह चित्त कबहू बडा गंभीरहो बैठताहै, और
जब भोगको देखताहै,तब तिनकी ओर चीलकी नाई लाग गिर पडताहै जैसे गीदड पक्षी आकाशमें चढा फिरताहै, सो जब पृथ्वीपर
मांसको देखताहै, तब तहांते आय पृथ्वीपर बैठताहै, अरु मांसको लेताहै, तैसे यह चित्त कभी निराला उडताहै, जब विषय देखे
तब आसक्ति पाय विषयमें गिर जाताहै, अरु यह चित्त वासनारूपी शय्यामें सोता रहताहै, अरु आत्मपदमें जागता नहीं इस चित्तकी
जालमें मैं पकराया हों सो कैसा जालहै तामें वासनारूपी सूत्रहै, अरु संसारकी सत्यतारूपी ग्रंथि है अरु भोगरूपी तिसमें चूनहै.
इसको देखके मैं फँसाहो, कबहूं पातालमें, कबहूं आकाशमें वासनारूपी जेवरीकर घटीयंत्रकी नाई बँधाहों, ताते हे मुनीश्वर! तुम
सोई उपाय कहो जिसकर चित्तरूपी शत्रुको जीतों. अब मुझको किसी भोगकी इच्छा नहीं अरु जगत्‌की लक्ष्मी मुझको विरस
भासती है, जैसे चंद्रमा बादरकी इच्छा नहीं करता, अरु चतुर्मासमें आच्छादित होय जाता है, ताते मैं भोगकी इच्छा नहीं करता
और जगत्‌की लक्ष्मीको मैं नहीं चाहता, अरु मेरा चित्त है सो परमशत्रुहै. हे मुनीश्वर! महापुरुष जो जीतनेका यत्न करते हैं,
सो जब चित्तको जीतैं तब परम पदको पावैं ताते मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर मनको जीतों दुःख इसके आश्रयते रहते हैं,
जैसे पर्वतपर वन है सो पर्वतके आश्रयते रहता है. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे चित्तदौरात्म्य वर्णनं नाम एकादशः
सर्गः ॥ ११ ॥ श्रीरामउवाच हे ब्रह्मन्! चैतन्यरूपी आकाशमें जो तृष्णारूपी रात्रि आई है तामें काम, क्रोध, लोभ, मोहादिक

LIBRARY. SRINAGAR.

घुवड विचरतेहैं; जब ज्ञानरूप सूर्य उदय होवे तब तृष्णारूपी रात्रिका अभाव होयजावे. जब रात्रि नष्ट भई, तब मोहादिक उलूकभी नष्ट होजाते हैं जब सूर्यका उदय होताहै, तब बर्फ उष्ण होय पिघल जाताहै तैसे संतोषरूपी रसको तृष्णारूपी उष्णता सुखातीहै. बहुरि तृष्णा कैसीहै जैसे शून्य वनमें पिशाचनी अपने परिवारसहित फिरती रहती है, अरु प्रसन्न होतीहै सो वन अरु पिशाच कैसाहै, आत्मपदते शून्य जो चित्त सो भयानक शून्यवनहै तिसमें तृष्णारूपी पिशाचनी है, अरु मोहादिक उसका परिवार है, उनको साथ लेकर फिरती है. हे मुनीश्वर! चित्तरूपी पर्वतहै; तिसके आश्रयते तृष्णारूपी नदीका प्रवाह चलताहै अरु नानाप्रकारके संकल्परूपी तरंगको पसारतेहैं जैसे मेघको देखकर मोर प्रसन्न होताहै; तैसे तृष्णारूपी मोर भोगरूपी मेघको देखके प्रसन्न होताहै, ताते परमदुःखका मूल तृष्णाहै. जब मैं किसी संतोषादि गुणका आश्रयकरता हों, तब तृष्णा तिसको नाश करदेतीहै. जैसे सुंदर सारंगीको चूहा तोरडारताहै; तैसे संतोषादि गुणको तृष्णा नाश करतीहै. हे मुनीश्वर! सबते उत्कृष्ट पदमें विराजनेका मैं यत्न करता हों. तब तृष्णा विराजने नहीं देती. जैसे जालमें फँसाहुआ पक्षी आकाशमें उडने का यत्न करता है. परंतु उड नहीं सकता है. तैसे मैं अनात्मपदमेंते आत्मपदको प्राप्त नहीं हो सकता. स्त्री, पुत्र, अरु कुटुंबने जाल बिछायाहै. तामें फँसा हों सो निकस नहीं सकता. सो आशारूपी फांसीमें बँधा हुआ, कबहूं ऊर्ध्वको जाता हों, कबहूं अधःपात होता हों, सो घटीयंत्रकी नाई मेरीगति है. जैसे इंद्रका धनुष मेघमें मलीन होता है. सो वडा अरु बहुत रंगोंसों भरा है. परंतु मध्यते शून्यहै. तैसे तृष्णा मलिन अंतःकरणमें होती है सो वडी है. अरु गुण रूपी रंगते रँगी है. देखने मात्रको सुंदर है; परंतु इससे कार्य्य सिद्धि कछु नहीं होती. हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी मेघ है; तिससे दुःखरूपीबुंद निकसते हैं. अरु तृष्णारूपी काली नागनी है; उसका स्पर्श तो कोमल है, परंतु विष करके पूर्ण है तिसके डसेते मृतक होजाता है. अरु तृष्णारूपी बादर है, सो आत्मरूपी सूर्यके आगे आवरण करताहै. जब ज्ञानरूपीपवन निकसे तब तृष्णारूपीबादरका नाश होवे अरु आत्मपदका साक्षात्कार होवै, अरु अज्ञानरूपी कमलको संकोच

करनहारी तृष्णारूपी निशा है, अरु तृष्णारूपी महा भयानक कालीरात्रिहै, जिसकर वडे धीरजवान भी भयभीत हैं, अरु नयनवारेको भी अंध कर डारती है, जब यह आवती है, तव वैराग्य अरु अभ्यासरूपी नेत्रको अंध कर डारती है, अर्थ यह कि सत्य असत्यको विचारने नहीं देती. हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी डाकिनी है, सो संतोषादिक पुत्रोंको मार डारती है, अरु तृष्णारूपी कंदरा है तिसमें मोहरूपी उन्मत्त हस्ती गर्जते हैं अरु तृष्णारूपी समुद्र है, तिसमें आपदा रूपी नदी आय प्रवेश करतीहैं ताते सोई उपाय मुझको कहो, जिसकर तृष्णारूपी दुःखते छूटौं. हे मुनीश्वर ! अग्निसों भी ऐसा दुःख नहीं होता अरु इंद्रके वज्रकर भी ऐसा दुःख नहींहोता, जैसे दुःख तृष्णाकर होता है. सो तृष्णाके प्रहारसों घायल वडेदुःखको पाता है, अरु तृष्णारूपी दीपकमें परा जरता है, तिसमें संतोषादिक पतंगे जर जाते हैं. जैसे जलमें मछली रहतीहै, सो जलमें कंकरी, रेती आदि को देख, मांस जानकर वह मुखमें लेती है, ताते उसका अर्थ सिद्धि कछु नहीं होता तैसे तृष्णा भी जा कछु पदार्थ देखती है, तिसके पास उडती है अरु तृप्ति किसी कर नहीं होती, अरु तृष्णारूपी एक पंखनीहै, सो सव कहूं उडजाती है, अरु स्थिर कवहूं नहीं होती, तैसे तृष्णाभी कवहूं किसी पदार्थको, कवहूं किसीको गृहणकरतीहै, परंतु स्थिर कवहूं नहीं होती, अरु तृष्णारूपी वानर है, सो कवहूं किसी वृक्षपर, कवहूं किसीके ऊपर जाता है, स्थिर कवहूं नहीं होता है. जो पदार्थ नहीं प्राप्त होता तिसके निमित्त यत्न करता है, तैसे तृष्णाहूं नाना प्रकारके पदार्थनका गृहण करती है. अरु भोगकर तृप्त कदाचित् नहीं होती. जैसे घृतकी आहुतिकर अग्नि तृप्ति नहीं पावे, तैसे जो पदार्थ प्राप्ति योग्य नहीं है तिसके ओर भी तृष्णा दौरती है, शांतिको नहीं पाती है. हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी उन्मत्त नदी है, तिसमें जो वहाया पुरुष, ताको कहांका कहां ले जाती है, कवहूं तो पहारकी वाजूमें लेजाय. कवहूं दिशामें लेजाय, जैसे इसको लिये फिरती है, तैसे तृष्णारूपी नदी है, सो मुझको लिये फिरती है,अरु तृष्णारूपीनदी है. इसमें वासनारूपी अनेक तरंग उठते हैं, कदाचित् मिटतेनहीं हैं अरु तृष्णारूपी नटनी है, अरु जगतरूपी अखाडा तिसने

लगाया है, तिसको शिर ऊंचा कर देखती है, अरु मूर्ख वडे प्रसन्न होते हैं, जैसे सूर्यके उदय हुए सूर्यमुखी कमल खिलके ऊंचा आताहै, तैसे मूर्ख तृष्णाको देखकर प्रसन्न होतेहैं, अरु तृष्णारूपी वृद्ध स्त्री है; जो पुरुष इसका त्याग करताहै, तब वाके पाछे लगी फिरतीहै, कबहूं इसका त्याग नहीं करती,अरु तृष्णारूपी डोरहै,तिसके साथ जीवरूपी पशु बांधे हुएहैं; तिसकर भ्रमते फिरतेहैं अरु तृष्णा दुष्टनीहै; जब शुभ गुणको देखे, तब तिनको मार डारतीहै, तिसके संयोगते मैं दीन होजाता हूँ, जैसे पपैया मेघको देखकर प्रसन्न होता है अरु बूंद ग्रहण करने लगता है; और मेघको जब पवन ले जाता है, तब पपैया दीन होजाता है,तैसे तृष्णा शुभगुणका नाश करती है तब मैं दीन हो जाता हों. हे मुनीश्वर ! तृष्णाने मुझको दूरते दूर डारा है जैसे सूखे तृणको पवन दूरते दूर डारताहै; तैसे तृष्णा रूपी पवनने मुझको दूरते दूर डारा है आत्मपदतेदूर पराहों हे मुनीश्वर ! जैसे भौंरा कमलके ऊपर जाता कबहूं नीचे बैठता है, कबहूं आसपास फिरता है; अरु स्थिर नहीं होता; तैसे तृष्णारूपी भौंरा संसाररूपी कमलके नीचे ऊपर फिरता है, कदाचित् ठहरता नहीं है, जैसे मोतीका बांस होता है, तिसते अनेक मोती निकसते हैं, तैसे तृष्णारूपी बांसते जगत्रूपी अनेक मोती निकसते हैं, तिसकर लोभीका मन पूर्ण नहीं होता है, तैसे तृष्णाते मन पूर्ण नहीं होता, दुःखरूपी रत्नका तृष्णारूपी डब्बा है, तिसमें अनेक दुःख रहते हैं ताते सोई उपाय कहो, जिसकर तृष्णा निवृत्त होवे. यह तृष्णा वैराग्यसों निवृत्ति पाती है, और किसी उपायकर निवृत्ति नहीं होती है, जैसे अंधकारका नाश प्रकाश कर होता है, और किसी उपाय कर नहीं होता; तैसे तृष्णाका नाश और उपायसों नहीं है,अरु तृष्णारूपी हल है, सो गुणरूपी पृथ्वीको खोद डारता है, अरुतृष्णारूपी लताहै, सो गुणरूपी रसको पीती है, अरु तृष्णारूपी धूर है, सो अंतःकरणरूपी जल में उछलके मलीन करती है. हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी नदी है, सो वर्षाकालमें बढती है, फिर घट जाती है, तैसे जब इष्ट भोगरूपी जल प्राप्त होता है, तब हर्षकर बढती है, जब भोगरूपी जल घट जाता है, तब सूखके क्षीण होजाती है हे मुनीश्वर ! इस

तृष्णाने मुझको दीन किया है, जैसे सूखे तृणको पवन उडाता है; तैसे मुझको उडाती है ताते सोई उपाय तुम कहो, जिसकर तृष्णाका नाश होवे, अरु आत्मपदकीप्राप्ति होवे, अरु दुःख नष्ट होवे, अरु आनंद होवे. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे तृष्णा गारुडीवर्णनं नाम द्वादशः सर्गः ॥ १२ ॥ ॥ श्रीरामउवाच, हे मुनीश्वर ! यह जो अमंगलरूप शरीर जगत्में उत्पत्ति पाया है, सो वडा अभाग्यरूप है सदा विकारवान्, मांसमज्जा कर पूर्ण है; सदा अपवित्र है, इस करके मैं कछु अर्थ सिद्धि होना नहीं देखता, ताते तिस विकाररूप शरीरकी इच्छा मैं नहीं रखता. यह शरीर न अज्ञ है, न तज्ञ है, अर्थ यह न जड है न चैतन्य है, जैसे अग्निके संयोग कर लोहा अग्निवत् होता है; सो जलाता भी है; परंतु आप नहीं जलता, तैसे यह देह न जड है, न चैतन्य है, जड इस कारणते नहींकि, इसते कार्य भी होता है, अरु चैतन्य इस कारणते नहीं कि इसको आपते ज्ञान कछु नहीं होता; ताते मध्यमभावमें है काहेते जो चैतन्य आत्मा इसमें व्याप रहा है, सो लोह अग्निकी नाईं जानत हों, अरु आपते अपवित्ररूप अस्थि, मांस, रुधिर, मूत्र, विष्ठा कारि पूर्ण अरु विकारवान्, ऐसी जो देह है सो दुःखका स्थान है, अरु इष्टके पायेते हर्षवान् होती है, अरु अनिष्टके पाये ते शोकवान् होतीहै, ताते ऐसे शरीरकी मुझको इच्छानहीं. यह अज्ञान कर उपजताहै. हे मुनीश्वर ! ऐसे अमंगलरूपी शरीरमें जो अहंपना फुरता है, सो दुःखका कारण है, यह संसारमें स्थित होकर नाना प्रकारके शब्दकरता है अरु तूष्णी कवहूं नहीं धारता है, अरु अहंकाररूपी विलाडा देहमें रहा हुआ; अहं, अहं, करता है, चुप कदाचित् नहीं रहता है, हेमुनीश्वर ! जो किसीके निमित्त शब्द होवे सो सुंदर है; अन्यथा शब्द व्यर्थ है. जैसे जयके निमित्त ढोलका शब्द सुन्दर होता है; तैसे अहंकारते रहित जो पद है; सो शोभनीकहै; और सब व्यर्थ है. अरु शरीररूपी नौका भोगरूपी रेतीमें परीहै इसको पार होना कठिन है. जब वैराग्यरूपी जल बढे अरु प्रवाह होवे; अरु अभ्यासरूपी पतवारीका बल होवे तब संसारके पाररूपी किनारेपै पहुँचे. अरु शरीररूपी वेडाहै, अरु संसाररूपी समुद्र और तृष्णारूपी जलमें पराहै, अरु बडा

प्रवाहहै. अरु भोगरूपी तिसमें मगरहै, सो शरीररूपीवेडाको पार लगने नहीं देता. जब शरीररूपी वेडाके साथ वैराग्यरूपी वायु लगै, अरु अभ्यासरूपी पतवारीका बललगै, तब शरीररूपी वेडा पारको पावे, हे मुनीश्वर! जिस पुरुषने ऐसे वेडेको उपायकर आपको संसार-समुद्रते पार कियाहै, सो सुखी भया है, अरु जिसने नहीं किया, सो परम आपदाको प्राप्त होताहै सो इस वेड़ेकर उलटे डुवेंगे जैसे वेडेमें छिद्र होवें और वामें जल प्रवेश कर आवे, तब वह डूब जाताहै, अरु तिसमें जो मच्छहै सो खाइजाताहै, सो इहां, शरीररूपी वेडका तृष्णा-रूपी छिद्रहै, तिस करके इहां संसार समुद्रमें डूब जाताहै अरु भोगरूपी मगर इसको खाताहै. अरु यह आश्चर्यहै कि, वेडा अपने निकटनहीं भासता है, अरु मनुष्य सो मूर्खता करके आपको मानता है, अरु तृष्णारूपी छिद्र करके दुःखपाताहै. अरु शरीररूपी वृक्षहै, तामें भुजारूपी शाखा हैं अरु अंगुरी इसके पत्र हैं, अरु जंघा इसका स्तंभहैं, अरु वासना इसकी जडहै. अरु सुख दुःख इसके फूलहैं, अरु तृष्णारूपी घुनहै, सो शरीररूपी वृक्षको खाता रहताहै जब इसको श्वेत फूल लगै, तब नाशका समय पाताहै कारण जो मृत्युके निकटवर्त्ती होताहै. बहुरि शरीर रूपी इसके टासहैं, अरु गिटे इसका गुंछाहैं अरु दांत फूलहैं जंघा स्तंभहैं, अरु कर्म जलकर वढजाता है, जैसे वृक्षते जल निकसताहै, सो चिकटाहै तैसे जल शरीरके द्वार निकसता रहताहै. अरु तृष्णारूपी विषते पूर्ण सर्पिनी रहती है, अरु जो कामनाके लियेइस वृक्षका आश्रय लेताहै, तव तृष्णारूपी सर्पिनी तिसको डसतीहै. तिस विषसों वह मरि जाताहै हे मुनीश्वर! ऐसा जो अमंगलरूपी शरीर वृक्षहै, तिसकी इच्छा मुझको नहीं है यहपरम दुःखका कारणहै. जब लग यह पुरुष अपने परिवारमें बँधा हुआहै तबलग मुक्ति नहीं होती; जब परिवारका त्याग करै तब मुक्ति होवे. देह, इंद्रिय, प्राण, मन, बुद्धि, इसका परिवार है इनमें जो अहंभावहै, वाका त्याग करै तब मुक्तिहोवे अन्यथा मुक्ति नहीं होती. हे मुनीश्वर! जो श्रेष्ठ पुरुषहैं, सो पवित्रही स्थानमें रहते हैं; अपवित्रमें नहीं रहते. सो अपवित्र स्थान यह देहहै इसमें रहनेवाला भी अपवित्र है, अरु अस्थिरूपी इस घरमें लकडे हैं; वामें रुधिर, मूत्र, विष्ठाका इसमें कीच लगायाहै और मांसकी कहगील करीहै. अरु अहंकाररूपी इसमें श्वपच रहताहै अरु

तृष्णारूपी श्वपचनी इसकी स्त्रीहै, अरु काम, क्रोध,मोह, लोभ इसके बेटे हैं. आंत अरु विष्ठादिककरि पूर्ण भराहुआ है ऐसा जो अपवित्र स्थान अमंगलरूप जो शरीर तिसका मैं अंगीकार नहीं करता. यह शरीर रहो चाहे मत रहो. इसके साथ मेरा अब कछु प्रयोजन नहीं. हे मुनीश्वर ! एक बडा घरहै,तिसमें बडे पशु रहतेहैं; सो धूरको उडावते हैं, सो गृहमें कोऊ जाताहै तब सींगसों मारने लगते हैं अरु धूडभी उसके ऊपर गिरती है. सो शरीररूपी बडा गृहहै, तिसमें इंद्रियरूपी पशु हैं, जब इस गृहमें पैठताहै, तब बडी आपदाको प्राप्त होताहै तात्पर्य यह जो इसमें अहंभाव करताहै, तब इंद्रियरूपी पशु सो विषयरूप सींगसों मारते हैं अरु तृष्णारूपी धूड इसको मलीन करतीहै, हे मुनीश्वर ! ऐसे शरीरको मैं अंगीकार नहीं करता. जिसमें सदा कलह पडेही रहते हैं; तिसमें ज्ञान रूपी संपदा प्रवेश नहीं होती. ऐसा जो शरीर रूपी गृह है, तिसमें तृष्णारूपी चंडी स्त्री रहती है. सो इंद्रियरूपी द्वारसों देखती रहती है, सो सदा कलपना करत रहती है; तिसकर शमदमादिरूप संपदाका प्रवेश नहीं होता. तिस घरमें एक शय्या है, जब उसके ऊपर विश्राम करता है, तब कछुक सुख पाता है; परंतु तृष्णाका जो परिवार है सो विश्राम करने नहीं देता. सो सुषुप्तिरूपी शय्या है; जब उसमें विश्राम करता है,तब कामक्रोधादिक रुदन करते हैं. अरु ए चंडी स्त्रीका जो परिवार, काम, क्रोध, लोभ,मोह, इच्छा है सो उठाय देते हैं; विश्राम करने नहीं देते हे मुनीश्वर ! ऐसा दुःखका मूल जो शरीर रूपी गृह है, तिसकी इच्छा मैंने त्याग दीनी है. यह परमदुःख देनेहारा है,इसकी इच्छा मुझको नहीं है. हे मुनीश्वर ! शरीररूपी वृक्ष है;तिसमें तृष्णारूपी कौवानी आय स्थित भई है. सो जैसे कौवानी नीच पदार्थके पास उडती है तैसे तृष्णारूपी कौवानी भोगरूपी मलिन पदार्थ के पास उड़ती है. बहुरि तृष्णा बंदरीकी नाईं शरीररूपी वृक्षको हिलाती है वृक्षको स्थिर होने नहीं देती अरु जैसे उन्मत्त हस्ती. कीचमें फँस जाता है, अरु निकस नहीं सकता, अरु खेदवान होताहै, तैसे अज्ञान रूपी मद कर उन्मत्त हुआ जीव शरीररूपी कीचमें फँसा है, सो निकस नहीं सकता है, परा दुःख पावता है. ऐसे दुःख पावनेवारा शरीर है, तिसका मैं अंगीकार नहीं करता. हे मुनीश्वर !

यह शरीर अस्थि, मांस, रुधिर करि पूर्णहै, सो अपवित्र है. जैसे हस्तीके कर्ण सदाही हिलते हैं तैसे इसको मृत्यु परा हिलाता है. कछु कालका विलंब है, परंतु मृत्यु इसका ग्रास कर लेवेगा. ताते मैं इस शरीरका, अंगीकार नहीं करता हों. यह शरीर कृतघ्न है, भोग भुगतता है, वडे ऐश्वर्यको प्राप्त करताहै, परंतु मृत्यु इसकी सखापन नहीं करताहै. जब जीवइसको छांड कर परलोकको जाता है, तब अकेलाही जाता है, और शरीरको छोड देता है, जीव इसके सुख निमित्त अनेक यत्न करताहै, परंतु संगमें सदा नहीं रहता. ऐसा जो कृतघ्न शरीर है इसका मैंने मनसों त्याग किया है; जो यह दुःख देनहाराहै. हे मुनीश्वर ! और आश्चर्य देखो,—जो वाइंका भोग करता है, तिसके साथ चलता नहीं, जैसे धूर कर मार्ग भासनेते रहजाता है, तैसे यह जीव जब चलने लगता है तव शरीरके साथ क्षोभवान होता अरु वासनारूप धूर संयुक्त चलता है; परंतु दीखता नहीं कि, कहां गया. जब परलोकको जाता है, तब बड़ा कष्ट होता है; काहेते कि, शरीरके साथ स्पर्श किया है. हे मुनीश्वर ! यह शरीर क्षणभंगर है. जैसे जलकी बूंद पत्रके ऊपर गिरती है, सो क्षणमात्र रहती है; तैसे शरीर भी क्षणभंगहै, ऐसे शरीरमें आस्था करनी सो मूर्खता है; अरु ऐसे शरीरके ऊपर उपकार करना भी दुःखके निमित्त है, सुख कछु नहीं है. और जो धनाढ्य शरीरसों वड़े भोग भुगतते हैं अरु निर्धन थोडे भोग भुगतते हैं; परंतु जरावस्था अरु मृत्यु दोनोंको होते हैं. इसमें विशेषता कछु नहीं. शरीरका उपकार करना और भोग भुगतना सो तृष्णा करके उलटा,दुःखका कारण है जैसे कोऊ नागिनी घरमें रखके उसको दूध प्यावे, सोई आखिर उसको काटके मारेगी, तैसे जीवने तृष्णारूपी नागिनीके साथ सखाई करी है, सो मारैगा, क्योंकि नाशवंत है. इसके निमित्त जो भोग भुगतनेका यत्न करना सो मूर्खता है. जैसे पवनका वेग आता है, अरु जाता है, तैसे यह शरीर नाशवंत है. इससों प्रीति करनी, सो दुःखका कारण है सब जीव इसकी अवस्थामें बांधे हुए हैं, इसका त्याग कोई विरलानेही किया है. जैसे कोई विरला मृग होता है, सो मरुथलके जलकी आस्था त्यागता है और सब परे भ्रमते हैं. हे मुनीश्वर ! विजलीका अरु दीपकका प्रकाश भी आता जाता दीखता है, परंतु इस शरीरका आदि अंत नहीं दिखता

है कि, कहांते आता है, अरु कहां जाता है. जैसे समुद्रमें बुद्बुदे उपजते हैं, अरु मिट जाते हैं, तिसकी आस्था करनेते कछु लाभ नहीं, तैसे यह शरीरकी आस्था करनी योग्य नहीं. यह अत्यंत नाशरूपहै, स्थिर कदाचित् नहीं होताहै. जैसे बिजुरी स्थिर नहीं होती तैसे शरीर भी स्थिर नहीं रहता, इसकी मैं आस्था नहीं करता इसका अभिमान मैंने त्यागा है. जैसे कोई सूखे तृणको त्याग देता है, तैसे मैंने अहंममता त्यागी है. हे मुनीश्वर! ऐसे शरीरको पुष्ट करना, सो दुःखके निमित्तहै यह शरीर किसी अर्थ आवने योग्य नहीं जलावने योग्य है. जैसे लकडी जलाये विन और काममें नहीं आती है, तैसे यह शरीरभी जड अरु गूंगा जलावनेके अर्थ है.हे मुनीश्वर! जिन पुरुषोंने काष्ठरूपी शरीरको ज्ञानाग्नि कर जलाया है, तिनका परम अर्थ सिद्ध भया है. अरु जिनने नहीं जलाया, सो परमदुःख पाया है.हे मुनीश्वर! न मैं शरीर हों, न मेराशरीर है,न इसकामैं हों,न यह मेरा है, अब मुझको कामना कोई नहीं है. मैं निराशी पुरुष हों. अरु शरीरके साथ मुझको प्रयोजन कछु नहीं है. ताते तुम सोई उपाय कहो जिसकर मैं परमपदकी प्राप्ति पाऊं. हे मुनीश्वर! जिस पुरुषने शरीरका अभिमान त्यागा है,सो परमानंद रूप है; और जिसको देहका अभिमान है, सो परम दुःखी है. जेते कछु दुःख हैं सो शरीरके संयोग करि होते हैं मान, अपमान, जरा, मृत्यु, दंभ, भ्रांति, मोह, शोक, आदि सर्व विकार देहके संयोग कर होते हैं. जिसको देहमें अभिमान है तिसको धिक्कार है. और सब आपदाभी तिसको प्राप्त होती हैं. जैसे समुद्रमें नदी आयकर प्रवेश करती हैं, तैसे देहाभिमानमें सर्व आपदा आय प्रवेश करती हैं. जिसको देहका अभिमान नहीं, सो पुरुषोंमें उत्तम है, अरु वंदना करने योग्य है, ऐसेको मेरा नमस्कार है, अरु सर्व संपदाभी तिसको प्राप्त होती हैं. जैसे मान सरोवरमें सब हंस आय रहते हैं. तैसे जहां देहाभिमान नहीं रहा, तहां सर्व संपदा आय रहती हैं. हे मुनीश्वर! जैसे अपनी छायामें बालक वैताल कल्पता है, अरु तिसकर भय पाताहै, जब इसको विचारकी प्राप्ति होती है, तब वैतालका अभाव होजाता है. तैसे अज्ञानकर मुझको अहंकाररूपी पिशाचने शरीरमें दृढ आस्था बताई है, ताते सोई उपाय कहो,

जिसकर अहंकाररूपी पिशाचका नाश होवे अरु आस्था रूपी फांसी टूटे. हे मुनीश्वर ! प्रथम जो मुझको अज्ञानकर संयोग था सो अहंकाररूपी पिशाचका था, तिससे अनंतर शरीरमें आस्था उपजीहै. जैसे वीजते प्रथम अंकुर होताहै; फिर अंकुरते वृक्ष होताहै तैसे अहंकारसे शरीरकी आस्था होतीहै. हेमुनीश्वर ! इस अहंकाररूपी पिशाचने सब जीवनको दीन किये हैं. जैसे वालकको छायामें वैताल भासताहै अरु दीनताको प्राप्त होताहै. तैसे अहंकाररूपी पिशाचने मुझको दीन किया है सो अहंकाररूपी पिशाच अविचारते सिद्ध है, अरु विचार कियेते अभावको प्राप्त होताहै जैसे प्रकाशकर अंधकार नाश होजाताहै, तैसे विचार कियेते अहंकारनाश होजाताहै. हेमुनीश्वर ! जो शरीरमें आस्था रक्खीहै, सो शरीर जलके प्रवाहकी नाईं स्थिर नहीं होता, ऐसा चलहै. जैसे विजुरीकी चमक स्थिर नहीं होती, अरु गंधर्वनगरकी आस्था व्यर्थ है, तैसे शरीरकी आस्था करनी व्यर्थ है. हेमुनीश्वर ऐसे शरीरकी आस्था करके अहंकार करते हैं, अरु जगतके पदार्थ निमित्त यत्न करते हैं. वे महामूर्ख हैं. जैसे स्वप्न मिथ्याहै, तैसे यह जगत् मिथ्याहै. तिसको सत्य जानकर जो इसका यत्न करता है सो अपने वंधनके निमित्त करताहै. जैसे घुरान गुफा वनाती है, सो अपने वंधनके निमित्तहै, अरु पतंग दीपक की इच्छा करताहै सो अपने नाशके निमित्त है तैसे अज्ञानी जो अपने देहका अभिमानकर भोगकी इच्छा करताहै; सो अपने नाशके निमित्तहै. हेमुनीश्वर ! मैंतो इस शरीरका अंगीकार नहीं करता इस शरीरका अभिमान परमदुःख देनहारा है. जिसको देह अभिमान नहीं रहा. तिसको भोगकी इच्छा भी न रहैगी. ताते मैं निराशहों, अरु परमपदकी इच्छाहै, जिसके पायेते वहुरि संसार समुद्रकी प्राप्ति नहोवे.॥इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्यप्रकरणे देहनैराश्य वर्णनं नाम त्रयोदशःसर्गः॥ १३॥रामउवाच, हेमुनीश्वर! इस संसारसमुद्रमें जो जन्म पायाहै, तामें वालक अवस्था इसको प्राप्त भई है, सोभी परमदुःखका मूलहै; तिसमें परमदीन होजाताहै, अरु जेते अवगुण इसमें आय प्रवेश करते हैं, सो कहताहों. अशक्तता, मूर्खता, इच्छा, चपलता, दीनता अरु दुःख, संताप एते विकार इसको आय प्राप्त होतेहैं. यह वालावस्था महा विकारवानहै अरु वालक पदार्थकी ओर धावता है, एक वस्तुका ग्रहणकर दूसरीको

चाहताहै, स्थिर नहीं रहताहै, फिर औरमें लग जाताहै. जैसे वानर ठहरके नहीं वैठता, अरु जो कोऊ ऊपर क्रोधकरताहै, तव अंतरते परा जलताहै; अरु वडी वडी इच्छा करताहै; तिसकी प्राप्ति नहीं होती; सदा तृष्णामें रहताहै अरु क्षणमें भयभीत होजाताहै; शांतिको प्राप्त नहीं होता; फिर महादीन हो जाताहै. जैसे कदली वनका हस्ती सांकरसों बांधाहुआ दीन होजाताहै; तैसे यह चैतन्य पुरुष, वालक अवस्थाकर दीन होजाताहै. जो कछु इच्छा करताहै, सो विचारविना करताहै, तिसकर दुःख पाताहै. अरु मूढ गुंग अवस्थाहै, तिसकर कछु सिद्धि नहीं होती, कोऊ पदार्थकी प्राप्ति होतीहै. तिसमें क्षणमात्र सुखी रहताहै, बहुरि तपने लगताहै. जैसे तपती पृथ्वीपर जलडारिये तव एक क्षण शीतल होती है, फिर उसी प्रकारसों तपतीहै, तैसे वह भी तपता रहताहै. जैसे रात्रिके अंतमें सूर्य उदय होताहै तिसकर उलूकादि कष्टवान् होतेहैं, तैसे इस जीवको स्वरूपके अज्ञान कर वालावस्थामें कष्ट होताहै. हे मुनीश्वर! जो बालक अवस्थाकी संगति करताहै सो भी मूर्ख है, काहेते कि, यह विवेक रहित अवस्थाहै, अरु सदा अपवित्र है. और सदा पदार्थकी ओर धावताहै, ऐसी मूढ अरु दीन अवस्थाकी मुझको इच्छा नहीं. जिस पदार्थको देखताहै तिसकी ओर धावताहै. और क्षण क्षण अपमानको पाता है. जैसे कूकर क्षण क्षणमें द्वारकी ओर धावता है, अरु अपमान पाता है. तैसे बालक अपमानको प्राप्त होता है अरु बालकको सदा माता अरु पिताका भय रहता है; बांधवका सदा भय रहता है, अरु आपते वडे बालकका भी भय रहता है, अरु पशु पक्षीहूका भय रहता है. हे मुनीश्वर! ऐसी दुःखरूप अवस्थाकी मुझको इच्छा नहीं. जैसे स्त्रीके नयन चंचल हैं, अरु नदीका प्रवाह चंचल है, इसते भी मन अरु बालक चंचल हैं, ऐसे जानता हों, अत्र सब चंचलता बालकते कनिष्ठहै, बालक सबते चंचल है. जैसा मन चंचल है, तैसा बालक भी चंचल है मनका रूप बालक है. हे मुनीश्वर! जैसे वेश्याका चित्त एक पुरुषमें नहीं ठहरता, तैसे बालकका चित्त एक पदार्थमें नहीं ठहरता कि, इस पदार्थ कर, मेरा नाश होवेगा, ऐसा विचार भी तिसकोनहीं, अरु इसकर मेरा कल्याण होवेगा सो विचार भी नहीं. ऐसेई परा चेष्टाकरता है, अरु सदा दीन रहता है, अरु सुख दुःख इच्छा दोष करके तपायमान रहता है, जैसे ज्येष्ठ

आषाढमें पृथ्वी तपायमान होती है, तैसे बालक तपताई रहता है, शांतिको कदाचित् नहीं पाता. अरु जब विद्यापढने लगताहै; तब गुरुसों बडा भयभीत होता है, जैसे कोई यमको देखके भय पावे, और गरुडको देखके जैसे सर्प भयपावे, तैसे भयभीत होजाताहै. जब शरीरको कोई कष्ट आय प्राप्त होताहै, तब बड़े दुःखको प्राप्त होता है परन्तु दुःखके निवारणमें समर्थ नहीं होता, अरु सहनको भी समर्थ नहीं. अंतरते परा जलता है; अरु दुःखते कछु बोल सकता नहीं जैसे वृक्ष कछु नहीं बोल सकता, अरु जैसे अपर तिर्यक् योनि दुःख पावते हैं अरु कहि नहीं सकते हैं अरु दुःखका निवारण नहीं कर सकते, न संहार कर सकते, अंतरते परे जलते हैं; तैसे बालकगूँगामूढहुआ दुःख पाता है. हे मुनीश्वर ! ऐसी जो बालककी अवस्था तिसकी जो स्तुति करताहै, सो मूर्ख है. यह तो परमदुःखरूप अवस्थाहै, इसमें विवेक विचार कछु नहीं.एक खानेको पाता है,अरु दूजीको रुदन करताहै ऐसी अवगुण रूप अवस्था मुझको नहीं सुहाती है. जैसे बिजुरी अरु जलके बुदबुदे स्थिर नहीं रहते तैसे बालकहू स्थिर कदाचित नहीं होता. हे मुनीश्वर ! यह महामूर्ख अवस्थाहै; कबहूँ कहताहै. हेपिता ! मुझको बर्फका टुकडा भूनि दे. कबहूँ कहताहैः—मुझको चंद्रमा उतार दे; ये सब मूर्खताके वचन हैं; ताते ऐसी मूर्खावस्थाको मैं अंगीकार नहीं करता; जैसे दुःखका अनुभव बालकको होता है, सो हमारे स्वप्नमें भी नहीं आया तात्पर्य यह कि, बालावस्था में बडा दुःख है;यह बालावस्था अवगुणका भूषणहै;सो अवगुण कर सोभती है; ऐसी नीच अवस्थाको मैं अंगीकार नहीं करता. इसकी स्तुति करनी सो मूर्खता है इसमें गुण कोई भी नहीं है. ॥ इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्यप्रकरणे बालावस्थावर्णनं नाम चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥ रामउवाच, हे मुनीश्वर ! दुःखरूप बालावस्थाके अनंतर जो युवा अवस्था आती है, सो नीचेते ऊंची चढतीहै,सो भी उत्तम गिनबेके निमित्त नहींहै अधिकदुःखदायक है, जब युवा अवस्था आती है, तब काम रूपी पिशाच आय लगता है. सो कामरूपी पिशाच युवा अवस्थारूपी गडेलेमें आय स्थित होता है, चित्त फिराता है अरु इच्छामें पसारता है. जैसे सूर्यके उदय होते सूर्यमुखी कमल खिलआताहै अरु पँखरीनको पसारता है, तैसे युवा अवस्था रूपी सूर्य उदय होता है.तब नाना

प्रकारकी इच्छा फुरती हैं अरु कामरूपी पिशाच इसको स्त्रीमें डार देता है, तहाँ परा दुःख पाताहै जैसे कोईको अग्निके कुंडमें डार दिया होय, अरु वह दुःख पावे, तैसे कामके वश हुआ दुःखको पाता है. हे मुनीश्वर ! जो कछु विकार है, सो सब युवा अवस्थामें आयके प्राप्त हुए हैं. जैसे धनवानको देखके सब निर्धन धनकी आशा करतेहैं तैसे युवा अवस्थाको देखकर सब दोष आय इकट्ठे होतेहैं. अरु जो भोगको सुखरूप जानकर भोगकी इच्छा करताहै, सो परम दुःखका कारणहै. जैसे मद्यका घट भरा हुआ देखने मात्रको सुंदर लगताहै, परंतु जब उसका पानकरै तब उन्मत्त हो जाय, तिस उन्मत्तता कर दीन होजाताहै, अरु निरादरको पाता है. तैसे यह भोग देखनेमात्रको सुंदर भासता है परंतु जब इसको भुगतता है, तब तृष्णाकर उन्मत्त होजाता है. अरु पराधीन हो जाताहै. हे मुनीश्वर ! यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार सब जो चोर हैं, सो युवारूपी रात्रिको देखकर लूटने लगते हैं। अरु आत्मज्ञानरूपी धनको चोर ले जाते हैं, तिसकर यह दीन होता है, यह पुरुष आत्मानंदके वियोग कर दीन हुआ है. हे मुनीश्वर ! ऐसी जो दुःख देनहारी युवावस्था, तिसका मैं अंगीकार नहीं करता, अरु शांति जो है, सो चित्त स्थिर करनेके लिये है, सो चित्त युवा अवस्थामें विषयकी ओर धावताहै. जैसे बाण लक्षके ओर जाता है, तब उसको विषयका संयोग होता है, सो विषयकी तृष्णा निवृत्त नहीं होती अरु तृष्णाके मारे जन्मते जन्मांतर रूप दुःखको पाता है हे मुनीश्वर ! ऐसी दुःखदायक युवा अवस्थाकी मुझको इच्छा नहीं है. हे मुनीश्वर ! जेते कछु दुःख हैं, सो सब युवा अवस्था में आयकर प्राप्त होते हैं. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, चपलता, इत्यादिक जो दुःख हैं, सो सब युवा अवस्थामें स्थिर होते हैं, जैसे प्रलयकालमें, सब रोग आय स्थिर होते हैं, तैसे युवा अवस्थामें सब उपद्रव आय मिलते हैं और क्षणभंग हैं. जैसे बिजुरीका चमक होयके मिटजाता है, अथवा जैसे समुद्रमें तरंग होतेहैं अरु मिटि जातेहैं तैसे युवाअवस्था होयके मिट जातीहै. जैसे स्वप्नमें कोई स्त्री विकारकर छल जाती है, तैसे अज्ञानकर युवा अवस्था छल जाती है. हे मुनीश्वर ! युवा अवस्था जीवकी परम शत्रु है. जो पुरुष इस शत्रुके शस्त्रते बचे हैं, वो धन्य हैं ! इसके शस्त्र काम क्रोध, हैं जो इसते छूटा है सो वज्रके प्रहार करभी छेदा

न जावेगा जो इनकर बाँधा हुआ है, सो पशु है. हे मुनीश्वर ! युवावस्था देखनेमें तो सुंदर है, परंतु अंतरते तृष्णा करके जरजरित है. जैसे वृक्ष देखनेमें तो सुंदर होय, अरु अंतरते घुन लगा हुआ है; तैसे युवावस्था जो भोगके निमित्त यत्न करती है, सो भोग आपात रमणीय है. कारण यह कि, जबलगइंद्रिय अरु विषयका संयोगहै, तबलग अविचारित भला लगताहै, अरु जब वियोग हुआ तब दुःख होताहै. ताते भोग करके मूर्ख प्रसन्न होतेहैं, अरु उन्मत्त होतेहैं, तिनको शांति नहीं होती.अरु अंतरसे सदा तृष्णा रहती है. स्त्रीमें चित्तकीआसक्ति रहतीहै. जब इष्ट वनिताका वियोग होताहै, तब तिसके स्मरण करके जलताहै. जैसे वनका वृक्ष अग्नि करके जलताहै तैसे युवावस्थामें इष्टवियोग करके जीव जलताहै जैसे उन्मत्त हस्ती सांकर करके बंधन पाता है, तब स्थिर होता है; कहूं जाय नहीं सकता; तैसे कामरूपी हस्ती है, तिसको सांकररूप युवावस्था बंधन करतीहै, अरु युवावस्थारूपी नदी है, तिसमें इच्छारूपी तरंग उठतेहैं सो कदाचित् शांतिको नहीं पातेहैं; अरु-हे मुनीश्वर ! यह युवावस्था बडी दुष्टहै. कोऊ बडा बुद्धिवान् होवे, अरु सदा निर्मल प्रसन्न होवे, एते गुण करके प्रसन्न होवे; तिसकी बुद्धिको भी युवावस्था मलिन कर डारतीहै. जैसे निर्मल जलकी बडी नदी होवे; अरु जब वर्षाकाल आवे, तब मलीन होय जावे; तैसे युवावस्थामें बुद्धि मलीन होय जातीहै. हे मुनीश्वर ! शरीररूपी वृक्षहै तिसमें युवावस्थारूपी वल्ली प्रगट होती है; सो पुष्ट होता है, तब चित्तरूपी भँवरा आय बैठताहै; सो तृष्णारूपी तिसकी सुगंधकरके उन्मत्त होताहै; अरु सब विचार भूल जाताहै. जैसे जब प्रबल पवन चलताहै, तब सूखे पत्रको उडाय लेजाताहै; अरु रहने नहीं देता; तैसे युवावस्था आवती है, तब वैराग्य, संतोषादिक गुणका अभाव करतीहै. अरु दुःखरूपी कमलका युवावस्थारूपी सूर्य है; युवावस्थाके उदयते सब दुःख प्रफुल्लित हो आते हैं; ताते सब दुःखका मूल युवावस्थाहै. जैसे सूर्यके उदयते सूर्यमुखी कमल खिल आतेहैं, तैसे चित्तरूपी कमल संसाररूपी पँखुरी अरु सत्यतारूपी सुगंध कर खिल आताहै. अरु तृष्णारूपी भौंरा तिसपर आय बैठताहै, अरु विषयकी सुगंध लेताहै. हे मुनीश्वर ! संसाररूपी रात्रिहै, तिसमें युवावस्था रूपी तारागण प्रकाशते हैं, कारण यह

जो शरीर युवावस्थाकर सुशोभित होता है, अरु युवावस्था शरीरको जर्जरी भाव करके हो आतीहै. जैसे धानका छोटावृक्ष हरा तबलग रहता है जबलग उसको फूल नहीं आया जब फूल आते हैं तब सूखनेको लगताहै; अरु अन्नके कन परिपक्व होतेहैं, तब अन्नके छोटे वृक्ष जर्जरभावको पाते हैं. उसकी हरियावल नहीं रहसकती. तैसे जब लग जवानी नहीं आई, तबलग शरीर सुंदर कोमल रहताहै जब जवानी आई तब शरीर क्रूर होजाताहै, फेर परिपक्व होकर क्षीण होजाता है; अरु वृद्ध होताहै. तातें. हेमुनीश्वर ! ऐसी दुःखकी मूल रूप युवावस्थाहै तिसकी मुझको इच्छा नहीं, जैसे समुद्र वड़े जलकर पूर्ण है तरंगको पसारताहै; अरु उछलताहै; तोभी मर्यादाका; त्याग नहीं करता; ईश्वरकी आज्ञा मर्यादामें रहनेकीहै; अरु युवावस्थातो ऐसी है जो शास्त्रकी मर्यादा, अरु लोककी मर्यादा मेटके चलतीहै; अरु तिनको अपना विचार नहीं रहता जैसे अंधकारमें पदार्थका ज्ञान नहीं होता, तैसे युवावस्थामें शुभ अशुभका त्याग नहीं होता. जिसको विचार नहीं रहा तिसको शांति कहांते होवे; सदा व्याधि तापमें जता रहताहै; जैसे जल विना मच्छको शांति नहीं होती, तैसे विचार विना सदा पुरुष जलता रहताहै. जब युवावस्थारूप रात्रि आती है, तब काम पिशाच आयके गर्जता है; तिसकर इसको यही संकल्प उठते हैं; जो कोऊ कामी पुरुष आवे, तिसके साथमें यही चर्चा करों–हे मित्र ! वह कैसी सुंदर है? अरु कैसे उसके कटाक्ष हैं ? सो किस प्रकार मोको प्राप्त होय. हे मुनीश्वर ! इस इच्छाके साथ वह सदा जरतारहता है. जैसे मरुस्थलकी नदीको देख मृग दौरता है; अरु जलकी अप्राप्ति कर जलता है तैसे कामीपुरुष विषयकी वासना करकै जलता है, अरु शांति नहीं पाता है. हे मुनीश्वर ! मनुष्य जन्म उत्तम है, परंतु जिनके अभाग्य हैं, तिनको विषयते आत्मपदकी प्राप्ति नहीं होती. जैसे चिंतामाणि कोईको प्राप्त होवे, तो तिसका निरादर करै और उसको जाने नहीं. और डारि देवे, तैसे जो पुरुष मनुष्य शरीर पाकर आत्मपद नहीं पाया, सो बडा अभागीहै; अरु मूर्खताकरके अपने जीवनेको व्यर्थ खोय डारता है. अरु युवावस्थामें परमदुःखका क्षेत्र अपने निमित्त बोता है, अरु जेते विकार युवावस्थामें हैं, सो सब आयके इसको प्राप्त होते हैं मान, मोह, मद इत्यादि विकार करके पुरुषार्थका नाश

करताहै. हे मुनीश्वर ! ऐसे युवावस्था बडे विकारको प्राप्त करती है. जैसे नदी वायुसों अनेक तरंग पसारती है, तैसे युवावस्था चित्तकेअनेक कामको उठावतीहै जैसे पंखी पंख कर वहुत उड़ता है; अथवा जैसे सिंह भुजाके वलसों पशुके मारनेको दौडताहै, तैसे चित्त युवावस्था कर विक्षेपकी ओर धावता है. हेमुनीश्वर ! समुद्रका तरना कठिन है, काहेते कि,तामें जल अथाह है.अरु विस्तार भी वडा है; अरु तिसमें मच्छ, कच्छ, मगर, वडे देहधारी रहते हैं. ऐसा दुस्तर समुद्रका तरना सो मैं सुगम मानता हों, परन्तु युवावस्था का तरना महा कठिन है; कारण यह कि, युवावस्थामें निर्दोष रहना कठिन है ऐसी संकटवारी जो युवावस्था है, तिसमें चलायमान नहीं होते सो पुरुष धन्यहैं,अरु वंदना करने योग्यहैं हे मुनीश्वर ! यह युवावस्था चित्तको मलीन कर डारती है. जैसे जलकी वावड़ी है, तिसके निकट राख कांटे रहे होयँ,सो पवन चलनेते सब आय वावड़ीमें गिरैं,तैसे पवनरूपी युवावस्था दोषरूपी धूर कांटेनको चित्तरूपीवावड़ीमें डारके मलीन कर देतीहै.ऐसे अवगुण करके पूर्ण जो युवावस्था,तिसकी इच्छा मुझको नहीं है. युवावस्था!मेरे पर यही कृपा करनी,जो तेरा दर्शन नहीं होवे,तेरा आवना मैं दुःखका कारण मानता हूं.जैसे पुत्रके मरनेका संकट पिता शोष नहीं सकता अरु सुखका निमित्त नहीं देखता,तैसा तेरा आवनामैं सुखका निमित्त नहीं देखता ताते मुझपर दया करनी जो अपना दर्शन न होवे.हे मुनीश्वर! युवावस्थाका तरना महा कठिन है.जो कोऊ यौवनवान होवे,सो नम्रता संयुक्त होवे.और शास्त्रके गुण,वैराग्य,विचार,संतोष,शांति, इनकर संपन्न होवे सो दुर्लभ है. जैसे आकाशमें वन होना आश्चर्य है, तैसे युवावस्थामें, वैराग्य, विचार,शांति,संतोष पावना यह वडा आश्चर्य है, ताते मुझको सोई उपाय कहो जिसकर युवावस्थाके दुःखकी मुक्ति होजाय अरु आत्मपदकी प्राप्ति होय. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे युवागारुडी वर्णनं नाम पंचदशः सर्गः ॥ १५ ॥ हे मुनीश्वर ! जिस काम विलासके निमित्त स्त्रीकी वांछा करता है, सो स्त्री, अस्थि, मांस, रुधिर, मूत्र,विष्ठाकरि पूर्ण है, इसीकी पूतरी वनी हुई है. जैसे यंत्रीकी वनी पूतरी होती है,सो तागेसों कर अनेक चेष्टा करती है, तैसे यह अस्थि, मांसादिककी पुतरीमें कछु और नहीं है.जो विचार कर नहीं देखता तिसको रमणीक

दीखती है. जैसे पर्वतके शिखर दूरते सुंदर अरु निकटते असारहैं. पत्थरई पडे दीखते हैं, तैसे स्त्री, वस्त्र अरु भूषणसों करि सुदर भासती है, अरु जो अंगको भिन्न भिन्न विचार कर देखो तो सार कछु नहीं है जैसे नागनीके अंग बहुत कोमल होते हैं, परंतु उसका स्पर्श करो तो काटके मार डारती है तैसे जो कोई स्त्रीको स्पर्श करते हैं तिनको नाश कर डारती है जैसे विषकी वेलि देखनेमात्रको सुंदर लगती है, परंतु स्पर्श कियेते मार डारती है. जैसे हस्तीको जंजीरसे बाँधो तब जिस द्वारपै रहता है, तहाँई स्थिर रहता है; तैसे अज्ञानीका जो चित्तरूपी हस्ती है सो कामरूपी जंजीरसे बँधा हुआ स्त्रीरूपी एक स्थानमें स्थिर रहता है; वहाँसे कहूं जाय नहीं सकता और जब हस्तीको महावत अंकुशका प्रहार करता है, तब बंधनको तोरके निकस जाता है तैसे यह चित्तरूपी मूर्खहस्ती है, सो महावतरूपी गुरुका उपदेशरूपी अंकुशका वारंवार प्रहार करता है तब सो भी निर्बंध होय जाता है. हे मुनीश्वर ! कामीपुरुष जो स्त्रीकी वाञ्छा करता है, सो अपने नाशके निमित्त करता है; जैसे कदली वनका हस्ती, कागजकी हस्तिनी देखकर छल पायके बंधनमें आता है, ताते परमदुःख पाता है; तैसे परमदुःखका मूल स्त्रीका संग है, हे मुनीश्वर ! जैसे वनके दाहकी अग्नि सबको जलावती है, तैसे स्त्रीरूपी अग्नि तिसते अधिक है; काहेते जो उस अग्निके परश कियेते तप्त होते हैं;और स्त्रीरूपी अग्नि तो स्मरण मात्रमें जलाती है और जो सुख रमणीय दिखता है, सो आपात रमणीय है जब स्त्रीके सुखका वियोग होता है, तब मुर्देकी नाईं होजाता है. तिस कालमें भी (स्त्रीसंयोगकाल) शव (मुर्दा) जैसा हो जाता है. हे मुनीश्वर ! यह तो अस्थि, मांस, रुधिरका पिंजरा है, सो अग्निमें भस्म होजायगा; अथवा पशु पक्षीको खानेका आहार होयगा. जिसको देखकर पुरुष प्रसन्न होता है; तिसके प्राण आकाशमें लीन होजाते हैं; ताते इस स्त्रीकी इच्छा करनी सो मूर्खताहै; जैसे अग्निकी ज्वालाके ऊपर श्यामता है, तैसे स्त्रीके शीशऊपर श्यामकेशहैं. जैसे अग्निके स्पर्श कियेते जलता है, तैसे स्त्रीके स्पर्श कियेते पुरुष जलताहै. ताते जलना दोनोंमें तुल्य है. हे मुनीश्वर ! इसको नाश करनहारी स्त्रीरूपी अग्नि है.जो स्त्रीकी इच्छा करते हैं सो महामूर्ख अज्ञानीहैं;सो अपने नाशके निमित्त

इच्छा करते हैं; जैसे पतंग अपने नाशके निमित्त दीपककी इच्छा करते हैं; तैसे कामीपुरुष अपने नाशके निमित्त स्त्रीकी इच्छा करताहै. हे मुनीश्वर! स्त्रीरूपी विषकी बेलि है; अरु हस्त पाँवके अग्र तिसके पत्र हैं; अरु भुजा डारी हैं; और अस्थिरूप गुच्छेहैं नेत्रादिक इंद्रिय तिसके फूल हैं;अरु कामीपुरुष रूपी भौंरे आय बैठते हैं;अरु काम रूपी धीवरने स्त्रीरूपी जाल पसारी है; तिसपर कामीपुरुषरूपी पक्षी, आय फँसते हैं कामरूपी धीवर तिसको फँसायकर परमकष्टप्राप्तकरता है. ऐसे दुःखके देनहारीस्त्रीकी जो वांछा करते हैं; सो महामूर्ख हैं. हे मुनीश्वर! स्त्रीरूपी सर्पनी है; जब तिसका फुंकार निकलता है, तब तिसके निकट कमल फूल सब जल जाते हैं; ऐसी स्त्रीरूपी सर्पनी है, तिसका इच्छा रूप फुंकार जब निसकता है, तब वैराग्यरूपी कमल जर जाते हैं, अरु जब सर्पनी डसती है तब विषचढताहै. और स्त्रीरूपी सर्पनी जब चितौनि करी तब अंतरते आपेई विष चढ जाता है. हे मुनीश्वर! जैसे व्याध छलकर मच्छीको फँसावता है, तैसे कामी पुरुष मच्छीवत, सुंदर स्त्रीरूपीजाल देखके फँसता है और स्नेहरूपी तागेसों कामीपुरुष बंधन पाय खैंचा चला जाता है; फिर तृष्णारूपी छुरीसों काम मार डारता है. हेमुनीश्वर! ऐसे दुःखके देनेहारी स्त्रीकी मुझको इच्छा नहीं अरु कामरूपीपारधीहै, तिसते रागरूपी इंद्रियसों जाल बिछाय कामीपुरुषरूपी मृगको आसक्त कर डारताहै, अरु स्त्रीतो स्नेहरूपी डोरी है; तिसकर कामी पुरुषरूप बेलसों बँधा है. अरु स्त्रीका मुखरूपी जो चन्द्रमा है तिसको देखकर कामी पुरुषरूपी कमलनी खिलि आती है;जैसे चन्द्रमुखी कमल चन्द्रमाको देखकर प्रसन्न होते हैं; और सूर्यमुखी नहीं होते, तैसे यह कामी पुरुष भोगहू कर प्रसन्न होते हैं, अरु ज्ञानवान प्रसन्न नहीं होतेहैं. जैसे नकुल सर्पको बिलमें ते निकासके मारता है,तैसे कामी पुरुषको स्त्री, आत्मानंदमेंते निकालके मार डारती है. जब स्त्रीके निकट जाता है, तब उसको भस्म कर डारती है. जैसे सूखे तृण अरु घृतको अग्नि भस्म कर डारती है; तैसे कामीपुरुषको स्त्रीरूपी नागनी भस्म कर डारती है. हे मुनीश्वर! स्त्रीरूपी जो रात्रि है, तिसका स्नेह रूपी अंधकार है; तिसके काम क्रोधादिक उलूक अरु पिशाच

हैं.हे मुनीश्वर ! जो स्त्रीरूपी खड्गके प्रहारते युवारूपी संग्रामते बचा है; सो पुरुष धन्य है ! तिसको मेरा नमस्कार है. स्त्रीकासंयोग परमदुःखका कारण है, ताते मुझको इसकी इच्छा नहीं. हे मुनीश्वर ! जो रोग होता है, तिसके अनुसार औषधिकरताहै, तब रोग निवृत्त होता है अरु कोऊ कुपथ्य दिये, वाकाप्रबल होताहै, रोग बढ जाताहै; ताते मेरे रोगके अनुसार औषधि करो– सो मेरा रोग सुनिये-जरा अरु मृत्यु मुझको बडा रोगहै; तिसके नाश-की ओषधि मुझको दीजिये और स्त्री आदिक जो भोग हैं, सो सब इस रोगके वृद्धि कर्त्ता हैं. जैसे अग्निमें घृत डारिये, तब बढ जाती है; तैसे भोग सों जरा मृत्यु आदिरोग बढता है; ताते इस रोगकी निवृत्तिका औषधकरो, नहीं तो सबका त्याग कर वनमें जाय रहूंगा.हे मुनीश्वर ! जिसको स्त्रीहै तिसको भोगकी इच्छा भी होती है,और जिसको स्त्री नहीं तिसको स्त्रीकी इच्छा भी नहीं. जिसने स्त्रीका त्याग कियाहै, तिसने संसारकाभी त्याग कियाहै; सोई सुखीहै. संसारका बीज स्त्री है, ताते मुझको स्त्रीकी इच्छा नहीं, मुझको सोई ओषधि दीजिये, जिससे जरा मृत्यु आदि रोगकी निवृत्ति होय. ॥ इति ॥ श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे स्त्रीदुराशा वर्णनं नाम षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥ श्रीराम उवाच, हेमुनीश्वर ! बालक अवस्थातो महाजड है, अरु अशक्त है; और जब युवावस्था आती है, तब बालावस्थाको ग्रहण कर लेती है. तिसके अनंतर वृद्धावस्था आती है, तब शरीर जर्जरीभूत होजाता है अरु बुद्धि क्षीण होजातीहै; बहुरि मृत्युको पाताहै. हेमुनीश्वर ! इस प्रकार अज्ञानीका जीवना व्यर्थ है, कछु अर्थकी सिद्धि नहीं होतीहै जैसे नदीके तटपर वृक्ष होते हैं सो जलके प्रवाहकर जर्जरीभूत होजातेहैं, तैसे वृद्धावस्थामें शरीर जर्जरीभूत होजाता है; जैसे पवनसों पत्र उडजाता है, तैसे वृद्धावस्थामें शरीर नाश पाताहै. जेतेकछु रोगहैं, सो सब वृद्धावस्थामें आय प्राप्त होतेहैं; अरु शरीर कृश होय जाताहै; अरु स्त्री पुत्रादिक सब वृद्धका त्याग करते हैं; जैसे पके फलको वृक्ष त्याग देताहै, तैसे वृद्धको कुटुंब त्याग देताहै, अरु देखकर हँसते हैं जैसे बावरेको देख हँसके बोलतेहैं;कि, इनकीबुद्धि सब जात रही.जैसे कमल फूलनके ऊपर बरफ पडता है, अरु कमल जर्जरीभूत होजाता है, तैसे जरा अवस्थामें पुरुष जर्जरीभाव को प्राप्त होताहै, अरु शरीर कुबरा

होजाताहै;केश श्वेत होजातेहैं;शक्तिक्षीण होजातीहै. जैसे चिरकालका वडा वृक्ष होताहै,तिसमें घुन होताहै; तैसे शक्ति कछु रहती नहीं. हेमुनीश्वर! औरहू सब कृति क्षीण होजातीहैं,परंतु एक आसक्ति मात्र रहतीहै. जैसे वडे वृक्षपै उलूक आय रहतेहैं;तैसे इसमें क्रोध शक्ति आय रहतीहै और शक्ति सब क्षीण होजातीहैं. हेमुनीश्वर!जरा अवस्था दुःखका घरहै जब जरा अवस्था आतीहै,तब सब दुःख इकट्ठे होतेहैं तिनकर महादीन होजातेहैं. अरु युवाअवस्थाका जो कामका वल रहताहै, सो जरामें क्षीण होजाताहै; अरु इंद्रियकी आसक्ति घट जातीहै, तिनते चपलताका अभाव होजाता है. जैसे पिताके निर्धन हुए पुत्र दीन होजाताहै;तैसे शरीर निर्वल हुए इंद्रियाहू निर्वल हो जातीहैं; और एक तृष्णा उन्मत्त हो वढ जाती है. हे मुनीश्वर ! जब जरारूपी रात्रि आतीहै, तव खांसी रूपी गिदडी आय शब्द करती है; अरु आधिव्याधि रूपी उलूक आय निवास करते हैं. हे मुनीश्वर ! ऐसी जो नीच वृद्धावस्था है. तिसकी मुझको इच्छा नहीं यह देह जरा आयेते कूवरी होय जातीहै; जैसे फलपकनेसों वृक्ष झुक जाताहै,तैसे जराके आयेते देह कुवरी होजातीहै. जो युवावस्थामें स्त्री पुत्रादिक चाहते थे, अरु टहल करते थे, सो सब उसको त्याग देते हैं. जैसे वृद्ध वैलको वैलवारा त्याग देताहै; तैसे इसको वंधु त्याग देते हैं, और देखके हँसते हैं; अरु अपमान करते हैं. तिनको ऊंटकी नाई भासता है हे मुनीश्वर ऐसी जो नीच अवस्था है तिसकी मुझको इच्छा नहीं. अव जो कछु कर्तव्य मुझको कहो सो मैं करों. इस शरीरकी तीनों अवस्थामें कोऊ सुखदाई नहीं है; क्योंकि वालावस्था महामूढ है अह युवावस्था महा विकारवान है; अरु जराअवस्था महादुःखका पात्रहै वालावस्थाको युवावस्था गृहण कर लेतीहै अरु युवावस्थाको जरा अवस्था गृहण कर लेती है अरु जरावस्थाको मृत्यु गृहण कर लेता है. यह अवस्था सब अल्प कालकी हैं; इनके आश्रय करके मेरेको कहा सुख होना है;ताते मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर इस दुःखसे मुक्त होजाऊं. हे मुनीश्वर! जब जरा अवस्था आतीहै तब मरना भी निकट आता है जैसे संध्याके आये रात्रि तत्काल आय जाती है; और जो संध्याके आये दिनकी इच्छा करतेहैं सो महामूर्ख हैं; तैसे जराके आये जीवनेकी आशा रखनी सो

महामूर्खताहै. हे मुनीश्वर! जैसे बिल्ली चितौनी करती है, जो चूहा आवे तो पकर लेउँ तैसे मृत्यु चितवत है कि, जरा अवस्था आवे तो मैं इसका गृहण कर लेऊं अरु जरा अवस्था मानो कालकी सखी है. रोगरूपी मशालकर शरीररूपी मांसको सुखाती है, तब काल जो इसका स्वामी है, सो आयकर भोजन कर लेता है. अरु शरीररूपी घर है, तिसका स्वामी काल है जब काल घरमें आवे, तब तिसके आगे तीन पटरानी आती हैं; पहिली अशक्तता, दूसरी अंगमें पीडा, तीसरी खांसी, सो शीघ्र श्वासको चलावतीहै, अरु श्वेत केश होतेहैं, सो चमरकी नाईं झुलते हैं. ऐसी जो कालकी सहेली है सो प्रथमही आइ प्रवेश करती है, अरु जरा रूपी कलँगी शरीरको बनावती है, तब जो वाका स्वामी काल है, सो आय प्रवेश करता है. हे मुनीश्वर! जो परमनीच अवस्था है, सो जराहीहै; सो जब आतीहै तब शरीर जर्जरीभूत कर देती है; कँपनेको लगती है, अरु शरीरको निर्बल कर देतीहै अरु क्रूर कर देतीहै. जैसे कमलपर बरफकी वर्षा होवे अरु जर्जरी भूत होय जाय तैसे शरीरको जर्जरीभूत कर डारती है. जैसे वनमें बाघिन आयके शब्द करतीहै अरु मृगका नाश करती है, तैसे खांसी रूपी बाघिन आय मृगरूपी बलका नाश करती है. हे मुनीश्वर! जब जरा आती है तब मृत्यु प्रसन्न होता है. जैसे चंद्रमाके उदयते कमलनी खिल जाती हैं, तैसे मृत्यु प्रसन्न होता है, अरु यह जरा अवस्था बडी दुष्टहै, बडे बडेयोद्धेहुएहैं तिनकोभी दीन करदिये हैं; यद्यपि बडे शूरमा ने संग्राममें शत्रुको जीते हैं, सो उनकोहू जराने जीतलिये हैं, अरु बडे पर्वतके चूर्ण करडारे हैं ताको हू जरा पिशाचनींने महादीन कर दिये हैं यह जरारूपी जो राक्षसी है, तिसने सबको दीन कर दिये हैं, सो सबको जीतनेवारी है. हे मुनीश्वर! यह जरा शरीरको अग्निकी नाईं लगती है. जैसे अग्नि वृक्षमें लगतीहै, तब धूम निकसता है, तैसे शरीररूपी वृक्षमें जरारूपी अग्नि लगके तृष्णारूपी धुँवा निकसता है. जैसे डब्बेमें बडे रत्न रहते हैं. तैसे जरारूपी डब्बेमें दुःखरूपी अनेक रत्न रहते हैं. अरु जरारूपी वसंतऋतु है, तिस करके शरीररूपी वृक्ष दुःखरूपी रस करके पूर्ण होता है. जैसे हस्ती साँकरसों बँधा हुआ दीन होजाताहै; तैसे जरारूपीसाँकर करके बँधा पुरुष दीन होजाता है; अरु अंग सब शिथिल हो जाता है;

है, अरु इंद्रियांभी निर्बल हो जाती हैं, अरु शरीर जर्जरी भावको प्राप्त होता है; परंतु तृष्णा नहीं घटती है; बल क्षीण होजाता है, अरु इंद्रियांभी निर्बल हो जाती हैं, अरु शरीर जर्जरी भावको प्राप्त होता है; परंतु तृष्णा नहीं घटती है; नित्य बढ़ती चली जातीहै जैसे रात्रि आती है तब सूर्य वंशी कमल सब मुँद जाते हैं; तब पिशाचनी आय विचरने लगती है अरु प्रसन्न होती है; तैसे जरारूपी रात्रिके आयेते सब शक्तिरूपीकमल मूँद जाते हैं अरु तृष्णारूपी पिशाचनी प्रसन्न होती है. हे मुनीश्वर! जैसे गंगा तटपर वृक्ष रहते हैं, सो गंगाजलके वेगसों जर्जरीभूत होजाते हैं, तैसे जो आयुरूपी प्रवाह चलता है, तिसके वेगकर शरीर जर्जरीभूत हो जाता है. जैसे मांसके टुकडेको देख आकाशसे उडती चीलह नीचे आय ले जाती है, तैसे जरा अवस्थामें शरीररूपी मांसको काल ले जाता है. हे मुनीश्वर! यह तो कालका ग्रास बना हुआ है जैसे सुंदर वृक्षको हस्ती खाय जाता है तैसे जरा अवस्था वाले शरीर को काल देखके भोजन कर जाता है. इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे जरा अवस्था निरूपणं नाम सप्तदशः सर्गः ॥ १७ ॥ रामउवाच, हे मुनीश्वर! संसाररूपी गर्त है, तिसमें अज्ञानी गिराहै सो संसाररूपी गर्व अल्पहै; अरु अज्ञानी तो बडा होगयाहै. संकल्प विकल्पकी आधिक्यताते बढा है अरु जो ज्ञानवान् पुरुष हैं सो संसारको मिथ्या जानते हैं, फिर संसाररूपी जालमें फँसते नहीं हैं. अरु जो अज्ञानी पुरुष है सो संसारको सत्य जानकर संसारकी आस्थारूपी जालमें फँसताहै. अरु संसारके भोगकी वांछा करता है सो ऐसाहै जैसे दर्पणमें प्रतिबिंब देखकर बालक पकरनेकी इच्छा करताहै; तैसे अज्ञानी संसारको सत्य जानकर जगत्के पदार्थकी वांछा करता है. यह मेरेको होवे; यह मेरेको नहीं होवे अरु यह जो सुख है सो नाशात्मक है, अभिप्राय यह जो आवते हैं अरु जातेहैं, सो स्थिर नहीं रहते हैं; इनका काल ग्रहण करता है. जैसे पक्के अनारको चूहा खाय जाता है, तैसे सब पदार्थनको काल खाता है. हे मुनीश्वर! जेते कछु पदार्थ हैं, सो काल ग्रसित हैं, बडे बडे बली सुमेरु जैसे गंभीर बलवारे पुरुषोंको कालने ग्रास किये हैं जैसे सर्पको नकुल भक्षण कर जाता है, तैसे बडे बलीका ग्रास काल कर जाता है. अरु जगत् रूपी एक गूलरका फल है, तिसमें जो मज्जा है सो ब्रह्मादिक हैं, सो फलका जो वृक्ष है तिनका जो वन है, सो ब्रह्मरूप

है, तिस ब्रह्मरूप वनमें जेते कछु वन हैं. सो सब इसका आहार हैं, सबका भक्षण काल कर जाता है. हे मुनीश्वर! यह काल बडा बलिष्ठ है, जो कछु देखनेमें आता है; सो सब इसने ग्रास कर लिया है, तब औरकी कहा कहनी है और हमारे जो बडे ब्रह्मादिक तिनका भी काल ग्रास कर जाता है; जैसे मृगका ग्रास सिंह कर लेता है, और काल किसी करके जाना नहीं जाता. छिन, घरी, प्रहर दिन, मास और वर्षादिक कर जानिये सो काल है और कालकी मूर्त्ति प्रगट नहीं है, ऐसा अप्रगट रूप है; अरु किसीकी स्थिति होने नहीं देता. अरु एक वेलि कालने पसारी है, तिसकी त्वचा रात्रि है; अरु फूल तिसका दिन है, और जीवरूपी भौंरे तिसपर आय बैठते हैं. हे मुनीश्वर! जगतरूपी गूलरका फूल है, तिसमें जीवरूपी मच्छर बहुत रहते हैं, तिस फूलका भक्षण काल कर जाता है. जैसे अनारका भक्षण तोता करता है, तैसे काल भक्षण करता है. अरु जगतरूपी वृक्ष है, अरु जीवरूपी तिसके पत्र हैं, तिसका कालरूपी हस्ती भक्षण कर जाता है. अरु शुभ अशुभरूपी भैंसानको कालरूपी सिंह छेद छेदके खाताहै. हे मुनीश्वर! यह काल महाक्रूरहै, सो किसीपर दया नहीं करता; सबका भोजन कर जाता है. जैसे मृग सब फूलनको खाय जाता है, तिससे कोऊ रहता नहीं है, परन्तु एक कमल उससे बचे हैं, सो कमल कैसाहै? शांति अरु मैत्री तिसके अंकुरहैं, अरु चेतनता मात्र प्रकाश है, इस कारणते वह बचाहै, सो कालरूपी मृग इसको पहुँच नहीं सकता. इससे प्राप्तहुवा कालभी लीन होजाता है और जेता कछु प्रपंचहै, सो सब कालके मुखमेंहै. ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, कुबेर, आदिकर सब मूर्त्ति काल की धरी हुईहैं, फिर तिनको भी अंतरध्यान करदेताहै. हे मुनीश्वर! उत्पत्ति स्थिति, अरु प्रलय; सब कालते होतेहैं. अनेक वेर महाकल्पकाहू ग्रहण करलेताहै, अरु अनेक वेर करैगा. अरु कालको भोजन कियेते तृप्ति कदाचित् नहीं होती; अरु कदाचित् होनहारीहू नहीं. जैसे अग्नि घृतकी आहुतिसों तृप्त नहीं होता, तैसे जगत अरु सब ब्रह्मांडका भोजन करतेहू काल तृप्त नहीं होता, अरु इसका ऐसा स्वभाव है, जो इंद्रको दरिद्री कर देताहै, अरु दरिद्रीको इंद्र कर देताहै और सुमेरुको राई बनाता है, अरु राईका सुमेरु करता है; सबते बडे ऐश्वर्यवारेको नीच करडारता

है; सबते नीचको ऊंच करडारता है. अरु बूँदका समुद्र करडारता है, अरु समुद्रका बूँद करता है ऐसी शक्ति कालमें है. अरु जीवरूपी जो मच्छ हैं, तिनको शुभाशुभ कर्मरूपछुरे सों छेदत रहता है; फिर कैसा है ? जो काल कूपका चक्र है; जीवरूपी टंटको शुभ अशुभ कर्मरूपी रसरीसों बांधकर लिये फिरता है. फिर कैसाहै? जीवरूपी वृक्षको रात्रि अरु दिनरूपी कुहारा कर छेदताहै. हे मुनीश्वर ! जेता कछु जगत् बिलास भासता है, सो सबका ग्रहण काल कर लेवेगा अरु जीवरूपीरत्नका काल डब्बा है, सो अपने उदरमें डारता जाता है, और खेल करताहै. अरु चंद्र सूर्यरूपी गेंदको कबहूं ऊर्द्ध उछालता है, कबहूं नीचे डारताहै. अरु जो महा पुरुष हैं सो उत्पत्ति प्रलयमें जो पदार्थ हैं,तिनमें स्नेह किसीके साथ नहीं करते तिसका नाश करनेको काल समर्थ नहीं. जैसे मुंडकी माला महादेवजी गरेमें धरते हैं, तैसे यह भी जीवकी मालागरेमें डारता है. हे मुनीश्वर ! जो बडे बडे बलिष्ठ हैं, तिनका भी काल ग्रहण कर लेता है; जैसे समुद्र बडा है, तिसका बडवाग्नि पान करलेता है और जैसे पवन भोजपत्रको उडाता है, तैसा कालका बल है किसीकी सामर्थ्य नहीं, जो इसके आगे स्थित रहै. हे मुनीश्वर ! शांति गुण प्राधान्य जो देवताहैं, अरु रजोगुण प्राधान्य जो बडे राजाहैं, अरु तमोगुण प्राधान्य जो दैत्य राक्षस हैं, तिनमें कोऊ समर्थ नहीं, जो इसके आगे स्थित होवे. जैसे टोकनीमें अन्न अरु जलधरके अग्निपर चढाय दियेते फिर उछलते हैं, सो अन्नके दाने कडछी कर. कबहूं ऊर्ध्व और कबहूं नीचे जाते हैं, तैसे जीवरूपी अनेक दाने जगत् रूपी टोकनीमें परे हुए राग द्वेष रूपी अग्निपै चढे हैं, अरु कर्मरूपी कडछीकर कबहूँ ऊर्ध्व जाते हैं, कबहूं नीचे जाते हैं. हे मुनीश्वर ! यह काल किसीको स्थिर होने नहीं देता, महा कठोर है, दया किसी पर नहीं धरता इसका भय मुझको रहता है. ताते सोई उपाय मुझको कहो. जिसकर मैं कालते निर्भय होजाऊं. इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे कालवृत्तांत निरूपणं नाम अष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥ श्रीराम उवाच हे मुनीश्वर ! यह काल बडा बलिष्ठ है. जैसे राजाके पुत्र शिकार खेलने जाते हैं, तब वनमें बडे पशु पक्षी देखते हैं. फिर मारते हैं [illegible] यह संसाररूपी वनहै. तिसमें प्राणी [illegible] पशु पक्षी हैं तब कालरूपीराजपुत्र

तिसमें शिकार खेलने आताहै. तब सब जीव भयको पाते हैं, फिर तिसकोई मारता है. हे मुनीश्वर! यह काल महाभैरव है, सबका ग्रास कर लेता है. प्रलयमेंसबका प्रलय कर डारता है. अरु इसकी जो चंडिका शक्ति है, तिसका बड़ा उदर है, अरु कालिका सबका ग्रास करती है, पाछे, नृत्य करती है. जैसे वनके मृगको सिंह अरु सिंहनी भोजन करते हैं और नृत्य करते हैं, तैसे जगत्‌रूपी वनमें जीव रूपी मृगका भोजन करके काल अरु कालिका नृत्य करते हैं. बहुरि इनते जगत्‌का प्रादुर्भाव होता है. नाना प्रकारके पदार्थनको रचते हैं पृथ्वी, बगीचे, बावरी, आदि सब पदारथ इनही ते उत्पन्न होते हैं, अरु सुंदर जीवकी हू उत्पत्ति इनते होती है, और एक समयमें उनका नाशभी कर देती है. सुंदर समुद्र रचके फिर वामें अग्नि लगाय देती है अरु सुंदर कमल को बनायके फिर वाके ऊपर बरफकी बरसा करती है, इत्यादि नाना पदार्थनको रचिके तिनका नाश करती है. जहां बड़े स्थान बसते हैं तिनको उजाड़ कर डारती है. फिर उजाड़में बस्ती कर धरती है. अरु नाशभी करती है, स्थिर रहने किसीको नहीं देती. जैसे बागमें वानर आयके वृक्षको ठहरने नहीं देता तैसे कालरूपी वानर किसी पदार्थको स्थिररहने नहीं देता. हे मुनीश्वर! इस प्रकारसों सब पदार्थ कालसों कर जर्जरी भूत होते हैं, तिसका मैं आश्रय किस रीतिसों करों? मुझको तो नाशरूप भासता है. ताते अब मुझको किसी जगत्‌के पदार्थकी इच्छा नहीं. इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे कालविलासवर्णनं नाम एकोन विंशतितमः सर्गः ॥१९॥ राम उवाच, हे मुनीश्वर! इस कालका महा पराक्रम है, इसके तेजके सन्मुख रहनेको कोई समर्थ नहीं क्षणमें ऊँचको नीच कर डारता है, अरु नीचको ऊंच कर डारताहै, तिसका निवारण कोऊ नहीं कर सकता, सब इसीके भयसे परे काँपते हैं. यह महाभैरव है. सब विश्वका ग्रास कर लेता है. अरु इसकी चंडिकारूप शक्ति है सो बलवान् है. सो नदीरूप है, तिसका उल्लंघन कोई नहीं कर सकता है, अरु महाकालरूप काली है, तिसका बडा भयानक आकार है, अरु कालरूप जो रुद्र है, तिसते अभिन्नरूपी कालिका है, सो सबका पान कर लेती है; पाछे भैरव अरु भैरवनी नृत्य करते हैं. सो. काल कालिका कैसी है! बडा जिसका आकाशमें शीश है, अरु जिसके पातालमें चरण हैं.

दशोंदिशा जिसकी भुजा हैं; सप्त समुद्र जिसके हाथमें कंकन हैं, संपूर्ण पृथ्वीरूप तिसके हाथमें पात्र है, तिसके ऊपर जीव है सो भोजन योग्य है. हिमालय अरु सुमेरु पर्वत दोनों कानमें बडे रत्न हैं; चंद्रमा सूर्य जिसके लोचन हैं, अरु सब तारागण वाके मस्तकमें बिंदु हैं, अरु हाथमें त्रिशूल अरु मुशल आदि शस्त्र हैं; अरु जिसके हाथमें तंद्रा फांसा है, तिसकर जीवको मारता है. ऐसी जो कालिका देवी है, सो सब जीवका ग्रास करके महाभैरव जो रुद्र है तिसके आगे नृत्य करती है. अरु अट्ट, अट्ट ऐसा शब्द करती है; अरु जीवका भोजन करके उनकी रुंडमाला गरेमें धारण करती है; सो भैरवके आगे नृत्य करती है. अरु भैरव कैसा है ? कि जिसके सन्मुख रहनेकी शक्ति कोईमें नहीं है, अरु जहाँ उजार है तहाँ क्षणमें वस्ती करडारते हैं, अरु जहाँ वस्ती होवे तहाँ क्षणमें उजार करते हैं. इसीसे तिनका नाम देव कहते हैं, अरु तिसको कृतांत भी कहते हैं. काहेसे कि, बडे २ पदार्थ होते हैं अरु तिसका नाश भी करता है, अरु स्थिर किसीको रहने नहीं देता, तिसते इसका नाम कृतांत है, अरु नित्यरूपीहू यही है. जो यह आदि धरा है सोई कर्त्ता अरु कर्म रूप है, काहेते कि, परिणाम जिसका अनित्यरूप है, इसीते इसका कर्म नाम है, सो कैसे नाश करता है ? जब अभावरूपी धनुष हाथमें धरता है, तिसकर राग द्वेष रूपी वाण चलाता है तिस वाणसे जर्जरीभूत करके नाश करता है, अरु उत्पत्ति नाशमें उसको यत्न भी कछु करना नहीं पडता है, इसको तो खेल जैसा है. जैसे वालक मृत्तिकाकी सेना बनाता है. फिर उठाय कर नाशभी करदेताहै, तैसे कालको उपजावने अरु नाश करने में यत्न करना नहीं पडता है. हे मुनीश्वर ! कालरूपी धीवर है, तिसने क्रियारूपी जाल पसाराहै, तिसविषे जीव रूपी पक्षी पडे फँसतेहैं, सो फँसे हुए शांतिको नहीं प्राप्त होतेहैं. हे मुनीश्वर ! यह तो सब नाशरूप पदार्थ हैं इनमें आश्रय किसका करना, जिसकर सुखी होवे ! स्थावर जंगम जगत् तो सबकालके मुखमेंहैं यह सब नाशरूप मुझको दृष्टिमें आवे हैं, ताते जो निर्भयपद होय सो मुझसों कहो. इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे काल कालिका वर्णनं नाम विंशतितमः सर्गः॥२०॥

श्रीरामउवाच, हे मुनीश्वर जेते कछु पदार्थ भासते हैं सो सब नाशरूपहैं, ताते किसकी इच्छा करों ? और कौनको आश्रय करों ? इतनी

इच्छा करनी सो मूर्खता है. अरु जेती कछु चेष्टा अज्ञानी करताहै सो सब दुःखके निमित्तहै अरु जीवनेमें अर्थकी सिद्धि कछु नहीं है, काहेते. जब बालक अवस्था होतीहै, तब मूढता रहतीहै, विचार कछु नहीं रहता. अरु जब युवा अवस्था आती है, तब मूर्खता करके विषयको सेवतेहैं, अरु मान मोहादि विकारोंसे मोहेई जाते हैं, तामें भी विचार कछु नहीं होता अरु स्थिरभी नहींरहते, फिर दीनका दीन रहके विषयकी तृष्णा करताहै. शांतिको नहीं पाताहै. हे मुनीश्वर ! आयुष्य जो है सो महाचंचलहै, अरु मृत्यु निकट है, वाको अन्यथा भाव नहीं होता है. हे मुनीश्वर ! जेते कछु भोगहैं सो रोगहैं, अरु जिसको संपदा जानतेहैं, सो आपदाहै, अरु जिसको सत्य कहतेहैं, सो असत्यरूप है, अरु जिस जिस स्त्री पुत्रादिकको मित्र जानतेहैं, सो सब बंधनका करताहै अरु इंद्रिय जो हैं सो महा शत्रुरूपहैं. सो मृगतृष्णाके जलवत्हैं अरु यह देह है सो विकार रूप है, अरु मन महाचंचल है, और सदा अशांतरूप है, अरु अहंकार जो है सो महानीच है. इसनेही दीनताको प्राप्त कियाहै इसकर जेते कछु पदार्थ इसको सुखदायक भासते हैं, सो सब दुःखके देनहारे हैं तिसकर इसको कदाचित् शांति नहीं होती, ताते मुझको इतनी इच्छा नहीं. यद्यपि देखने मात्रको सुंदर भासते हैं, तो भी इनमें सुख कछु नहीं, सो पदार्थ स्थिर रहनेका नहीं. जैसे समुद्रमें नानाप्रकारके तरंग भासतेहैं, सो सब वडवाग्निकर नाश होतेहैं तैसे यह पदार्थभी नाशको पाते हैं. मैं अपनी आयु विषे कैसे आस्था करों. हे मुनीश्वर ! बडे समुद्र जो दृष्टि आते हैं अरु सुमेरु आदि बडे पर्वत हैं सो सब नाशको पाते हैं, तब हम सारिखेकी कहा वार्त्ता है और बडे बडे दैत्य राक्षस हू होयके नाश पाय गये हैं, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता है ? अरु देवता, सिद्ध, गंधर्व, हुयेहैं सो सब नाशको पाते हैं. तिनकी नाम संज्ञाभी नहीं रहती तब हम सारिखेकी कहा वार्त्ता ! पृथ्वी, जल, अरु अग्नि जो दाहक शक्ति धरनेहारे अरु पवन जोहै सो वीर्य सहित सब नाश हो जायँगे, कछु इनकी सत्ताभी न रहैगी, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता, अरु यम, कुबेर, वरुण, इंद्र, बडे तेजवारे हैं सो सब नाश पावेंगे तो हम सारिखेकी कहा कहानी है, और तारामंडल जो दृष्टि आते हैं, सो सब गिरपडेंगे-जैसे सूखे पात वृक्षते वायुसों गिरजाते हैं, तैसे तारे गिरतेहैं तब हम सारिखेकी

कहा वार्त्ता है. हे मुनीश्वर ! ध्रुव, जो स्थिर भासता है. सो भी अस्थिर होय जायगा, अरु चंद्रमा अमृतमय मंडलका दृष्टिमें आता है और सूर्य अखंड मंडल है जिसका, ऐसा जो प्रकाश संयुक्त दृष्टि आता है, सो सब नाश हो जावहिंगे, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता है औरकीहू कहा वार्त्ता है यह जो बडे ईश्वर जगत्के अधिष्ठाता हैं तिनका भी अभाव हो जाता है. परमेष्ठी जो ब्रह्मा है, तिसका भी अभाव हो जाता है, हरि जो विष्णु सो भी हरे जायँगे, महाभैरव रूप जो इन्द्र सो भी शून्य हो जायँगे; तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता करनी ? अरु काल जो सबका भक्षण करने हाराहै सोभी टूक टूक होयके नाशको प्राप्त होवेगा अरु कालकी स्त्री जो नेती है, सोहू अनेतताको प्राप्त होवेगी; अरु सबका आधार जो आकाश है सो भी नाश होजायगा. तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता? अरु जेता कछु जगत् अर्थ कर सिद्ध होताहै, सो सब नाश हो जावेगा. कोऊहू स्थिर रहनेका नहीं तब हम किसकी आस्था करैं, अरु किसका आश्रय करैं यह जगत् सब भ्रममात्रहै अज्ञानीकी इसमें आस्था होती है और हमारी नहीं है. कि, जगत् भ्रम कैसे उत्पन्न भयाहै, अरु मैं इतना जानता हों कि. संसारमें जितने दुःखी होते हैं, सो अहंकारने किये हैं. हे मुनीश्वर इसका जो परमशत्रु अहंकार है, इस करके भटकता फिरता है. जैसे जेवरीमें बाँधा हुआ पतंग कबहूं ऊर्ध्व कबहूं नीचे जाता है स्थिर कबहूँ नहीं रहता. तैसे जीवहू अहंकार करके कबहूँ ऊर्ध्व कबहूँ अधो जाता है. स्थिर कबहूं नहीं होता जैसे अश्वते आरूढ रथ तिनके ऊपर बैठके सूर्य आकाश मार्गमें भ्रमता है तैसे यह जीव भ्रमता है स्थिर कदाचित् नहीं होता. हे मुनीश्वर, यह जीव परमार्थ सत्य स्वरूपते भूलाहुआ भटकता है अरु अज्ञान करके संसारमें आस्था करता है अरु भोगहूको सुखरूप जानकर तिसमें तृष्णा करता है. और जिसको सुखरूप जानता है सो रोग समान हैं और विषकर पूर्ण सर्प जैसे हैं. सो जीवका नाश करनहारे हैं. और जिसको सत्य जानता है, सो असत्य है. सब कालके मुखमें ग्रसे हुए हैं. हे मुनीश्वर ! विचार विना अपना नाश आपही करता है; काहेते कि, इसका कल्याण करनेहारा बो[illegible] है. जो सत्य विचार बोधके शरण जाय [illegible] कल्याण होवे और जेते पदार्थ हैं, सो

स्थिर कोई नहीं; इनको सत्य जानना दुःखके निमित्त है. हे मुनीश्वर ! जब तृष्णा आती है, तब आनंद अरु धैर्यको नाश करदेती है; जैसे वायु मेघका नाश कर डारता है, तैसे तृष्णा नाश कर डारती है. तातें मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर जगत्का भ्रम मिट जावे, अरु अविनाशीपदकी प्राप्ति होवे. इस भ्रमरूप जगत्की आस्था मैंनहीं देखता; तातें इच्छा चाहै तैसी करो, परंतु सुख दुःख इसीको होने हैं सो होइँगे, मिटनेके नहीं भावे पहाड़की कंदरामें बैठो, भावे कोटमें बैठो, परंतु जो होनेका सो मिथ्या नहीं होवै है, इस निमित्त यत्न करना मूर्खता है. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे कालविलास वर्णनं नाम एकविंशतितमः सर्गः॥२१॥

रामउवाच, हे मुनीश्वर ! यह जो नानाप्रकार के सुंदर पदार्थ भासते हैं. सो सब नाशरूप हैं इनकी आस्था मूर्ख करते हैं, यह तो मनकी कल्पना करके रचे हुए हैं. तिनमें किसकी आस्था करों ? हे मुनीश्वर ! अज्ञानी जीवका जीवना व्यर्थ है; काहेते जो जीवनेते उसका अर्थ सिद्धि कछु नहीं होता. जब कुमार अवस्था होती है, तब मूढ बुद्धि होती है, तिसमें विचार कछु नहीं होता. जब युवावस्था आती तब काम क्रोधादिक विकार उत्पन्न होते हैं तिसकर सदा ढांपे रहते हैं. जैसे जालमें पक्षी बंध जाता है,अरु आकाश मार्गको देख नहीं सकता है; तैसे काम क्रोधादिक करि ढपा हुआ विचार मार्गको देख नहीं सकता जब वृद्धावस्था आती है; तब शरीर जर्जरीभूत होजाता है, अरु महादीन होता है. बहुरि शरीरका भी त्याग देता है. जैसे कमलके ऊपर बरफ पडता है तब तिसका भौंरा त्याग करता है, तैसे जब शरीर रूपी कमलको जराका स्पर्श होता है, तब जीव रूपी भौंरा त्याग कर देता है. हे मुनीश्वर ! यह शरीर तबलग सुंदर है, जबलग वृद्धावस्था प्राप्त नहीं होती-जैसे चंद्रमाका प्रकाश राहुदैत्यने आवरण नहीं किया तबलग रहता है, जब राहु दैत्य आवरण करता है, तब प्रकाश नहीं रहता है तैसे जरा अवस्थाके आये युवा अवस्थाकी सुंदरता जाती रहती है, हेमुनीश्वर ! जराके आयेते शरीर कृश होजाता है, अरु तृष्णा बढ जाती है; जैसे वर्षाकालमें नदी बढ जाती है; तैसे जरा अवस्थामें तृष्णा बढजाती है; अरु जो पदार्थकी तृष्णा करता है, सो पदार्थ भी दुःखरूप है; तृष्णा

करके आपही दुःख पाता है. हे मुनीश्वर तृष्णारूपी समुद्र है तिसमें चित्तरूपी बेडा परा है; राग द्वेषरूपी मच्छ कबहूँ ऊर्ध्व जाते हैं, कबहूँ नीचे आते हैं. स्थिर कदाचित् नहीं रहते. हे मुनीश्वर! कामरूपी वृक्ष है, सो वृक्षमें तृष्णारूपी लता लगती है. तिसमें विषयरूपी फूल हैं;जब जीवरूपी भौंरा तिसके ऊपर बैठता है; तब विषयरूपी बेलिसों मृतक हो जाता है. हे मुनी-श्वर! तृष्णारूपी एक बडी नदी है; तिसमें राग द्वेषादिक बडे मच्छ रहते हैं; तिस नदीमें परे हुए जीव दुःख पाते हैं, अरु जो संसारकी इच्छा करता है, सो नाशरूप है. हे मुनीश्वर! उन्मत्त हस्ती अरु तुरंगके समूह ऐसा जो रणरूपी समुद्र है तिसको तर जाते हैं; तिसको भी मैं शूर नहीं मानता परंतु जो इंद्रियरूपी समुद्र, तिसमें मनोवृत्तिरूपी तरंग उठते हैं, ऐसे समुद्रको जो तरजाता है,तिसको शूर मानता हों. जिसके परिणाममें दुःख होवे,तैसी क्रिया अज्ञानी जीव आरंभ करते हैं, और जिसके परिणाममें सुख है, तिसका आरंभ नहीं करताहै और कामके अर्थकी धारना करता है, ऐसे आरंभ कियेते शरीरकी शांति और सुखकी प्राप्ति नहीं होती. ऐसेई कामना करके सदा जलते रहते हैं; अनात्म पदार्थकी तृष्णा करते हैं, सो शांतिको कैसे प्राप्त होवें. हे मुनीश्वर! यह तृष्णारूपी नदी है, तिसमें बडा प्रवाहहै, तिसके किनारे वैराग्य अरु संतोष दोनों वृक्ष खडे हैं, सो तृष्णा नदीके प्रवाहते उन दोनोंका नाश होता है. हे मुनीश्वर तृष्णा बडी चंचल है, किसीको स्थिर होने नहीं देती. अरु मोहरूपी एक वृक्ष है, तिसके चहूँफेर स्त्रीरूपी बेलि है, सो विषकरके पूर्ण है,तिसपर चित्तरूपी भौंरा आय बैठता है तब स्पर्शमात्रते नाश पाताहै. जैसे मोरका पुच्छ हिलता रहताहै तैसे अज्ञानी का चित्त चंचल चलता है, सो मनुष्य पशु समान है; जैसे पशु दिनको जंगलमें जाय आहार करते चलते फिरते हैं, अरु रात्रिको आय घरमें खूँटासों बंधन पाते हैं तैसे मूर्ख मनुष्यहू दिनको घर छोडके व्यवहारमें फिरते हैं अरु रात्रिको आय अपने घरमें स्थिर होते हैं ताते परमार्थकी सिद्धि कछु नहीं होती जीवना वृथा गवाँते हैं. बालक अवस्थामें शून्य रहतेहैं; अरु युवा अवस्थामें काम करि उन्मत्त होते हैं सो काम करके चित्तरूपी उन्मत्त हस्ती स्त्रीरूपी कंदरामें जाय स्थित होतेहैं; सोभी क्षणभंगुरहै.

बहुरि वृद्धावस्था होतीहै, तिसकर शरीर कृश होजाताहै; जैसे वर्फते कमल जर्जरीभावको प्राप्त होताहै, तैसे जरा करके शरीर जर्जरी भावको प्राप्त होता है; अरु सब अंग क्षीण होजाते हैं; अरु एक तृष्णाबढजाती है. हे मुनीश्वर ! यह पुरुष महापशु है, सो आकाशके फूल लेनेकी इच्छा करताहै, जैसे बडे पर्वतपर चढकर आकाशका फूल लेनेकी इच्छा करताहै, सो फिर बडी कंदरा अरु वृक्षमें गिर पडताहै, तैसे यह जीव मनुष्यरूपी पर्वतपर आय रहाहै, अरु आकाशके फूलरूपी, जगत्के पदार्थकी इच्छा करताहै, सो नीचेको गिर पडनेको है सो राग द्वेषरूपी कंटक वृक्षमें जाय पडेगा हे मुनीश्वर ! जेते कछु जगत्के पदार्थ हैं सो सब आकाशके फूलकी नाईं नाशवान्हैं. इनमें आस्था करनी सो मूर्खता है; यह तो शब्दमात्र जैसाहै, तिसते अर्थ सिद्धि कछु नहीं होती अरु-जो ज्ञानवान् पुरुष हैं, तिनको विषय भोगकी इच्छा नहीं रहती; काहेते जो आत्माके प्रकाशकर इनको मिथ्या जानतेहैं. हे मुनीश्वर ! ऐसे ज्ञानवान् पुरुष सो दुर्विज्ञेय हैं. हमको तो स्वप्नमेंभी नहीं भासतेहैं. और यह विरक्तात्मा दुर्लभहै; जिनको भोगकी इच्छा नहीं है, सर्वदा ब्रह्मकी स्थिति कर भासते हैं; ऐसे पुरुष को संसारकी इच्छा कछु नहीं रहती काहेते जो यह पदार्थ सब नाशरूपहैं हे मुनीश्वर ! पर्वतको जिस ओर देखिये तहां पत्थर कर पूर्ण दृष्टि आताहै; अरु पृथ्वी पूर्ण मृत्तिका करि दृष्टि आती है, अरु वृक्ष काष्ठकरि पूर्ण दृष्टि आता है; समुद्र जलकर पूर्ण दृष्टि आताहै तैसे शरीर अस्थि, मांसकर पूर्ण भासताहै ये सबपदार्थ पांचतत्त्वकरिपूर्ण हैं और नाशरूपहैं. ऐसा रूप ज्ञानी जानके किसीकी इच्छा नहीं करता.हे मुनीश्वर ! यह जगत् सब नाशरूपहैं, देखते देखते नाशको पाताहै तिसमें मैं किसका आश्रय करके सुख पाऊँ.जब युगकी सहस्र चौकरी होती हैं, तब ब्रह्माका एक दिन होताहै, तिस दिनके क्षय हुएते सब जगत्का प्रलय होताहै; बहुरि ब्रह्माहू कालकर नाश होजाताहै; अरु ब्रह्माहू जितने होगयेहैं. तिनकी संख्या नहीं होती असंख्य ब्रह्मा नाश होगये हैं तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता करनी है ? हम किसी भोगकी बासना नहीं करते, क्योंकि सब चलरूप है, कछु स्थिर रहनेका नहीं. सब नाशरूप है इनकी आस्था मूर्ख करते हैं. तिसके साथ हमको कछु प्रयोजन नहीं जैसे मृग मरुस्थलको देख जल पान

करनेको दौडता है अरु शांतिको नहीं पाता, तैसे मूर्ख जीव जगत्के पदार्थनको सत्य मानकर तृष्णा करते हैं, परन्तु शांतिको नहीं पाते, काहेते कि, सब असाररूप हैं. अरु-जो स्त्री, पुत्र, कलत्र भासते हैं, सो जबलग शरीर नष्ट नहीं हुआ तबलग भासते हैं, जब शरीर नष्ट हो जायगा तब जानिबेमेंभी न आवेंगे कि, कहां गये अरु कहाँते आयेथे? जैसे तेल अरु बत्तीकर दीपक प्रकाशता है तब बडा प्रकाशवान् दृष्ट आता है, पाछे जब बुझजाता है, तब जाना नहीं जाता कि. कहाँ गया, तैसे बत्तीरूप बांधव हैं औरतिसविषे स्नेहरूपी तेलहै, तिसकर जो शरीर भासता है सो प्रकाश है जब शरीररूपी दीपकका प्रकाश बुझ जाता है तब जाना नहीं जाता कि. कहां गया. हे मुनीश्वर! यह बंधुका मिलाप है. सो जैसे तीर्थ यात्राका संग चलाजाता होवे. सो सब एक क्षणमें वृक्षकी छाया नीचे बैठते हैं. फिर न्यारे न्यारे होय जाते हैं, तैसा बांधवका मिलाप है. जैसे उस यात्रामें स्नेह करना मूर्खता है. तैसे इनमेंभी स्नेह करना मूर्खता है. हे मुनीश्वर! अहंममताकी जेवरीके साथ बांधे हुए घटीयंत्रकी नाईं सब भ्रमते फिरते हैं. तिनको शांति कदाचित् नहीं होती. यह देखने मात्रको चेतन दृष्ट आवता है; परंतु पशु अरु बंदर इनते श्रेष्ठ हैं. जिनकी संमति देह इंद्रियनके साथ बांधी हुई है. अरु आगमा पाई है. इसमें आस्था रखनी सो महामूर्खता है; उनको आत्मपदकी प्राप्ति होनी कठिन है. जैसे पवनकर वृक्षके पात टूटके उड जाते हैं, फिर उनको वृक्षके साथ लगना कठिन है, तैसे जो देहादिक साथ बांधे हुए हैं, तिसको आत्मपद पाना कठिन है. हे मुनीश्वर! जब आत्मपदते विमुख होता है तब जगत्के भ्रमको देखता है; अरु जब आत्मपदकी ओर आता है, तब संसार इसको बडा विरस लगता है और ऐसा पदार्थ जगत्में कोई नहीं जो, स्थिर रहैगा जो कछु पदार्थ हैं सो नाशको प्राप्त होते हैं, ताते मैं किसकी आस्था करों? और किसका आश्रय करों? सब नाशवंत भासते हैं, वह पदार्थ मुझको कहो, जिसका नाश न होवे. इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे सर्वपदार्थाभाव वर्णनं नाम द्वाविंशतितमः सर्गः ॥ २२ ॥ श्रीरामउवाच, हे मुनीश्वर! जेता कछु स्थावरजंगम जगत दीखता है, सो सब नाशरूप है, कछु भी

स्थिर रहनेका नहीं जो खाई थी सो जलकर पूर्ण होगई है, अरु जो बडे जलकर समुद्र पूर्ण दिखते थे, सो खाई रूप ह्वै गयें अरु जो सुंदर बडे बगीचे थे, सो आकाशकी नाईं शून्य होगये, अरु जो शून्य स्थान थे, सो सुंदर वृक्ष हुए बनकर दृष्ट आते हैं जहां बस्ती थी तहां उजार हो गई है, अरु उजारथी तहां बस्ती हो गई है, अरु जहां गढेले थे, तहां पर्वत हो गये हैं, अरु जहां बडे पर्वत थे, तहां समान पृथ्वी हो गई है. हे मुनीश्वर! इस प्रकार पदार्थ देखत विपर्यय हो जाते हैं स्थिर नहीं रहते, बहुरि मैं किसका आश्रय करों? अरु किसके पावनेका यत्न करों? यह पदार्थ तो सब नाशरूप हैं. अरु जो बडे बडे ऐश्वर्यकर संपन्न थे, अरु जो बडे कर्त्तव्य करते थे और बडे वीर्यवान, बडे तेजवान हुए थे, सो भी मरण मात्र हो गये हैं, तब हम सारिखेकी कहा वार्त्ता है! सब नाश होते हैं, तब हमको भी घडी पलमें चले जाना है, रहना किसीको नहीं. हे मुनीश्वर! यह पदार्थ चंचलरूप हैं, सो एकरस कदाचितहू नहीं रहते; एक क्षणमें कछु होजातेहैं; दूसरे क्षणमें कछु हो जाते हैं! एक क्षणमें दरिद्री हो जाते हैं, दूसरे क्षणमें संपदावान हो जाते हैं! एक क्षणमें जीवते दृष्ट आते हैं. दूसरे क्षणमें मरजाते हैं, एक क्षण में मुवे भी जी उठते हैं. इस संसारकी स्थिरता कबहूँ नहीं होती. ज्ञानवान् इसकी आस्थानहीं करते. एक क्षणमें समुद्रके प्रवाहके ठिकाने मरुस्थल होयजाते हैं, अरु मरुस्थलमें जलके प्रवाह होजाते हैं. हे मुनीश्वर! इस जगत्का आभास स्थिर नहीं रहता, जैसे बालकका चित्त स्थिर नहीं रहता, तैसे जगत्का पदार्थ एक भी स्थिर नहीं रहता जैसे नट स्वांगको धरता है; सो कबहू कैसा; कबहू कैसा सो एक स्वांगमें नहीं रहता, तैसे जगत्के पदार्थ अरु लक्ष्मी एकरस नहीं रहते; कबहूँ पुरुष स्त्री होजात है, कबहूँ स्त्रीपुरुष हो जाती है; अरु मनुष्य पशु हो जाताहै. पशु मनुष्य हो जाता है; और स्थावरका जंगम. अरु जंगमका स्थावर हो जाता है. मनुष्य देवता हो जाता है और देवता मनुष्य हो जाता है. इसप्रकार घटी यंत्रकी नाईं जगत्की लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती कबहूँ उर्ध्वको जाती है कबहू अधोको जातीहै, स्थिर कबहूँ नहीं रहती, सदा भटकत रहती है.

हे मुनीश्वर ! जेते कछु पदार्थ दृष्टिमें आते हैं, सो सब नष्ट हो जानेके हैं. कैसेहू स्थिर रहनेको नहीं ए सब नादियां हैं सो सब बडवाग्निमें लय होय जायँगी; तैसे जेते कछु पदार्थ हैं सो सब अभावरूप बडवाग्नि को प्राप्त होवेंगे. अरु बडे बलिष्ठहू मेरे देखते लीन होगये हैं; अरु जो बडे सुंदर स्थान सो शून्य हो गये हैं;अरु जो सुंदर ताल, अरु बगीचे मनुष्य करि पूर्ण ऐसे स्थान सो शून्य हो गये हैं; अरु जो मरुस्थलकी भूमिका सो सुंदरताको प्राप्त भई है. अरु घट पट हो गये हैं; बंरके सांप हो जाते हैं; सांपके बर हो जाते हैं. इस प्रकार, हे विप्र ! जो जगत् दृष्टिमें आता है,सो कबहूं सम्पदा,कबहूं आपदा दृष्टिमें आवतीहै;अरु महा चपल दृष्टि आवते हैं.हेमुनीश्वर!ऐसे सब अस्थिरूप पदार्थ हैं.तिसका विचार विना मैं कैसे आश्रय करों,अरु किसकी इच्छा करों?सब नाशरूपहैं और– जो यह सूर्य प्रकाशकर दृष्टिमें आताहै,सो भी अंधकाररूप होजायगा; अरु अमृतकर पूर्ण जो चंद्रमा दृष्टिमें आता है, सोभी शून्य हो जायगा; अरु सुमेरु आदिक जो पर्वत दृष्टि आते हैं, सो सब नाश होयँगे और सब लोक नाश होजांयगे; ताते हे मुनीश्वर ! और किसीकी क्या कहनी है ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जो जगत्के ईश्वर हैं, सो भी शून्य होजाँयगे, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता कहनी है; जेता कछु जगत् दृष्टि आता है, सो स्त्री, पुत्र, बांधव, ऐश्वर्य, वीर्यतेज,करिकै नाना प्रकारके जीव जो भासते हैं, सो सब नाशरूप हैं; बहुरि मैं किस पदार्थका आश्रयकरों, और किसकी इच्छा करों. हे मुनीश्वर ! जो पुरुष दीर्घदर्शी हैं तिनको तो सब पदार्थ विरस होगयेहैं; किसी पदार्थकी इच्छा नहीं करते, काहेते कि, सब पदार्थ नाशरूप भासते हैं और अपनी आयुष्यको बिजुरीके चमत्कारवत् देखते हैं; जैसे बिजुरीका चमत्कार होता है, तैसी शरीरकी आयुष्यहै. जिसको अपनी आयुष्यकी अप्रतीति होतीहै सो किसीकी इच्छा करते नहीं जैसे किसीको बलिदान अर्थ पालते हैं. तब वह खाने, पीने, भुगतनेकी इच्छा नहीं करता; तैसे जिसको अपना मरना सन्मुख भासताहै,तिसको भीकिसी पदार्थकी इच्छा नहीं रहती;यह सब पदार्थ आपही नाशरूपहैं;तो हम किसका आश्रयकर सुखी होवें ? जैसे कोऊ [illegible] समुद्रमें मच्छके आश्रय करके कहे कि, मैं इसपर बैठके समुद्रके पार जाऊंगा, अरु सुखी होऊंगा, सो

मूर्खता कारके डूबहा मरेगा; तैसे जिस पुरुषने इस पदार्थका आश्रय लिया है; अरु अपने सुखके निमित्त जानता है सो नाशको प्राप्त होवेगा. हे मुनीश्वर ! जो पुरुष जगत्को विचारता रहताहै तिसको यह जगत रमणीय भासताहै, अरु रमणीय जानके नाना प्रकारके कर्म करताहै अरु जो नानाप्रकारके संकल्प करके जगत्में भटकते हैं; कवहूं ऊपर, कवहूं नीचे आते हैं, अरु स्थिर नहीं रहते; तैसे यह जीव भटकते फिरते हैं, स्थिर कवहूं नहीं रहते; अरु जिस पदार्थकी इच्छा करते हैं, सो सव कालका ग्रास रूप होगये हैं; जैसे वनमें अग्नि लगती है तव सव इंधनादिकको जारतीहै,तैसे जेते कछु पदार्थ हैं, सो सव इंधन रूपी जगत् वनहै; तिसको काल रूपी अग्नि लगीहै, तिसने सवको ग्रास लिया है; वहुरि जो इस पदार्थकी इच्छा करतेहैं सो महामूर्ख हैं;अरु–जिनको आत्मविचारकी प्राप्तिहै; तिनको यह जगत् भ्रम रूप भासता है; अरु जिनको आत्मविचारकी प्राप्ति नहींहै, तिनको यह जगत् रमणीय भासताहै;अरु जगत्को देखते नाश होजातेहैं स्वप्न पुरीकी नाईं संसारकी मैं कैसे इच्छा करों ! यह तो दुःखके निमित्त है. जैसे मिठाईमें विष मिलायाहै, तिसके भोजन करने वाले मृत्युको प्राप्त होते हैं तैसे विषय भुगतनेवाले नाशको प्राप्त होते हैं. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे जगद्विपर्यय वर्णनं नाम त्रयोविंशतितमः सर्गः ॥ २३ ॥ रामउवाच, हेमुनीश्वर ! इस संसारमें भोगरूपी अग्निलगीहै तिसकर सव जलतेहैं। जैसे तालमें हाथीके पाँवसों कचर कमलका चूर्ण होजाता है.तैसे भोगसों मनुष्य दीन हो जाते हैं. तैसे काम क्रोध दुराचारसों शुभ गुण नष्ट हो जाते हैं जैसे कंटारीके पत्तेमें अरु फलमें कांटे होजाते हैं, तैसे विषयकी वासनारूपी कंटक आय लगते हैं. हे मुनीश्वर ! यह जगत् सव नाशरूप है, किसी पदार्थका स्थिर रहना नहीं है. वासनारूपी जाल,अरु इंद्रियांरूपी गांठी है,तिसमें पुरुष कालसों आय फँसा है सो वड़े दुःखको प्राप्त होवेगा हे मुनीश्वर ! वासनारूपी सूतमें जीवरूपी मोती परोये हुए हैं, अरु मनरूपी नट आय परोयकर चैतन्यरूपी आत्माके गरेमें डारता है जव वासनारूपी तागा टूट परा तव यह भ्रम भी निवृत्त होगया.हे मुनीश्वर ! इसको भोगकी इच्छा है सो वंधनका कारण है भोगकी इच्छा कर भटकता है,शांतिको प्राप्त नहीं होता है,ताते मुझको किसी भोगकी

इच्छा नहीं न राज्य की इच्छा है. न घरकी न वनकी इच्छा है, न मरनेका दुःख मानता हों, न जीनेकर सुख मानता हों. किसी पदार्थका सुख नहीं, सुख जो होना सो आत्मज्ञानकर होना है अन्यथा किसी पदार्थकर होता नहीं. जैसे सूर्यके उदय हुए विना अंधकारका नाश नहीं होता, तैसे आत्मज्ञान विना संसारके दुःखका नाश नहीं होता; ताते सोई उपाय मुझको कहो, जिसकर मोहका नाश होवे और मैं सुखी होऊं. हे मुनीश्वर! भोगको भुगतनहारा जो अहंकार है, सो मैंने त्याग दिया है; फिर भोगकी इच्छा कैसी होवे. हे मुनीश्वर! इस विषयरूप सर्पने जिसका स्पर्श किया है, तिसका नाश होजाता है. अरु सर्प जिसको काटता है. सो एकवेर इसको मार डारता है; अरु विषयरूपी सर्प जिनको काटते हैं, सो अनेक जन्म पर्यंत मारतेई चले जाते हैं, ताते परम दुःखका कारण विषय भोग है; याते विषयरूपी परमविष है. अरु वज्र करके शरीरका चूर्ण होना सो भी मैंसहूँगा परन्तु विषयका भुगतना मेरेसों कैसेहू सहा नहीं जाता. यह मुझको दुःखदायक दृष्टिमें आता है, ताते सोई उपाय मुझको कहो, जिसकर मेरे हृदयते अज्ञानरूपी अंधकारका नाश होवे, अरु जो न कहोगे तो मैं अपनी छातीपर धीरजरूपी शिला धरके बैठा रहोंगा, परन्तु भोगकी इच्छा न करोंगा. हे मुनीश्वर! जेते कछु पदार्थ हैं, सो सब नाशरूप हैं; जैसे बिजुरीका चमत्कार होय छिप जाता है, अरु अंजलीमें जल नहीं ठहरता, तैसे विषय भोग अरु आयुष्य नाश हो जाते हैं, ठहरते नहीं. जैसे कंढीकर मच्छी दुःख पावती है, तैसे भोगकी तृष्णा कर जीव दुःख पावते हैं, ताते मुझको किसी पदार्थकी इच्छा नहीं जैसे किसीने मरीचिकाके जलको सत्य जान जलपानकी इच्छा करी और दौऱ्या सो जल पावत नहीं. ताते मैं किसी पदार्थकी इच्छा नहीं करता. ॥ इति श्री योगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे सर्वांतप्रतिपादनं नाम चतुर्विंशतितमः सर्गः ॥ २४ ॥ श्रीरामउवाच, हे मुनीश्वर! संसाररूपी गढेलेमें अरु मोहरूपी कीचमें मूर्खका मन गिर जाता है, तिसकर परा दुःख पाता है, शांतवान कबहूं नहीं होता जब जरा अवस्था आती है, तब सर्व शरीर जर्जरीभूत होकर कांपने लगते हैं; जैसे पुरातन वृक्षके पत्र पवनकर हिलते हैं, तैसे जरा अवस्था कर अंग हिलते हैं, अरु तृष्णाकी वृद्धि हो जातीहै; जैसे नीमका वृक्ष ज्यों २

वृद्ध होता है त्यों त्यों कटुता बढती है, तैसे तृष्णा बढती है. हे मुनीश्वर ! जिस पुरुषने देह, इंद्रियादिकनका आश्रय अपने सुख निमित्त लिया है, सो मूर्ख संसार रूपी अंधकूपमें गिरता है,निकस नहीं सकता; अरु अज्ञानीका चित्त भोगका त्याग कदाचित् नहीं करता है.हे मुनीश्वर ! जगतके पदार्थमें मेरी बुद्धि मलीन होगईहै. जैसे वर्षाकालमें नदी मलीन होती है अथवा जैसे मार्गशीर्ष मासमें मंजरी सूखि जाती हैं, तैसे जगत् की शोभा देखत देखत विरस होजाती है जैसे जगतका पदार्थ मूर्खको रमणीय भासता है; जैसे पानीका गढेला तृणकरि आच्छादित होता है, अरु मृगके बालक तिस तृणको रमणीय जानकर खाने जाते हैं, फिर गिर जाते हैं; तैसे यह मूर्ख भोगको रमणीय जानि भुगतके गिर परे हैं फिर महादुःख पाते हैं.जैसे मृग मृगतृष्णाकर उडता है,सो सुखी नहीं होता, तैसे यह मृगतृष्णारूप संसारके पदार्थनके ऊपर मनरूपी मृग उडनहारा कैसे सुखी होवे.हे मुनीश्वर ! जगतके पदार्थनसों मेरी बुद्धि चंचल हो गई है; ताते सोई उपाय कहो, जिसकर पर्वतकी नाईं मेरी बुद्धि निश्चल होवे. सो पद कैसा है ? कि, परमानंदके यत्नमें रहते हैं, अरु निर्भय, निराकार पद जिसके पायेते संसार कछु भी नहीं रहता है,बहुरि पावना कछु नहीं रहता है;तैसे संपूर्ण जगतकी नानाप्रकारकी रचना सब दब जाती हैं; तिस पद पानेका उपाय मुझको कहो.हे मुनीश्वर ! ऐसे पदते मेरी बुद्धि शून्य है, ताते मैं शांतिमान नहीं होता. यह संसार अरु संसारके कर्म मोहरूप हैं;इसमें पडे हुए शांतिको प्राप्त नहीं होते. अरु जनकादिक संसारमें रहे हुए कमलकी नाईं निर्लेप रहते हैं,तैसे शांति मान संसारमें निर्लेप रहतेहैं.सो जैसे कोऊ कीचसों पूर्ण होय,अरु कहै कि,मुझको कीचका परश नहीं हुआ, तैसे राजाके विक्षेपरूपी कीचमें परे हुए शांतिमान कैसे निर्लेप रहे हैं, तिसकी समुझ कहा है, सो कृपा कर कहो.अरु तुम जैसे जो संतजन हैं सो विषयको भुगतते दृष्टि आवते हैं अरु जगत्की चेष्टा सब करते हैं; सो निर्लेप कैसे रहते हैं, सो युक्ति कहो जैसे तुम जल कमलवत् रहते हो सो कहो.यह बुद्धि तो मोह करि मोही जाती है. जैसे तालमें हस्ती प्रवेश करता है और पानी मलीन हो जाता है, तैसे मोह करि बुद्धि मलिन होय जाती है, ताते सोई उपाय कहो, जिसकर बुद्धि निर्मल होवे. यह संतोषमें बुद्धि स्थिर

कबहूँ नहीं रहती. जैसे मूलसों कुहारे कर काटा वृक्ष स्थिर नहीं होता, तैसे वासनासों कटी बुद्धि स्थिर नहीं रहती. हे मुनीश्वर ! संसाररूपी विषूचिका मुझको लगी है, ताते सोई उपाय कहो, जिसकर दृश्यका नाश होवे, इसने मुझको वडा दुःख दिया है. अरु आत्मज्ञान कब प्रकाश होय, जिसके उदय हुए मोहरूपी अंधकारका नाश होवे. हे मुनीश्वर ! जैसे बादरसों चंद्रमा आच्छादित होय जाता है, तैसे बुद्धिकी मलीनता कर मैं आच्छादित हुआ हूँ, ताते सोई उपाय कहो जिसकर आवरण दूर होवे. अरु, जो आत्मानंद सो नित्य है, जिसके पायेते वहुरि पावना कछु नहीं रहता, इसते संपूर्ण दुःख नष्ट हो जाते हैं. अरु अंतर शीतल हो जाताहै, ऐसा जो पदहै, तिसकी प्रातिका उपाय मुझसे कहो. हे मुनीश्वर ! आत्मज्ञानरूपी चंद्रमाकी मुझको इच्छा है, जिसके प्रकाशकर बुद्धिरूपी कमलनी खिल आती है, अरु जिसकी अमृतरूपी किरनकर तृप्त वृत्ति होती है सो कहो. हे मुनीश्वर ! अब मुझको गृहमें रहनेकी इच्छा नहीं, अरु वन विषे जानेकी भी इच्छा नहीं, मुझको तो इसी पदकी इच्छा है, जिसके पाये ते भीतर शांति हो जाय. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे वैराग्यप्रयोजनवर्णनं नाम पंचविंशतितमः सर्गः ॥२५॥ श्रीरामउवाच, हे. मुनीश्वर ! जो जीवनेकी आस्था करते हैं, सो मूर्ख हैं; जैसे पत्रपर जलकी बूंद ठहरती नहीं तैसे आयुष्यहू क्षणभंगुर है. जैसे वर्षाकालमें दर्दुर बोलते हैं तब उनका कंठ चंचल सदा फरकता रहता है, तैसे आयुर्दा छिन छिनमें चंचल हो जाती है जैसे शिवजीके कपालमें चंद्रमाकी रेखा कछुसी है, तैसा यह शरीर है. हे मुनीश्वर ! जिसको इसमें आस्था है, सो महामूर्ख है; यह तो कालका ग्रास है. जैसे विल्ली चूहे को पकर लेती है, तैसे सबको काल पकर लेता है. जैसे विल्ली चूहेको संभाल करने नहीं देती, तैसे सबको काल अचानक ग्रहण कर लेता है, अरु किसीको भासता नहीं. हे मुनीश्वर ! जब अज्ञानरूपी मेघ आय गर्जता है, तब लोभरूपी मोर प्रसन्न होयके नृत्य करता है. जब अज्ञानरूपी मेघ वर्षा करता है, तब दुःखरूपी मंजरी बढ़ने लगती है; अरु लोभरूपी बिजुरी छिनछिनमें होय होय नष्ट हो जाती है, अरु तृष्णारूपी जालमें फँसे हुए जीवरूपी पक्षी परे दुःख पातेहैं; शांतिकी प्राप्ति नहीं होती. हे मुनीश्वर ! यह जगतरूपी बडा रोग

[illegible] कौनसा पदार्थहै, जो [illegible] जिसकर भ्रमरूपी [illegible] निवृत्त होवे सोई उपाय कहो. यह जगत मूर्खको रमणीय दीखताहै, ऐसे पदार्थ पृथ्वीपर अरु आकाशमें, अरु देवलोकमें, अरु पातालमें कोऊ नहीं जो ज्ञानवान्को रमणीय दीखें. ज्ञानवान्को सब भ्रमरूप भासते हैं; अरु अज्ञानी जगत्में आस्था करता है. हे मुनीश्वर ! चन्द्रमामें जो कलंक है, तिसकर शोभा सुंदर नहीं लगती, जब कलंक दूर होय जाय, तब सुंदर लगे; तैसे मेरे चित्तरूपी चंद्रमामें कामरूपी कलंक लगा है,तिसकर उज्ज्वल नहीं भासता ताते सोई उपाय कहौ; जिसकर कलंक दूर होजाय-हे मुनीश्वर ! यह चित्त बहुत चंचलहै; स्थिर कदाचित् नहीं होता. जैसे अग्निमें डारदियापारा उडजाता है तैसे चित्तभी स्थिर नहीं होता; विषयकी तरफ सदा धावता है, ताते सोई उपाय कहो, जिसकर चित्त, स्थिर होवे. और संसाररूपी वनमें भोगरूपी सर्प रहतेहैं, सो जीवका दंश करतेहैं,तिनसों बचनेका उपाय कहो; अरु जेती कछु क्रियाहै, सो राग द्वेषके साथ मिली हुई है, ताते सोई उपाय कहो जिसकर राग द्वेषका प्रवेश न होय,तैसे यह संसारमें परेहैं तिसको तृष्णारूपी जलका परश न होय, ऐसा उपाय कहौ;जिसकर इसको राग द्वेषका स्पर्श न होय; अरु मनमें जो मनन रूपी सत्ताहै,सो युक्तिसों दूर होतीहै अन्यथा दूर नहीं होती.सो निवृत्तिके अर्थ आप मेरेको युक्ति कहो;और आगे जिसको जिस प्रकार निवृत्ति हुई है,सो कहो अरु जिसप्रकार तुम्हारे अंतरमें शीतलता हुई है,सो कहो.हे मुनीश्वर ! जैसे तुम जानते हो सो कहो अरु जो तुम्हारे विद्यमान वह युक्ति नहीं पाई, तब मैं तो कछु नहीं जानता.तो मैं सब त्यागकर निर अहंकार होय रहोंगा जबलग वह युक्ति मुझको न प्राप्त होवेगी तबलग मैं भोजन नहीं करूँगा,अरु जलपानभी नहीं करूँगा.अरु स्नानादिक क्रियाभी नहीं करूँगा.संपदाका कार्य भी नहीं करूँगा, और आपदाका कार्यभी नहीं करूँगा निरअहंकार होऊँगा.और ये न मेरी देहहै, और न मैं देहही सब त्याग करके बैठि रहोंगा.जैसे कागजके ऊपर मूर्ति चित्रित होतीहै, तैसे होय रहोंगा.श्वास आते जाते आपही क्षीण होय जायँगे जैसे तेल विना दीपक बुझता है,तैसे अर्थ विन देह होय जायगा तब महाशांतिको प्राप्त होऊँगा. वाल्मीकि उवाच,हे भारद्वाज ! ऐसे कहि करि रामजी चुप होय रहे.

जैसे बडे मेघको देखके मोर शब्द करके चुप होजाता है. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे अनन्य त्याग दर्शनं नाम षड्विंशतितमः सर्गः ॥ २६ ॥ वाल्मीकि उवाच, हे पुत्र ! जब इसप्रकार रघुवंशरूपी आकाशके रामचंद्ररूपी चन्द्रमा बोले, तब सबही मौन होगये, अरु सबके रोम खडे होआये, मानो रोमहू खडे होकर रामजीके वचन सुनतेहैं, अरु जेते कछु सभामें बैठेथे, सो सब निर्वासनारूपी अमृतके समुद्रमें मग्न होगये. वसिष्ठ, वामदेव, विश्वामित्र, आदि जो मुनीश्वरथे और जेते दृष्टि आदिक जो मंत्रीथे, और राजा दशरथ अरु जेते मंडलेश्वरथे, और जेते नौकर चाकर थे और माता कौशल्या आदिक सब मौन होगये. अर्थ यह तो अचल होगये अरु पिंजरेमें पक्षी जो थे सोभी मौनहोगये अरु वगीचेमें पशु आदिथे; सोभी मौन होगये अरु चारा तृण खात रहिगये अरु जो पक्षी आलयमें बैठे थे; सोभी सुनकर मौन होगये; अरु आकाशके पक्षी जो निकट थे; सोभी स्थिर होगये; अरु आकाशमें देव, सिद्ध, गंधर्व, विद्याधर, किन्नरथे; सोभी आय सुनने लगे; अरु फूलोंकी वर्षा करने लगे; सब धन्य धन्य शब्द करनेलगे. और फूलोंकी वर्षाभई सो मानोवर्फकी वर्षा होती है; अरु क्षीरसमुद्रके तरंग उछलते आवते होयँ. अरु मोतीकी मालाकी वृष्टि आवत होय; और जैसे माखनके पिंड उडते इसप्रकार आधी घडी पर्यंत फूलनकी वर्षा भई, अरु बडी सुगंध आय पसरी; अरु फूलोंपर भौंरे फिरनेलगे और बडा विलास तिस कालमें होरहा अरु नमोनमः शब्द करने लगे. देवउवाच; हे कमलनयन रघुवंशी आकाशमें चंद्रमारूप आप रामजी ! तुम धन्य हो ! तुमने बडे श्रेष्ठ स्थान देखे हैं; अरु बहुत प्रकारके वचन सुनेहैं; याते जैसे आप वचन कहे हैं ऐसे वचन कबहूं नहीं सुने; इस वचन सुनके हमारा जो देवताका अभिमान था सो सब निवृत्तिभया है. अमृतरूपी वचन सुनकर हमारी बुद्धि पूर्ण होगई है. हे रामजी ! जैसे वचन तुमने कहे हैं; ऐसे वचन बृहस्पतिहू कहनेको समर्थ नहीं, तुम्हारे वचन परमानंदके करनहारे हैं; ताते तुम धन्य हो. ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे देवसमाजवर्णनं नाम सप्तविंशतितमः सर्गः ॥ २७ ॥ वाल्मीकिउवाच, हे भारद्वाज ! ऐसे वचन देवता कहके विचार करत भये. रघुवंशका कुल पूजवे योग्य है; तिसमें रामजी बडे उदार वचन मुनीश्वरके विद्यमान कहे हैं; अब जो

सोभी श्रवण किया चाहिये. जैसे फूलके ऊपर भौंरा स्थिर होते हैं तैसे [illegible] व्यास, नारद, पुलह, पुलस्त्य, आदि सब साधुसभामें आय स्थित भये; तब वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि मुनीश्वर उठके खडे हुये, अ[illegible] तिनकी पूजा करने लगे. प्रथम पूजा राजा दशरथने करी, फिर नानाप्रकारसों सबने उनकी पूजा करी और यथायोग्य आसनके ऊपर बैठे, सो कैसेहैं ? जो नारद बहुतसुंदर मूर्त्ति वारे हाथमें वीणालेयके बैठें अरु श्याममूर्त्ति व्यास आय बैठे और नानाप्रकारके रंगसों रंजित वस्त्र पहिरे हुए, मानो तारामें महा श्याम घटा आई है. ऐसे अरु दुर्वासा, वामदेव, पुलह, पुलस्त्य, अरु बृहस्पतिके पिता अंगिरा, अरु भृगु और मैं भी तहां था; और ब्रह्मर्षि; राजर्षि, देवर्षि, देवता, मुनीश्वर सब आयके सभामें स्थित हुए. किसीके बडीजटा हैं; कोई मुकुट पहरे हैं; किसीने रुद्राक्षकी माला पहरी है, किसीने मोतीकी माला पहरी हैं; किसीके कंठमें रत्नकी माला हैं; और हाथमें कमंडलु, मृगछाला किसीके महा सुंदर वस्त्र; ऐसे बडे तपस्वी आयके बैठे. तामें कोई राजसी स्वभावके, कोई सात्विक स्वभावके; ऐसे बडे बडे आये; अरु सब विद्वत् वेद पढनहारे प्राप्त हुए. और किसीका सूर्यवत्, किसीका चंद्रवत्, किसीका तारावत्, ऐसे बडे प्रकाशवाले पुरुषार्थ पर यत्न करनेहारे, सो यथायोग्य आसन्पर स्थिर भये; और मोहनी मूर्त्ति रामजी अरु दीन स्वभाववारे हाथ जोरके सभामें बैठे, तिनकी सब पूजा करत भये. कहते हैं कि, हे रामजी ! तुम धन्य हो ! और नारद सबके विद्यमान कहत भये कि, हे रामजी! तुमने बडे विवेक अरु वैराग्यके वचन कहे, सो सबको प्यारे लगे; सबके कल्याण करने हारे हैं और परमबोधके कारण हैं. हे रामजी ! तुम बडे बुद्धिमान् उदारात्मा दृष्टि आवते हो; अरु महा वाक्यका अर्थ तुमते प्रगट होता है ऐसा उज्ज्वल पात्र साधुमें और अनन्त तपस्वियोंमें कोई एक होते हैं. अरु जेते कछु मनुष्य हैं सो सब पशु जैसे दृष्टिमें आवते हैं, क्योंकि, जिसको संसार समुद्रके पार होनेकी इच्छा है और जो पुरुषार्थपर यत्न करते हैं. सोई मनुष्य हैं. हे साधो! वृक्ष तो बहुत होतेहैं; परंतु चंदनका वृक्ष कोई होता है तैसे शरीरधारी बहुत हैं; परंतु ऐसा कोई होता है; और सब अस्थि मांसके पुतरे साथ मिले हुयेभटकते फिरते हैं; सो जैसी यंत्रीकी पुतरी होती है, तैसे अज्ञानी जीव हैं; और

हस्ती तो वहुत हैं; परंतु जिसके मस्तकमेंसे मोती निकसता है सो विरला है. तैसे मनुष्य तो वहुत हैं, परंतु पुरुषार्थपर यत्न करने हारे कोई होते हैं ऐसे पात्रको थोरा अर्थ कहा भी हो वहुत जाता है;जैसे तेलकी बूँद थोरी जलमें डारी विस्तारको पाती है; तैसे थोरे वचन सों आपके हियेमें वहुत होते हैं; आपकी बुद्धि वहुत विशेष है; अरु दीपक जैसी प्रकाशवारी है; अरु बोधका परमपात्र है; और कहने मात्रते आपको शीघ्र ज्ञान होवेगा, अरु हमारे विद्यमान आप को ज्ञान होवेगा. ऐसानिश्चय करि जानना ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणे मुनिसमाजवर्णनं नाम अष्टाविंशतितमः सर्गः ॥ २८॥

इति योगवासिष्ठे वैराग्यप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA
LIBRARY, SRINAGAR.
Accession No. 6th 1499.
Date 6th Oct. 1979.

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालयाध्यक्षः-मुंबई.